मिनखखोरी

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

अरुण प्रकाशन, नई दिल्ली-24

जैन समाज से सम्मानित
युवा कार्यकर्ता ललित नाहटा
को आशीर्वाद सहित भेंट

मैं इतना ही कहूंगा

यह संग्रह मेरे राजस्थानी कहानी संग्रह का अनुवाद है जो जमारो नाम से प्रकाशित है। इसे 'राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति' अकादमी ने पुरस्कृत किया और इसकी चंद कहानियां हिन्दी में अनुवादित होकर अत्यन्त ही लोकप्रिय हुईं। कई कहानियां तो अपने कथ्य व शिल्प के कारणआलोचकों ने सराही भी। अब आपके हाथ इसे सौंपकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। अपनी राय देंगे।

—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
आशालक्ष्मी, नया शहर
बीकानर-334001
(राज०)

क्रम

मिनखखोरी

गोमली

दोपहर। जलती धूप। स्तब्ध हवा। घुटन और उमस। शून्यता और उदासी।

ऐसे अप्रिय मौसम में गोमली कुएं की बायीं छतरी से निकली। उसके सिर पर लोहे की कढ़ाई थी। उसमें उपले भरे थे।

कुआं। बन्द और जर्जर। उसके दायें-बायें दो छतरियां। बनावट सामन्ती। *ऊपर के गुम्बद खण्डित। लगते थे—अब गिरे तब गिरे।*

सूनी पगडंडी भयानक गर्मी के कारण और सूनी हो गयी थी। कुएं के आस पास कोई बस्ती नहीं थी। थोड़ी दूर पर थी निम्न जातियों की बस्ती। माली, स्वामी, भाट और सुनार भी।

गोमली सुनारिन थी।

अपने मुहल्ले की सबसे बदनाम और चरित्रहीन युवती। उसने अपने पति के रहते हुए एक साईस से प्रेम कर लिया था। प्रेम ही क्या, उसने उसके संग नया घर बसा लिया था। चूंकि साईस गुण्डा था इसलिए मुहल्ले के शरीफ लोग मुंह पर ताले लगाये हुए थे। अगर वह कमजोर होता तो मुहल्ले वाले उनका इस तरह रहना दूभर कर देते। उन्हें इतना तंग करते कि मुहल्ला छोड़कर जाना ही पड़ता। गोमली का कुछ कहना तो दूर रहा, बल्कि मुहल्ले वालों के हृदय में यह आशंका थी कि कहीं गोमली को कुछ कह दिया तो साईस धाधू खून-खराबी पर उतर आयेगा। इसलिए वे सभी बेमन से गोमली की उतनी ही इज्जत करते थे, जितनी एक सच्चरित्रा की। वैसे गोमली मुहल्ले के दुःख दर्द में काम आती थी। हर एक के संकट में भागकर जाती थी।

धाधू विधुर था। उसकी बीवी जीवन-यात्रा की दो मंजिलें तय कर एकदम टूट गयी थी। विवाह के दो वर्ष बाद उसे हल्का सा बुखार आया। रात को धाधू ने उसे दूध पिलाकर सुलाया और सुबह उसकी नींद अमर नींद बन गयी। धाधू को उसके लिए पश्चात्ताप था, पर उसकी आखों में आसू नहीं आये थे क्योंकि उसे अपनी जोरू पसन्द नहीं थी। उसके मन-प्राण में गंगले सुनार की जवान बहू गोमली का रूप बस गया था। वह मुग्ध हुआ छत पर बैठा रहता था। उसे महसूस होता था कि गोमली छत पर अपने बाल सुखा रही है। उसके बाल इतने लम्बे हैं कि वे कमर के नीचे तक चले आये हैं। उसके बालों को देखकर उसे उन कहानियों पर विश्वास होने लगा कि एक राजकुमारी हर रात खिड़की से अपने बाल लटका देती थी और उसका प्रेमी उसके महल में केश पकड़कर चला जाता था। कभी कभी उसे भ्रम सा होता था कि हवा में उसके बालों के इत्र की खुशबू बसकर उसे मदहोश कर रही है और वह प्रतिमा सा निश्चल बैठा रहता था।

गंगला दुबला पतला और हरामखाऊ था। वह बिना मेहनत के जीवन गुजारना चाहता था। इतना ही नहीं बुरी संगत के कारण अफीम भी खाता था। अफीम की पिनक में वह निर्जीव-सा पड़ा रहता था और गोमली की सेज के फूल बिना छुए ही मुरझा जाते थे। वह गंगले को कुछ नहीं कहती थी। घूंघट में लिपटी वह कोल्हू के बैल की तरह काम करती रहती थी। सुबह वह उठकर कुए से पानी के मटके लाती थी। बाजार से सौदा लाती थी। चक्की पीसती थी। गोबर थापती थी और बाद में वह ऊन कातने चली जाती थी। घूंघट वह कभी नहीं उठाती थी। स्त्रियां उसे लजीली कहती थीं और ऊन के कारखाने का मालिक सेठ मनोहर सदा उस पर गिद्ध-दृष्टि लगाये बैठा रहता था। किन्तु गोमली ने उसे कभी भी अवसर नहीं दिया। गोमली अपने काम से काम रखती थी। उसे मजदूरी से वास्ता था। हां, वह धाधू से जरूर परेशान थी। धाधू उसे छत से इशारे करता था। रास्ते में घेरकर प्यार की प्रार्थना करता था। तब वह भयभीत हिरनी-सी खड़ी रहती थी। वह उसकी किसी बात का उत्तर नहीं देती थी। धाधू उसके मौन से परेशान हो जाता था।

अपनी पत्नी की मत्यु के दो माह बाद धाधू की दशा एक उन्मादग्रस्त प्राणी-सी हो गई। उसे लगने लगा कि वह पागल हो जायेगा। उसका सिर बिना गोमली के फट जायगा। उसे उठते-बैठते गामली का मुखडा लहरो के बीच झिलमिलात चाद की तरह लगा। आखिर एक दिन गोमली का हाथ पकड ही लिया।

एसी ही एक दोपहर थी। जलता आकाश और जलती पृथ्वी क कारण पशु पक्षी भी नही दिख रहे थे। उस समय गामली लाल ओढनी मे अपना सौदय छलकाती बाजार जा रही थी। धाधू न उसका पकड अपन घर म खीच लिया। वह कुछ बोल इसस पहल ही उसन उसक मुह पर हाथ रख दिया। वैसे गोमली उसकी गुण्डागर्दी स आतकित था ही।

गोमली ने पहली बार अपना मौन ताडा। वह आकुल सी एक कोने मे खडी हो गई। उसक गोर ललाट पर पसीन की बूदे चमक उठी। उसकी झील सी गहरी प्यारी आखो मे अपरिसीम दु ख झलक आया। वह कम्पित स्वर म बोली, "परायी स्त्री के साथ जबरजन्ना (बलात्कार) करना धम नही है।'

धाधू ने अपन हाथा को बुरी तरह झटकाकर कहा, "मैं तुम्हे चाहता हू, मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नही रह सकता। रात दिन तुम्हारा मुखडा गामली!" और वह आगे बढा। उसकी बाहो ने गोमली के रेशमी शरीर को लपेटना शुरू कर दिया। गामली न बडी दीनता मे कहा, 'भगवान ने तुम्ह ताकतवर इसलिए नही बनाया कि तुम दूसरो की इज्जत को धूल मे मिलाओ, भले आदमियो की पगडिया उछालो। यह अयाय है धाधू! दिल का प्यार मे जीता, तकरार से नही। अगर तुमने मर सग जबरजन्ना का ता म अपन शरीर को आग लगाकर मर मिट जाऊगी। गोमली की आखा मे आसू उभर आय। वह जोर से सिसक पडी। सिसककर उसन धाधू की ओर देखा। धाधू को लगा ससार की सारी व्यथा गोमली की आखो म है। धीरे धीर वह शिथिल होने लगा। उसकी आत्मा उसे धिक्कारने लगी। उसकी वासना की चिनगारिया बुझने लगी। वह हवा की तरह गोमली के सामन स हट गया।

गामली ने गगले से शिकायत की कि वह धाधू को डाटे कि वह उसकी

बीवी को आत-जात न छन वरे। गगला गया भी धाधू के पास। पर वावी की शिकायत न करके वह उससे दो रुपये उधार माग लाया। उन दोस्पयो की उसने खूब शराब पी। उस शराब के नशे म उसने धाधू की बडी प्रशसा की और बोला "वह एक शरीफ आदमी ह। आज उसने मुझे पिलाया। गगल के चेहरे पर निलज्जता नाच उठी।

गोमली का मन अपने पति क प्रति घणा से भर आया। उसे लगा कि यह कैसा मद है ? इसमे जरा भी गरत नही। कायर और पौरुषहीन।

धीरे धीरे गगल मे परिवतन आने लगा। आजकल उसके पास पर्याप्त पैसा दिखता था। जब कभी भी गोमली पूछती थी, वह कहता था, "आज कल मैं सेठ मनोहर के यहा काम करता हू।' गोमली ने मजदूरी पर जाना बन्द कर दिया। जब उसका पति कमाता है, तो वह औरो क यहा मजदूरी करने क्या जाय ?

इधर उसने धाधू क जीवन म बडा परिवतन देखा। आजकल वह बहुत सवेरे तागा लेकर मजदूरी करने चला जाता था। किसी से झगडा फसाद नही करता था। उसकी ओर देखता तक नही था। उस दिन की घटना क बाद गोमली के हृदय म एक कोमल भावना जन्म गइ था धाधू के सद्व्यवहार और उपेक्षा स वह और सजीव व मुखर हो गइ। कभी-कभी गोमली के मन म यह प्रश्न जाग जाता था 'आजकल धाधू छत पर क्यो नही आता उसकी ओर क्या नही देखता ?' वह तब घटो छत पर बैठी रहती थी किन्तु धाधू छत पर नही आता था। आता भी था तो उसकी ओर नहा देखता था। इसम गोमली के मन मे अपमानजनित पीडा की लहर उठ जाती थी। वह आवेश म उन्मत्त-सी हो जाती थी। उसकी इच्छा होती थी कि वह धाधू का हाथ पकडकर डाट कि वह उसकी ओर क्यो नही देखता ?

कल तो उसने हद कर दी। वह स्नान करके छत पर चढी। धाधू छत पर झाडू लगा रहा था। गोमली सदा की तरह नही लजायी। वह कुछ क्षण तक झाडू लगाने म तन्मय धाधू को देखती रही। देखते-देखते उसका मन करुणा से भर आया। वह भावनाभिभूत हो उठी। उसने जोर से खखारा। धाधू ने उसकी ओर एक उडती नजर फेंकी और वह अपने काम

मे तन्मय हो गया ।

गोमली जल गई । गुस्से मे भर उठी । साथ ही एक विचित्र कारुणिक भावना से उसका अन्तर भर आया । वह माडी सुखाकर नीचे आ गयी ।

दोपहर ।

आज धाधू जल्दी आ गया । वह तागा खोलकर घोडे की मालिश करने लगा ।

गली मे सन्नाटा था । शून्यता थी । वह मालिश करके घोडे को कुए के पास ले गया—पानी पिलाने । तभी उसने देखा—गोमली सिर पर मटका रखे आ रही है । उसने अपनी दृष्टि सूने आकाश की ओर की । गोमली आई । उसने हौज मे मटका भरा । धाधू के मन म अन्तद्वन्द्व मच गया । उसकी इच्छा हुई, वह अगस्त्य मुनि की तरह दृष्टि घूट म गोमली के सौंदय-सागर को पी ले, पर उसने अपने मन के तूफान को रोक लिया । वह सब कुछ हार हुए जुआरी की तरह चला ।

दो कदम भी नही गया था कि गोमली ने पुकारा, "मिजाज बहुत बढ गया है ? आख उठाकर देखते ही नही ।"

धाधू के पाव रुक गए ।

"मटकी तो ऊची करा दो ।"

धाधू उसके पास आया । मटकी को उठाया । क्षणभर मे उसकी दृष्टि उसके चाद-से मुख पर रुकी । गोमली के होठो पर शतानी भरी मुस्कान खिल उठी ।

"तुम मुझसे नाराज हो ।"

"नहीं ।"

"फिर आजकल इतने बदल क्यो गये हो ?"

"तुम्हें पाने के लिए ।" कहकर धाधू जल्दी से नीचे उतर गया ।

गोमली ठगी-सी खडी रही । फिर वह चली—बहुत धीरे, माना उसके मन ने धाधू के प्यार को स्वीकार कर लिया हो ।

अधेरा अजगर की तरह कच्चे छोट मकानो को अपने म लील गया था । धाधू बारह बज वाला सिनमा खत्म कराव आया था । वह घोडे के शरीर पर हाथ फेर रहा था । हाथ फेरकर घर के भीतर गया । ढिबरी

जलायी।

तभी उसे कदमो की आहट सुनाई पडी।

"कौन ? '

"मैं।"

"गोमली !'

"हा।'

' इतनी रात गये ?"

"मन नही माना। धाधू, तुमने मुझे प्रेम से जीत लिया। मैं हार गयी। मैं हार गयी। ' वह रुआमी होकर उसके चरणा म बठ गयी। उसके चेहरे की वासना-जनित उत्तेजना और उद्विग्नता ढिबरी के हलके प्रकाश मे स्पष्ट लक्षित हो रही थी।

गोमली ! तुम शादीशुदा हो। '

"प्यार के बीच शादी दीवार नही बन सकती।"

"तुम मुझे बहुत चाहती हो ? '

"न चाहती तो इस तरह तुम्हारे पाव पडती ?"

"किन्तु !"

"मुझे अधिक मत सताओ। मैं सचमुच हार गई।"

"फिर तुम मेरे पास सदा के लिए चली आओ। छोड दो अपने पति को।' धाधू ने दीवार की ओर मुह करके कहा।

गामली की वासना एकदम गायब हो गई। वह झट से खडी होकर बाली, "क्या ?

"मैं चाहता हू, तुम सदा मेरे साथ रहो।'

' नही-नही-नही।' वह एकदम चीख-सी पडी।

"पडासी भी रहते हैं। उसने गोमली का सावधान किया।

' ओह ! तुम गुण्डे के गुण्डे ही हो। तुम्हारा दिल पत्थर का टुकडा है। और गामली चली आई।

धाधू की वही गति थी। वही मौन और वही अन्तमुखता। अपने काम से काम। पर गोमली ने अपने हृदय की आवाज के विरुद्ध बगावत कर दी। उसने भी वही रवया अख्तियार कर लिया। वह भी धाधू से नही बोलेगा।

वह गुण्डा है। उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं आया। वह उसे भरे बाजार मे बदनाम करना चाहता है। नही, वह एसा नही करेगी।

किन्तु एक घटना और घटी।

धाधू किसी बारात मे बाहर चला गया था। गगला उस रात अफीम की पिनक म होन हुए भी जाग रहा था। लगभग बारह बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया। गगला उठा। उसन किवाड खोल।

"आ गय मनोहर बाबू ?

हा।'

"मैं लोटा लेकर जगल जाने का बहाना बना रहा हू। आप "

"कही '

'आप चिन्ता न कर, वह कुछ भी नही कहगी। मैंने सारी बात कर रखी है।'

"मैं तुम्हारा सारा कज माफ कर दूगा।"

"और पचास रुपय की बात ?"

"वह भी दूगा।"

गगला चला गया।

चादनी के धुधले प्रकाश म सोयी हुई गोमली का चेहरा साफ दिख रहा था। मनोहर उसके पास बैठ गया। गोमली न आखें खोल दी। देखा तो झटके के साथ खडी हो गयी।

"तुम कौन हो ? '

"अरे मुझे नही पहचाना ? क्या तुम्ह गगने न नही बताया कि आज मैं यहा आने वाला हू ?'

वह गगन की ओर झपटी।

वह बाहर चला गया है।" सेठ मनोहर ने हसकर कहा "कल म मैं तुम्हें शहर के बाहर वाली कोठी म रखूगा। यहा मुझे धाधू का बडा डर लगता है।' कहकर उसने गोमली का हाथ पकड लिया।

गोमली क तन-बदन म आग लग गयी। उसने कडककर कहा, "भला चाहते हैं तो इसी समय वापस चले जाइय।

और मरे रुपय ?'

"मैं कहती हू, चले जाइये। वर्ना मैं शोर कर दूगी। आदमियो को इकट्ठा करके आपको जलील करा दूगी।

'खूब ! खसम बुलाता है और बीवी धमकी देती है। गोमली, मैं सेठ हू। धाधू के साथ रहने मे तुम दु खो के सिवाय कुछ नही पाओगी। मेरे सग चलो, आनन्द ही-आनन्द मिलेगा और तुम्हारा पति भी यही चाहता है।'

'आप चले जाइये।" उसन भडककर कहा।

सेठ बदनामी व भय से चला गया। उसके जात ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। गगला आकर चुपचाप सो गया। उस रात गोमली को नीद नही आयी। रात-रोत उसकी आखें सूज गयी। सुबह गगले ने बेहयायी से कहा, "चाय ?"

गोमली ने उसकी ओर जलती दृष्टि से देखा और चाय बनाने लगी।

धाधू लौट आया। उसन कई बार गोमली से मिलने की चेष्टा की पर वह नही मिल सका। आखिर बात क्या है ? उसका हृदय धडकने लगा। वह गोमली को चादी की तश्तरी देना चाहता था जो उसे बारात मे मिली थी। वह तश्तरी बहुत सुन्दर थी।

रात हो गयी। रात ढल गयी। दूसरी सुबह आयी। वह अपने मन को नही रोक सका। जसे ही गगला जगल गया, वसे ही वह गोमली के पास जा पहुचा। वह 'गगला गगला' पुकारता हुआ घर मे घुस आया। सामने ही गोमली बैठी थी—मुरझाय फूल-सी। वह उसे देखकर हतप्रभ हो गया।

'क्या तुम बीमार हो ?' उसन अथभरी दृष्टि से पूछा।

वह चुप रही। उसन अपनी दृष्टि दीवार पर जमा दी और पाव के अगूठे स जमीन कुरेदने लगी।

'चुप क्या हो ? बोलो न, तुम्हे मेरी कसम।

गोमली फूट-फूटकर रो पडी। उसकी सिसकिया हृदयविदारक थी। धाधू ने उसे अपने सीने से लगाकर दुलारा।

'क्या बात है गोमली ?'

गोमली ने रात रोत सारी बातें सुनायी। धाधू का मन क्रोध स भर गया। तश्तरी को जमीन पर फेंकता हुआ वह बोला, "मैं उसकी जान

निकाल दूगा। उसके टुकडे-टुकडे कर दूगा।"

गोमली काप उठी।

"मैं उसकी आखे निकाल दूगा। तू चिंता न कर, मैं तेरा बदला लूगा।" कहकर धाधू बाहर चला गया।

गोमली विमूढ-सी खडी रही दो पल। जब धाधू उसकी आखो से ओझल हो गया तब उसे होश आया। वह बाहर की ओर भागी किंतु धाधू चला गया था। वह क्या करे? वह किस तरह धाधू को रोके? वह भवर म पडी नाव की तरह झूलती रही। फिर वह सेठ के ऊन के कारखाने की ओर भागी।

वह जस ही वहा पहुची, उसने देखा—वहा भीड जमा थी। धाधू को कई आदमी पकडे हुए थे। सेठ के सिर से खून बह रहा था। धाधू के कान के पास भी खून की धारा बह रही थी और धाधू कह रहा था, "आग से उस रास्ते से गुजरा सेठ, तो जिन्दा नही छोडूगा। भीम की तरह तेरा खून पी जाऊगा। गोमली को बेसहारा मत समझना।" और वह शेर की तरह दहाडता हुआ लौट आया। गोमली भी वहा से तुरन्त अदृश्य हो गयी।

जब उसने घर म कदम रखा तब गोमली को अपने यहा बैठे पाया। वह उसे प्यार भरी नजर से देखता रहा, देखता रहा। खून की बद अब भी चू चूकर उसकी बनियान पर पड रही थी। गोमली का हृदय प्यार से भर आया। आखें आसुओ से भर आयी। वह धाधू से लिपटकर बोली, "मैं सदा के लिए तुम्हार पास आ गयी हू, मैंने पिछले सारे नाते रिश्ते तोड दिये हैं। अब मैं तुम्हारी हू, केवल तुम्हारी। मैं तुम्हारी ही पत्नी बनने के काबिल हू। इस रूप की रक्षा तुम्ही कर सकते हो।'

और वे उस दिन से एक हो गये। गगला दूसरे मुहल्ले म चला गया। कुआ बन्द हो गया।

('गोमली' का अनुवाद)

सतलडा हार

ठाकुर भुर्जसिंह पीठ तकिये के सहारे एकदम ढीले होकर पसर हुए थ। पखा हाफ हाफकर चल रहा था। ऐसे तीन पखे ब्रिटिश काल म उन्ह तत्कालीन जिलाधीश रेनाल्ड साहब न भेंट किये थे। भेंट करत समय अत्यन्त प्रसन्न होकर व बोले थ, "वल भुर्जसिंह, तुम सचमुच अच्छे आदमी हो। तुम्हारा हृदय विशाल है। हमन जो चीज मागी, वह तुमन तुरन्त दे दी। मैं तुम्हारी 'सरबतडी को अपन साथ विलायत ले जाऊगा। वह एक कम्पलीट वूमन है।

सरबतडी ठाकुर की दरोगिन की जवान बेटी थी। बस वह ठाकुर की ही बेटी थी पर दरोगिन के पट से जन्म लेने के कारण उस ठाकुर की सगी बेटी का मान नही मिला था।

सरबतडी अपूर्व सुन्दरी थी। साहब की नजर चढ गइ। बस माग ली। ठाकुर ने सरबतडी के बदले विलायती तीन पखे माग लिय। साहब ने तुरन्त दे दिय।

पर बडी ठकुरानी के सामन सरबतडी दहाड मारकर रोयी तो वह ठाकुर के पास आकर बोली थी "आपन यह पाप क्या किया ? आपन सरबतडी ।

उसके वाक्य का तीव्रता स काटते हुए ठाकुर न दात पीसकर कहा, 'चुप रहो। मुझे सलाह दने की कोई जरूरत नही। तुम्ह क्या पता मैंने कितनी सरबतडिया पदा कर दी ह। देख कितने शानदार पखे हैं विलायत क बने हैं कलक्टर साहब ने भेंट दिये है। जात बिरादरी मे मान बढ़ेगा।

ठाकुर हर आगन्तुक के सामने इन पखो का साला ज़िक्र करते रह।

इस बात को पच्चीस साल हो गय थे। अग्रेज चले गये पर ठाकुरा की ठकुराई और मनोवत्ति म कोई विशेष परिवतन नहीं आया। बाहरी बदलाव से अबूझ कई लोग अपन ही सामन्ती परिवेश मे जीत थे और अपने मुर्दे मूल्यो की रक्षा कर रह थे।

एक दिन उनके गाव का जौहरी मोतीचद उनक पास आया।

मोतीचद का कलकत्ता म हीरे-मोतिया का व्यापार था। समय-समय पर गाव आता-जाता था। ठाकुर से भी मिलता था।

पिछली बार ठाकुर क पास आया था तब उसकी दृष्टि ठाकुर की सातवी पत्नी केसरदे पर पडी।

केसरदे अनुपम सुदरी थी। देखते ही युवा सेठ के मन म वासनाजनित लगावा का झझा उठ गया।

इस बार उसकी केसरदे स अप्रत्याशित भेंट हो गयी और निगाहें टकरा गयी। दोनों के होठा पर एक अनचाही मुसकान नाच गयी।

सठ सोचने लगा कि यह यहा सड रही होगी। तिल तिल पिंजर हो रही होगी। मैं इसे प्राप्त कर लू तो ? उसकी मनोवत्ति उजागर हुई कि रूपली पल्ले तो रोई म भी।

ठाकुर ने सेठ की आवभगती की। आदर स कहा, पधारो सठ जी पधारो। अर सेठ जी, कभी-कभी हमे भी कोई खास चीज दिखाया कीजिए। दिखाने के पसे ता आप नही लेंगे ?'

सेठ हस पडा। बाला, "सचमुच दिखाने के पैस तो नही लेंगे ?"

और उसने हीरे मातिया की कइ चीजें दिखलायी। उनमे एक सतलडा हार था। सात लडिया का हार अद्भुत था। उस देखत ही ठाकुर की आखें चमक उठी। लालच की स्फुलिंगे आखो म दहन उठी। अपने भद्दे होठा पर जाभ फिराकर वह बोला "यह हार कितन का है ?"

'पैसा की बात छोडिए, पहले हार का देखिए। पसद आय ता ले लीजिए बहुत महगा नही है।'

ठाकुर मन-ही-मन बोला, 'समय की बात है वर्ना लठत भेजकर हार मगवा लेता पर अब आह ! हार वास्तव म अद्भुत है। यदि मिल जाये

तो दूसर ठाकुरो मे मान वढेगा । यह भेंट दे द तो ?'

फिर घर-बाहर की बातें होने लगी । सेठ ने बातचीत के मध्य बिना प्रसग केसरदे का कई बार नाम लिया । उसके अप्रतिम सौदय की प्रशसा की । जाने के पूव उसने फिर केसरदे के रग रूप की प्रशसा की ।

ठाकुर उस हार को मुफ्त म लेना चाहता था । उसके दिलोदिमाग म वह हार कोहरे की तरह छा गया था । तन-सोवणिया और मन मोवणिया हार था वह । उसन हार को लेकर उसकी प्रशसा मे फिर कई वाक्य साच डाले ।

यादो के सिलसिले म अचानक उसे रेनाल्ड साहब की याद हो आयी । उसन तुरत सोचा कि यदि यह सेठ रेनाल्ड बन जाए तो ? सेठ न भी बार-बार केसरदे का नाम लिया है ।

ठाकुर के अन्तस मे रग बिरगे ववण्डर उठन लगे । अधिक उत्तेजना व तनाव क कारण वह सुस्त हो गया । उसकी झुरिया से भरी आकृति बीमार सी लगन लगी ।

ठाकुर जैसे स्वप्न से जगा हो, इस तरह चौंककर बोला, 'सतलडा हार लाये हैं ?"

हा ।'

'मैं उसे लूगा जरूर लूगा ।' फिर उसने अपनी दासी को पुकार कर कहा, 'सुग्गा ! तरी सबसे छोटी ठकुरानी को जाकर कह कि वह खुद शबत लेकर आये ।"

उसके जाने के बाद ठाकुर फिर उस हार को लेकर सोचने लगा 'कितना मोहक है हार, रानिया महारानिया ही ऐसे हार पहनती है । हीरा ऐसे चमक रहे है जसे बोल रहे हैं । ऐसे दपदप कर रहे है जस मणिधर साप ने मणिया बिखेर दी हो । इस हार को लेना है पर मुफ्त म मिल जाये तो मजा आ जाये । यदि य सेठ भेट दे दे तो इसको क्या अतर पडेगा ?

' ठाकुर सा क्या सोचने लगे ?'

ठाकुर फस्स से हस पडा । फिर पलकें नचाता हुआ बोला, ' सठ जी ! मैं सोच रहा था । वह सभलकर झूठ बोला, कि समय कितना बदल

गया है ? समय की शक्ति के समक्ष शूरमाओ को भी धूल चाटनी पड जाती है। आप तो जानते ही हैं कि हमारे घर की औरतें खिडकी से झाक नही सकती थीं, आज कारो मे घूमती रहती हैं। यदि बडे अतिथि का वह आदर न करे तो अतिथि अपमान समझता है। आप कितने बडे व्यापारी हैं ? पहले हमारी आप रैयत थी पर अब बराबर के आदमी बन गये हैं। यदि हमारे घर की प्रमुख सदस्या आपका आदर न करे तो आप बुरा मानेंगे न ? कलकत्ते के कितने बडे जौहरी है आप ? लीजिए, ठकुरानी जी आ गयी हैं।"

ठकुरानी कसरदे की रग उडी साधारण पोशाक थी। बोर सिर पर बधा था।

तभी ठाकुर को खो-खो करके खासी आन लगी। खखार थूकने के लिए वह लपककर बाहर चला गया। यह खासी उसने जान-बूझकर की या स्वाभाविक रूप से हुई यह कहना कठिन है।

एकात पाते ही सेठ ने वह हार केसरदे के पावो मे डालते हुए कहा, "पहले मेरा मुजरा मानिए केसरद जी। फिर इस हार को देखिए ठाकुर-सा इसे लेना चाहते हैं ?'

'मुझे सब पता है। मुझे शबत लाने के लिए तभी कहा गया है।' उसने तीव्र स्वर मे कहा।

"फिर आप यह भी जान गयी होगी कि ठाकुर की नीयत क्या है ? उसकी नजर मे अपनी 'लुगाई' का मोल क्या है। एक पाच-दस हजार के हार के लिए उन्होने आपको मेरे सामन पेश कर दिया। यही उनकी नैतिकता है। मैं झूठ नही बोलता मैं भी पहली नजर म आपके अपूव रूप पर मुग्ध हो गया था। शायद प्रथम दृष्टि प्रेम इस ही कहते है ? मैं आपको चाहने लगा हू। और आपका यह लालची पति मर इस हार को मुफ्त मे लेना चाहता है यदि इसके बदले मैं आपको माग लू तो यह ना-ना कहते मुझे आपको दे सकता है। इसे हार चाहिए। यह हार को मुफ्त म पाना चाहता है। आप इस नरक से निकलकर मेरे साथ चलना चाहती हैं तो आप मुझे थोडे अ तराल के बाद पान का बीडा देने आइए। मैं फिर आधी रात को महादेव पीपल पर इ तजार करूगा। कलकत्ते ले

चलूंगा। आप ठाकुर-सा की कोई चिंता न करें। यह हार के बदले कुछ भी दे सकता है। सोचिए मुझे आप बहुत पसद हैं।'

ठाकुर के आते ही केसरदे चली गयी।

ठाकुर फिर बढ़कर हार की बनावट की प्रशसा करने लगा, "यह हार किसी नामी गिरामी सुनार का बनाया हुआ है।"

सेठ दभ से बोला "यह विलायत का बना हुआ है।"

सेठ जानता था कि विदेश के नाम पर ठाकुर ने केवल विलायत का नाम ही सुना हुआ है।

'मुझे पहले ही सदेह हो गया था। सच सेठ जी! विलायत के ठाट-बाट ही निराले हैं। मेरे एक खास दोस्त थे रेनाल्ड। यह विलायती पखा है न?" उसने पखे की ओर सकेत करके कहा, 'ऐसे तीन पखे मुझे रेनाल्ड साहब ने भेंट दिये थे। आज तक खराब नहीं हुए। हवा भी खूब देते हैं।

सेठ ने गर्व से कहा "मेरा यह सतलडा हार ऐसा बना हुआ है कि उसे सात पीढ़ी पहनेगी आप चाहे तो सतलडे के सात हिस्से करके अपनी साता ठकुरानियो को पहना सकते हैं। वैसा ही प्रभाव रहेगा, यही इसकी विशेषता है।'

वेशक।'

फिर वे इधर उधर की बातें करने लगे। सेठ को केसरदे का व्यग्रता से इतजार था। वह सोच रहा था—पासे का दाव खाली नहीं जाना चाहिए।

तभी केसरदे पान का बीडा लेकर आ गयी।

ठाकुर ने उल्लसित होकर कहा, 'यह बडी सलीके वाली लुगाई है।'

केसरदे ने उसे घृणा भाव से देखा।

फिर वह लपककर भीतर चली गयी।

सेठ ने ठाकुर को हार सौंपते हुए कहा, यह हार आप रख लीजिए पैसों की चिंता करने की जरूरत नहीं। मुझे रेनाल्ड से कम मत जानिए आपकी केसरदे हार से कम सुदर नहीं।

ठाकुर बेहयाई से ही हीं हसने लगा।

दूसरे दिन सुबह-सुबह बडी बूढी ठकुरानी क्रोध म भरी हुई ठाकुर के पास आयी और गरज कर बोली, "केसरदे कहा है ?"

नशे की पिनक म ठाकुर जिंदा मक्खी निगलते हुए बोलो, "मुझे क्या पता ? मैं उसके कीचड की तरह थोडे ही चिपका रहता हू ।

"काना म कौर मत लीजिए ठाकुर सा। आपको सब पता है। आपको सतलडा हार मिल गया न ? केसरद से अदला-बदली, छि ।'

ठाकुर अपनी म आ गया । गालिया देता हुआ बोला, "खूसट, जवान ज्यादा बढ गयी क्या ? तू तो खुद कहती थी कि केसरदे चाखी नहीं। छिनाल भाग गयी होगी।"

अचानक गिरगिट की तरह रग बदलकर ठाकुर विनम्र स्वर म बोला 'सेठ ने मुझे यह हार भेंट किया है आखिर मैं उसका ठाकुर हू न ? सतलडा हार है—आप पहनेंगी इसे ?"

एक घुटी हुई चीख बूढी ठकुरानी के मुह से निकली। आवाज भरी-भरी थी, 'मैं इस हार पर थूकती हू केसरदे की कीमत पर यह हार ।"

ठाकुर उसे चाटा मारता हुआ गरजा, "चुप रह चुडल बक-बक ज्यादा करने लगी है। गदन घड से अलग कर दूगा। एक भाग गयी उससे कौन सी कमी हो गयी आपके रावले म ? एक की जगह दस ले आऊगा। जागीरदार-जमीदार और डेरावाली मे लडकिया की कोई कमी है ? कक्कर-पत्थर समझते हैं हम बेटियो को। भलाई इसी म है कि इस बात को यही पर जमीदोज कर दो। समझी।"

फिर वह अनत तृष्णा व लालच के साथ बोला, "यह हार कितना शानदार है। इसके हीरे तारो की तरह जगमग कर रहे हैं। मुझे सेठ न भेंट दिया है। बडा आदमी हू न ? बस, इतना ही याद रख मेरी पतिव्रता।"

ठाकुर न मूछा पर ताव दिया। उस समय चौकीदार भागकर आया। वह घबराकर कहने लगा, "ठाकुर-सा, तोरणद्वार के गुम्बद टूट गये

हैं। पाल गिर गयी है।"

ठकुरानी चली गयी। ठाकुर अब भी हार को निहार रहा था। अफाम का टुकड़ा मुह मे लेकर सयत स्वर मे बोला, "अरे कोई मिनख और जानवर तो नही मरा ?"

एक लगडा और बहरा सन्नाटा पसर गया।

('सतलडा' का अनुवाद)

दीवारे-ही-दीवारे

दीवारो के साथ मन का विशेष जुडाव होता है, विशेषत मेरा। मैंने जहा-जहा नौकरी की वहा-वहा मेरा पेड-पौधे, फूल-पत्तिया, झाड झखाड और बेजडे गूदो की जगह दीवारो से मेरा विशेष और अधिक [illegible] गया। वहो-वही तो आकपक पहाडी घाटिया पसरी हुई [illegible] मनमोहक धूप और हरे आचल को ओढे धरती अत्यन्त ही सुन्दर [illegible] न जाने मेरा जुडाव दीवारो से ही क्यो रहा।

जब कभी मैं अपनी सहेलियो से तरह-तरह की दीवारो की [illegible] तो वे मुह टेर कर मुझे अपलक निहारती रहती। [illegible] आखो मे से अनेक प्रश्न निकल कर मेरे चेहरे पर [illegible] हैं।

फिर कभी-कभी एक सहेली पूछती, "क्या तुम्हें [illegible] जैसी झीलें अच्छी नही लगी ?"

दूसरी उपहास भरे स्वर मे कहती [illegible] भाया ?"

है, मेर शरीर पर मवादभरे घाव है ।

दीवारें ये दीवारें । उनके भीतर की घुटन और ऊब । पीडादायक यादे । ओह ! कितनी मर्मान्तिक वेदनाए भोगी है मैंने ? वे वेदनाए वदनाए वे पीडाए वह अतीत मे खा जाती है ।

'तू अपने को क्या समझती है ?" एक पुरुष का दहाडता हुआ स्वर गूजा ।

"मैंने क्या कसूर किया है जिससे आप इतने लाल-पीले हो रहे है ?" लुगाई का दबा स्वर।

"अरे तू ता कानो म कौर लेन लगी ।"

'मैं आपका मतलब नही समझी ।"

"मतलब बताऊ, भले घर की बहू होकर तूने खिडकी स सडक पर झाका क्यू ? सच कहना झूठे का मुह काला होता है । सौगन्ध खा मेरी ।'

लुगाइ पागल की तरह कडक कर बोली "यह तो बडे आश्चय की बात है । आप मुझे जब अपनी लुगाई समझते ही नही फिर आप मुझ पर स्वामीत्व क्यो जता रहे है ? जब आपसे मेरा कोई सम्बन्ध नही फिर आपकी सौगन्ध क्या खाऊ ?"

"आह ! बहुत कुतक करती हो ।" पुरुष ने एक लम्बा सास लेकर कहा ।

थाडी देर ऊबा हुआ सन्नाटा पसरा रहा। फिर पुरुष के चेहरे पर कठोरता उभरी । वह लुगाई की ओर बन्दर की तरह झपटा । उस पर जन्म जन्मो क पुरुष अधिकार को जताता हुआ बोला, "तूने खिडकी से झाका कि नही ? जवाब दे ।

'झाका ।'

'क्या ?' पुरुष की आखें विस्फारित हो गयी । बोला "चोरी और सीना जोरी । मैंन तुझे मना कर रखा है न ? तू जानती ह कि सामने कौन रहता ह ?

"जानती हू ।

पुरुष की आखो मे अगारे दहक उठे । वह बदहवास-सा उसके बालो को निममता से पकडकर चीखा, 'छिनाल राड ! तेरी इन बडी-बडी

इधर-उधर झाक्ती आखो को फाड दूगा।"

वह तडपती रही पर उसन इस बात को नही स्वीकारा कि वह खिडकी बद रखेगी। सभवत वह उसके भीतर का विद्रोह था।

पुरुष न नया घर किराये पर ले लिया। इस घर की दीवारें बहुत ऊची थी। उन दीवारो पर रग तो नया था फिर भी प्लास्टर जगह जगह उतरा हुआ था। इस घर की साझ भी काली होती थी। सूरज कब उगा, इसका भी पता नही चलता था। एक छाटी-सी खिडकी थी उसम स दोपहर का धूप का टुकडा आता था। सूरज ढलत-ढलते वह आगन मे से हाता हुआ घुटनो के बल चलत शिशु की तरह बाहर हो जाता था।

थोडा समय बीता।

एक दिन पुरुष अपनी छाती को फूलाकर क्रोध व घृणा मिश्रित स्वर मे बोला, "वह मरी अनुपस्थिति मे क्यू आया था?"

"मुझे पता नही, वह आपका मित्र है। मैं उसे अपमान करके कैसे निकाल सक्ती हू।"

'मैं सब जानता हू। वह पहले मेरा दोस्त था पर अब वह तेरा दास्त है। मैं त्रिया चरित्र खूब जानता हू।"

"तुम्हारा मतलब क्या है।' लुगाई क तौर बदल गये। भौह तन गयी। झूठे और निराधार आरोप से उसके शरीर मे लालफलीता लग गये।

"मैं मतलब समझाता हू। वह मेरी अनुपस्थिति म क्यू आता है? इसस यह सिद्ध नही होता कि वह सिर्फ तेरे लिए आता है।" पुरुष अपनी सारी शिष्टता और धैर्य खो बठा।

लुगाई बिजली की तरह कडक्कर बोली, 'आप बहुत ही घटिया स्तर के आदमी है। अपनी पत्नी पर इतना नीच आरोप लगाते हुए आपकी जीभ क्यू नहीं जली?"

पुरुष का आदिम पौरुष जाग गया। उसने अतिम शस्त्र प्रयाग म लिया यानी उसे जानवर बनकर पीट डाला।

लुगाई अहिल्या बन गयी। राती गयी और पुरुष की नाइन्साफी को नगा करती रही।

इस बार नया शहर और नया घर।

इस घर की दीवारें ज्यादा ऊंची नही थी पर उन दीवारो म एक भी छोटी-मोटी खिडकी नही थी। दीवारे पुरानी थी। उन पर काइ जमी हुई थी। कई जगह टेढी मेढी तरेडें थी।

इस घर मे किसी भी प्राणी का प्रवेश निषिद्ध था—हा, धूप और हवा जबरदस्ती घुस जाती थी। कभी-कभी वह पडोसिन को जरूर बुलाती थी।

एक बार पुरुष ने पडोसिन को देख लिया।

शकालु पुरुष के मन मे सदेह के काटे उग आये। कडककर पूछा, "यह पडोसिन हमारे घर मे क्यू आती है?'

"मेरे काम स आती है।" छोटा-सा उत्तर।

"तुम्हारे काम स?'

"हर काम मर्दो को नही बताया जाता है।'

"क्यू नही बताया जाता? तुझे बताना होगा। मैं तरा स्वामी हू, पति हू।"

वह लज्जा गयी। बहुत रुक्त हुए कहा, "मैं दो जीवा से हू। मैं मा बनने वाली हू।"

"क्या?" पुरुष सु न हो गया। पलकें स्थिर। शरीर जडवत। बाज की तरह झपटता हुआ वह बोला, "तू कसे मा बन सकती है? मैं ता निरोध मैंन ता बच्चे न होने के सारे बदोबस्त कर रखे थे?"

लुगाई का सारा अस्तित्व और गरत जसे आहत हो गयी। वह विद्रोहिणी की तरह खडी होकर बोली, 'तुमन मुझे समझ क्या रखा है? तुम कहना क्या चाहन हो? तुम मद सिवाय इसके कुछ और भी सोच सकत हो? कितना पतन हो गया है तुम्हारा? एसा करो कि तुम म जरा भी दम है तो मुझे मार डालो खडे क्या हो? मारो मारो मारो।

अत म वह अत्यन्त ही अवश हो गयी थी। पुरुष स्तब्ध। निश्चल। हिला न डुला।

'मुझ पर कीचड उछालन शम नही आयी?' वह भडकी।

"हरामजादी ।"

"मैं अब तुम्हारे साथ नही रह सकती । मैं यहा से चली जाऊगी ।" लुगाई ने अपना निणय सुनाया ।

पुरुष चिल्लाया, "चली जा कूआ-खाड कर लेना, मर जा पर मुझे अपना यह काला मुह मत दिखाना ।'

वह भागना चाहती थी पर उसके चारो आर दीवारें खडी हा जाती थी । वह अपना अलग अस्तित्व कायम करन के लिए अलग घर बसाना चाहती थी पर दीवारें उसका घेराव कर लेती थी । वह सब-कुछ नगा करना चाहती थी पर नारी की इन सामाजिक मूल्या मे उसकी नाजुक स्थितिया दीवारें बनकर उसका माग अवरुद्ध कर दती थी ।

वह असहाय-सी तडपती कि उसके चारो ओर दीवार ही दीवारे है ।

तरह-तरह की दीवारें ।

बिना खिडकियो व सुराखा की दीवारें ।

मजबूत और अटूट दीवारें ।

यादें मिट गयी । वस्तुस्थिति का कटीला अहसास महसूसती हुई वह अपने अश्रुपूरित आखो को पोछकर अपने आपस बोली, "सच तो यह है कि मुझे इन दीवारो से जरा भी जुडाव नही है । मुझे घणा है इन दीवारो से ।

पर मैं करू क्या ? सोचते सोचत पाया कि अन्ततोगत्वा लडना ही पडेगा । जब अपने आपसे जुडाव नही है, फिर दूसरो से कैसे जुडाव हो सकता है ? फिर भी मुझे मालूम है कि इन दीवारो मे बद होने के बावजूद मुझे अपनी मुक्ति के दशन हो रहे है । मेरी तीखी निगाह इन दीवारो म दरार डालने लगी है । अभी दरारें कम हैं पर शीघ्र ही ये दरारें रास्ते बन जायेंगी और मैं उनसे स्वाधीनता प्राप्त कर लूगी । तब मुझे इन दीवारो की जगह हरे भरे खेत, फूलो से भरी घाटिया, बफ से ढके पहाड, झीलें, नदिया, समदर, झरने, धारे और प्रकृति की हर उस चीज स प्यार होगा जो स्वच्छन्द है ।

ये दीवारें टूटेंगी और अवश्य टूटेंगी ।

('भींता ई भींता' का अनुवाद)

बिखरी-बिखरी औरत

जिस तरह हजारा घरा के धुए मे साझ का दम घुटन लगता है उसी तरह जया सक्सेना का दम अपने छोटे से कमरे म बठे-बैठे एकान्त से घुटन लगा। उसे महसूस हुआ कि दीवारें हाथ निकाल रही हैं और उस दबोचन की चेष्टा कर रही है। इसलिए वह घबराकर कमरे के बाहर आ गयी और खुले बरामदे म खडी-खडी अजगर की तरह लम्बी लम्बी सासें लेन लगी, मानो वह अपने भीतर की घुटन का बाहर फेंक रही हो।

आज सुबह स ही उसका मन उचाट हो गया था और घुटने लगा था। कारण बसे यथाथ के काफी नजदीक था, पर उसे आशा के विपरीत कचोट गया। उसके मातहत काम करने वाली मास्टरनी सरला ने स्कूल म उसे गौर से देखकर तपाक से कह दिया, "यदि आप बुरा न मानें तो मडम मैं एक बात कहू ?"

"कहो।"

"अब आप एजेड लगने लगी हैं। उम्र चेहरे पर दिखन लगी है। जरा गौर कीजिए आपका शरीर भी थुलथुला-सा हो गया है।

वह कुछ जवाब दती, इसके पहले ही सरला तीर की तरह चली गयी। उसके होठा पर पसरी व्यग्य भरी मुस्कान को जया समझ गयी। वह अजीब-सी पीडा म घिर गयी।

घर आते ही उसन अपन आपको आदमकद शीश म ढाल दिया। उसने अपन आपको घूर घूरकर दखा। लगा की इस तरह जाच की मानो कोई खरीददार हो और फिर वह सरला को उसकी अनुपस्थिति म एक भद्दी गाला दकर बोली झूठी कही की जया तो सदाबहार है। सरला तुम

झूठ बोलती हो। मुझसे जलती हो।"

और वह बाथरूम में चली गयी। हालांकि नहाने का समय नहीं था, फिर भी वह नहाने लगी। उसे एक विचित्र सुखानुभूति हुई।

नहाते नहाते उसने तय किया कि वह स्कूल फिर जाएगी। कुछ कागजों पर दस्तखत करने हैं। उसने अपने आपको सजाया। गुलाबी रंग की साड़ी पहनी। अचानक उसे प्यास का आभास हुआ। उसने फ्रिज खोला। फ्रिज से बदबू का भभका निकला, जिसने उसकी नाक का घेराव कर लिया। उसका जी छोटा सा हुआ। उसे हठात ख्याल आया कि उसने फ्रिज को पिछले कई सप्ताहों से साफ नहीं किया है। फिर वह फ्रिज को देखने लगी, रोटियां दही-बड़े, सब्जियां बेतरतीब से पड़े थे। कई जगह तो दाल के छींटे बिखर पड़े थे। वह फ्रिज की दुर्दशा पर तरस से भर आयी, साथ ही उसने अपने आपको आलसी होने के लिए लताड़ा—"इतना कीमती फ्रिज और इतनी लापरवाही।

मगर यह काम तो उसने हरखी चपरासिन को सौंप रखा था। बस, *उसने हरखी चपरासिन को हजारों गालियों से ढक दिया।* एकाएक वह गंभीर हो गयी। सहसा उसे हरखी का रजभरा तल्ख वाक्य याद हो आया। कल ही उसने कहा था, "बहनजी! आप हर चांदी की चीज में लोहे की कील ठोक देती है।"

"कैसे?" वह चौंक पड़ी।

"जरा देखिए न?" उसने फ्रिज की ओर इशारा किया, "सात-आठ हजार का फ्रिज और उसके नीचे ईंटें लगा रखी हैं। शानदार पलंग पर खरगोश के रोएं जैसा गद्दा है, पर चादर फटी हुई है। चाय के प्याले बड़े ही सुन्दर हैं, पर केतली बाबा आदम के जमाने की है। एकदम बादी और मुड़ी-तुड़ी।"

वह क्रोध में भर गयी। हरखी का मन ही-मन डांटने लगी। दरअसल केवल हरखी चपरासिन ही नहीं, जो भी चपरासिन चपरासी उसके घर आते हैं, वे उसके रहने के ढंग की जरूर आलोचना करते हैं। उसकी हर वस्तु में खोट खोजकर निकालते हैं। इसीलिए वह हर एक को डांटकर निकाल देती है।

इस तरह उसने हरखी को निकाल दिया। यह सोचकर कि वह बालन जागी दो टके की होकर उसके सामने चप्पर-चप्पर करती है! मेरी बातो का मखौल उडाती है और मुझे फूहड समझती है घमडी कहीं की! वह यह नही जानती कि जया सक्सेना एम० ए० बी० एड० है। हैड मास्टरनी है।

जया काफी आवेश म भर गयी थी।

वह आतरिक सघष म बाह्य स्थितियो को भूल रही थी। उसन जल्दी से कपडे पहने और बाहर जान की योजना बनान लगी। उसने दीवार पर लगी घडी की ओर देखा। वह सहसा झुझलाहट से भर गयी। घडी को कोसती हुई वह फुफकार सी उठी 'यह घडी भी मरी मरी-सी चल रही है।" उसने तेजी स रिस्टवाच की ओर देखा। वह लम्बा उसास छोडकर बोली "ओह! स्कूल का टाइम हो गया ह।"

वह तेजी से दरवाजे को ताला लगाकर अपनी साइकिल की ओर बढी। ताला खोला और तेजी से स्कूल पहुच गयी। अभी उसन स्कूल की चारदीवारी मे पाव भी नही रखा था कि एक सम्मिलित ठहाका उस सुनायी पडा। सरला सविता, पन्ना जीनत और मास्टरनिया हस रही थी।

वह जल भुन गयी। उसने आग्नय नेत्रा से उनकी ओर देखा। अपने कमर मे बैठत ही उसने जोर से घटी बजायी। चपरासिन से कहा, 'जाओ, सविता को बुलाकर लाओ।'

सविता न अदब से कमरे मे पहुचकर कहा 'आपने मुझे याद फरमाया?'

'हा महारानी जी, मैं पूछ सकती हू कि तुम सब मुझे देखकर हसी क्या थी?'

"आपको देखकर तो हम नही हसी थीं!"

वह भडक उठी 'तो वहा कोई गधी खडी थी? मेरे सामने झूठ बोलने की चेष्टा मत करो।'

'मडम! आपको मैं सच कहती हू कि हम आपको देखकर नही हसी थी।"

जया बारूद म आग लगने की तरह भडक उठी, "यदि तुम सच बोलत हो तो खाओ अपने खसमो की सौगध। मैं सबको बुलाती हूं।" J-सारं शिक्षिकाए आ गयी।

सविता ने सोचा कि अब सच बोलन मे ही फायदा है। पति की झूठे कसम खाने को कोई परिणीता तैयार नही थी। वह अपराधी की तर नजर झुकाकर बोली, "आप माइड न करें, तो सच कह सकती हू।"

'बको,' वह चिढकर बोली।

जीनत ने मुलायम स्वर मे कहा, "मडम आपने पावो मे तो सोने की पायल पहन रखी है और उसके नीचे घिसी टूटी नाइलोल की चप्पल। बेचारी सोने की पायल रो रही है।"

"बस, इसी बात पर हम हसी आ गयी। पन्ना न जरा व्यग्य स कहा।

"यू सिली मैं कभी भी तुम लागो को फसाकर चाज शीटस द डालूगी।"

"सॉरी मैडम!" सब एक साथ बोली। जया जल भुनकर रह गयी। उसका मूड खराब रहा।

एक दिन जया सक्सेना साडी की जगह चुस्त सलवार-कुर्ते मे स्कूल आयी। उस दिन मास्टरनियो न अपने मुह मे चावल रख लिये, पर छोकरिया हस बिना न रह सकी। उस पोशाक मे जया का थुलथुला शरीर लगभग चीख रहा था और जया सक्सेना गव से, अपने परिवेश से कटकर कह रही थी, "पन्ना! इस पोशाक म मेरी उम्र दस साल कम लगने लगी है।"

वह हा म हा मिलाकर बोली "हा मैडम, दस साल क्यू पूरे पद्रह साल!"

और उसने कामन-रूम मे जाकर उसी अदाज से यह वाक्य कहा, तो सारी मास्टरनिया खी खी ही-ही करक हसन लगी।

हसी न जया क काना के दरवाजा पर दस्तक दी। वह तीर की तरह कामन रूम मे प्रवश करके लाल पीली होती हुई बोली, "यह स्कूल है या ड्रामा कम्पनी? हसन तक की तमीज नही? नटनियो की तरह दात निकाल रही हो!"

मन गूंगी हो गयी।

उसी समय जया की वफादार चपरासिन की बात न आग में घी का काम किया 'बडी बहिनजी, य सब आपकी पोशाक पर हसी थी।

'क्या !' वह चीखी।

चपरासिन न यत्रवत सिर हिला दिया।

वह ज्वालामुखी बन गयी। जोर स पाव पटककर बोली, "मरी पोशाक पर हसी ? बोलो, यह बात सच्ची है। तुम सबकी जबानें कमे चिपक गया ? दूसरा पर थूक उछालत हुए, तुम शरीफजादियो को शम नहा आती ? जया बोलत-बोलत भर आयी। उसका कठावरोध हो गया, "मर भाग्य पर तो स्वय भगवान भी हसता है—फिर आप ? यदि तुम सबका मरी तरह ऊब खालीपन, घुटन एकात और एक एक पल बिखरा हुआ जिन्दगी म मिलता तो कभी नही हसती तब दूसरो पर हसन का मम समझती ! मुझ बडा दुख है।'

वह स्कूल से घर आ गयी। पलग पर धडाम से पड गयी—पट के बल मानो कोई पत्थर एकाएक गिर पडा हो। वह अव्यक्त पीडा मे तडपन लगी।

समय सरकता गया।

उसका मन शात हो गया। फिर भी आसुओ के बादल उसक आगे आने-जाते रह। धीर धीर वह अपन आप पर केंद्रीभूत हो गयी। सोचन लगी—उसका सारा जीवन बतरतीब रहा है। एकदम बिखरा बिखरा और अस्त व्यस्त ! चुभन वाली बातो से भरा भरा ! बचपन स लकर आज तक उसका जीवन सही नहीं रहा। कहीं-न कहीं गलत सदभ और ठहराव ! सच वह एक बिखरी हुई औरत है।

गाय जसी मा थी उसकी। एकदम सीधी सादी। उसके बाप न उसकी मा को एक पस वाली औरत के चक्कर मे तलाक दे दिया। इसम उसका सारा बचपन धूल चाटता रहा। निर्देशनहीन हो गया। किशोर होते-होते मा का स्वगवास हो गया। वह बिना साय की हो गयी। सारी व्यवस्था बिगड गयी। मौसी न नौकरानी की तरह बर्ताव किया। महानगरो म मौसी को रोटी-कपडे के बदले एक नौकरानी मिल गयी। उसकी दुत्कारें

उपेक्षाएं व अपमानजनित यन्त्रणाओं की पीड़ा के कारण जया विक्षिप्त सी हो गयी। इन पीड़ादायक पलों में उसे पड़ोसी अमित ने प्यार दिया। वह उसके प्रेम की गह्वर-घुमेर घाटियों में खो गयी। मगर उसने भी आधुनिक सम्बन्धों की रहस्यता में जया को उलझाकर ठग लिया। फिर अमित ने अपने मां-बाप के कहने पर कहीं और शादी कर ली। तब जया को लगा कि वह रेगिस्तान में भटकी हुई है—सुख का अहसास तो मृगमरीचिका है वह टूटती टूटती पीड़ा का पिंडमात्र रह गयी। उसे लगा कि उसके आगे मरुस्थल ही-मरुस्थल है—दलदल ही दलदल है! आखिर उसने अपने को संभाला और अतीत की हत्या करके नये रास्ते पर चली। बी० ए०, बी०एड० करने के बाद वह नौकरी में लग गयी। उसे फिर एक पुरुष मिला। वह उसके शाब्दिक इन्द्रजाल में फंस गयी। उसके झूठे वायदों व वचनों में आ गयी। वस्तुतः जया का अनन्त स्नेह प्रेम का प्यासा मन उस छलिये के छलावे में आ गया और उसने उससे शादी कर ली। उसने विवाह मंडप के हवन की पवित्र अग्नि के समक्ष मन ही मन तरल प्रार्थनाएं की थीं—"हे अग्नि! मुझे एक सुखद शान्त और सही जीवन देना! मुझे अच्छे बच्चे देना अच्छी व्यवस्था देना।" मगर शादी के चन्द माह बाद ही उसे अपना पति अजगर लगा। उसकी तनख्वाह को निगलने वाला अजगर! वह हजारों बहाने बनाकर जया से रुपए ऐंठ लेता था। उसके सम्बन्धों के नकलीपन का उसे अहसास होने लगा। एक दिन तो वह एक व्यवसाय में जबरदस्त घाटे की बात कहकर जया से गहने मांग बैठा। जब गहने जया ने नहीं दिए तब उसने चुरा लिये। जया का हृदय विदीर्ण हो गया। उसे लगा कि आदमी अज्ञेय हो गया है। दोगला हो गया है। वर्णसंकर। इस पुरुष का कहीं भी अपना जमीर नहीं है—नैतिकता नहीं है। वह एक औरत के लिए सिर्फ अजगर है, उसके अस्तित्व को गटकने वाला अजगर! अजगर!

आखिर जया उससे अलग हो गयी। तलाक ले लिया अपने पति परमेश्वर से।

फिर वही बेतरतीबी। अस्त-व्यस्त! जीवन नीरसता और बिखराव का एक पर्याय हो गया। सब कुछ भरा-भरा होने पर भी एक भीषण खाली-

पन, एक अजीब थोथापन और काय-पद्धति !

वह विचित्र व अज्ञात कुण्ठाओ से घिर गयी। आवल कावल प्रवत्तिया जम गयी उसम। उन सबन उसे खोखला और विचित्र कर दिया। हर सम्मोहन के पीछे उसमे एक विरक्ति थी, जो उसके काय-कलापो म प्रकट होती रहती थी, जो उसकी हसी उडवाती थी।

वह अतीत से निकली, तो उसने अपने को रोते हुए पाया। उसने मह धोया। बाल सवारे। हरे रग की साडी पहनकर वह बाहर निकली।

सौ पचास कदम चलने पर अचानक रकी। ब्लाउज के दायी ओर देखा तो वह हतप्रभ रह गयी—ब्लाउज बोदा था और काख के नीचे फटा हुआ भी।

वह स्वय हस पडी। उसके साथ ही उसे चारा ओर से रग बिरग अट्टहास सुनायी दिये।

अचानक उसकी आखो म आसू आ गय।

सच, यह बेतरतीबी उसकी अपनी नियति बन गयी है। वह फफक फफककर रोन लगी। जसे एक बिखरी बिखरी औरत।

('आवल कावल' का अनुवाद)

एक और नगर मे

मैंने दरवाजा खटखटाया। वह नीचे उतरती-उतरती रह गयी। मैंन किवाड के सुराख मे से देखा कि वह सुबक-सी रही है। मैंन उस आवाज दी। कई बार आहिस्ते-आहिस्ते पुकारा, पर उसन कोइ प्रत्युत्तर नही दिया। बल्कि वह पीठ किये हुए स्वय को व्यवस्थित करती रही।

फिर वह नीच उतरन लगी। उसके कदमो की आहट मुझे स्पष्ट सुनायी पड रही थी। उसके घर क चारो ओर गहरा सन्नाटा था क्योकि जो चारो ओर सेठो की हवेलिया थी, उनमे सिवाय नौकरो क काई भी नही रह रहा था।

मैंन भी अपने को थोडा-सा एलर्ट किया। उसन दरवाजा खोला। सदा की भाति आज उसके चेहरे पर गुलाब क फूलो की ताजगी नही थी, बल्कि लग रहा था कि किसी न उसके चेहरे की रौनक को ब्लाटिंग पेपर से सोख लिया है। उसकी आखें रोने के कारण लाल हो गयी थी और उसम एक फलाव-सा आ गया था।

मैंने उससे गम्भीरता से पूछा, "प्रभा, आज तुम उदास नजर आ रही हो ? क्या कोई अशुभ ?'

वह बीच मे ही बोली, "नही तो मैं कहा उदास हू ! मैं ता एकदम खुश हू।'

उसन सफल अभिनय करन की चेष्टा की पर वह सवथा असफल रही। उसके अन्तर की वदना उसक चेहर पर मुखरित हो गयी। उसन मुझे बठक मे चलन का सकेत किया। मैं जाकर एक सोफे म धस गया। मेर बिना किसी अनुराध के चाय बनाने चली गयी। मैंने भी

नही। प्राय मैं जब प्रभा म यहता तभी वह चाय बनाती थी। उसन मरी पिछन तीन वर्षों म गहरी मित्रता थी। हमार बीच औपचारिकता नाम की कोइ वस्तु नही रह गयी थी अब। आज यकायक स्वरा म खिसकन का अभिप्राय मैं समझ गया था। वह अपन अन्तर के संघर्ष पर काबू पाना चाहती है। थोडी देर म वह पुन आ गयी।

उसके हाथ म चाय की ट्रे थी।

उसन मेरी ओर प्रश्नभरी दष्टि स दखा और मुस्कराने की चेष्टा की। मैं उसकी नाटकीयता भाप गया, क्योंकि उसम सच्चाई का जरा भी प्रभाव नही था। मुझे वह अब भी रोती रोती सी नजर आ रही थी। उसका गुलाबी मुखडा आमुओ की परत से ढका ढका लग रहा था।

मैंन चाय का प्याला ले लिया। कुछ दर तक उसकी हरकतें करती हुई दोनो टागो को दखता रहा जो मज के नीचे थी।

"क्या बात है?" मैंन हठात पूछा।

"कुछ नही।"

'क्या झूठ बोलती हो?' मैंने चाय का घूट लिया। मेरा स्वर गम्भीर था।

"कह रही हू कि कुछ भी तो नही है।" उसने अपने शब्दा पर दबाव देते हुए कहा।

'न बताना चाहती हो ता मत बताओ। मैं तुम्ह मजबूर तो नही कर सकता पर मुझे दुख जरूर होगा। थाडा-सा इल फील भी।"

मैंन उसकी ओर नही दखा। अपनी दष्टि को प्याल पर जमाय हुए मैं चाय क घूट लता रहा। बस प्रभा मे मरा आत्मिक लगाव था। सच वह ता उसस म प्रेम करता था। वह मुझसे प्रेम करती थी। किन्तु उसका पति योगेश भी मरा मित्र था। गहरा मित्र। इसलिए मरी सारी नतिकता मरे और उसके सम्बन्धा के कारण भयभीत थी। यानी मन ही मन प्रभा से अगाध प्रेम करत हुए भी मैंन कभी भी उस प्रकट नही किया बल्कि एक चालाक आदमी की तरह श्रेष्ठ नतिकता व मित्रता प्रदर्शित करने वाले शब्दा क माध्यम से आत्मवचना करता रहा और उस धोखा ही देता रहा। ठीक इसस ही मिलती-जुलती स्थिति प्रभा के साथ थी। प्रभा वस भी अपने

पति के प्रति असीम प्रेम प्रदर्शित करती रहती थी। अपने-आपको संसार की सबसे सुखी पत्नी कहती थी। पति से ऐसी चिपकी रहती थी जैसे परछाई। अपने पति की प्रशंसा में वह सर्वश्रेष्ठ विश्लेषणों को चुका देती थी। कहने का तात्पर्य यह है कि वह अपने पति की प्रशंसा और संतुष्ट जीवन के चर्चों में डूबी रहती थी।

वैसे प्रयोगों में भी वह यह सब प्रमाणित करती थी। सिनेमा पति के साथ, बाजार पति के साथ और किसी पार्टी में पति के साथ अर्थात् पति के बिना घर से बाहर कदम नहीं। यही कारण था कि मैंने उसमें कभी भी प्रेम प्रकट नहीं किया। हालांकि वह बात-बात में मेरे हाथों को छू लेती थी। मेरे पांव को अपने पांव से दबा देती थी, परन्तु वह इतना अनायास और मुक्त भाव से होता था जिसके कारण मैं सहमत रहता था। इस पर उसकी आंखों में उमड़ता हुआ प्रेम का उफान और आमंत्रण मुझसे छिपा नहीं रह सका। आहिस्ते आहिस्ते मैं और प्रभा एक मौन प्रेम में बंध गये। हम दोनों इस बात के लिए भी सजग रहते थे कि कभी कहीं किसी हरकत से भी योगेश को यह शक न हो जाये कि हम एक-दूसरे को चाहते हैं।

मुझमें एक बुरी आदत है। हालांकि वह मेरा एक झूठ है, पर मैं उससे अत्यन्त ही ग्रस्त हूं कि मैं नैतिकता और आदर्श की बातें बहुत करता हूं। मैं कई बार इस बात की भी घोषणा कर चुका हूं कि वह मित्र मित्र क्या जो मित्र की पत्नी से प्रेम करे। ऐसे मित्र को जलील करके घर से धक्के मारकर निकाल देना चाहिए। वस्तुतः मैंने एक चरित्रवान व्यक्ति का सुंदर खोल पहन रखा है। वह खोल अब इतना मजबूत हो गया है कि उसको उतारना हमें अपने आपको अनावृत करना लगता है। इसीलिए मेरा और प्रभा का प्रेम आदर्शसूचक शब्दों का खोल पहने हुए धीमी धीमी गति में चल रहा था।

मुझे सुबकियां सुनायी पड़ीं। मैंने नजर उठाकर देखा। प्रभा बताशे की तरह फीस गयी थी। उसका आकर्षक चेहरा अश्रुप्लावित था। मैंने अपनी चाय का प्याला मेज पर रख दिया।

"मैंने तुम्हारा चेहरा देखते ही जान लिया था कि आज ... घटित हुआ है। क्या कोई अशुभ समाचार आया है?"

उसका प्याला भरा का भरा था। उसने एक घूट भी नही लिया था। चाय पर मलाई की हलकी पपडी जम गयी थी।

मैंने उस ओर कुरेदा।

इस बार वह विस्फोट कर गयी, "मेरा सारा जीवन ही अशुभ है। एक अत्यन्त ही अशुभ और पीडादायक घटना। एक ऐसा बोझ जिसे मैं लादकर चल रही हू।'

उसके इस बयान से मैं स्तब्ध रह गया। मेरी आखें विस्फारित हो गयी। मन सहमत-सहमत पूछा, "यह तुम कह रही हो?"

"हा यह मैं कह रही हू। मैं याने श्रीमती योगश शर्मा। एक दुखियारी औरत।' उसने अपने आसुओ को पोछा। वह अत्यन्त ही विपाक्त जान पडी थी।

मुझे प्रमाण मिल गया कि उसने भी मेरी तरह एक खोल पहन रखा है। अपने मूल अस्तित्व के विरुद्ध एक रग-बिरगा खोल।

उसकी आखें फिर भर आयी। रुधे कण्ठस्वर म वह बोली "हा, राजू मैंने अपने जीवन के पूरे दस सालो की हत्या कर दी है। दस ही क्या, मैंने अपने सपूर्ण जीवन की हत्या कर दी है। ऐसा रद्दी और शक्की पति मैंने नही देखा।'

मुझ पर आघात लगा। मैंने रुकते रुकते पूछा "वह तुम पर शक करता है, यह तुम कसे कह सकती हो? वह तो काफी प्रगतिशील विचार धारा का है। उसकी अण्डरस्टडिंग तो बहुत अच्छी है।'

'खाक अच्छी है। वह एक दकियानूसी आदमी। उसकी उदारता दूसरे लोगो के लिए ही है। मैं सच कहती हू कि मैंने इसके साथ जो बरस विताये हैं व जबरदस्ती विताये हैं। वास्तविक प्रसन्नता से तो एक पल भी इसके साथ नही रह सकती। तुम्हारा दोस्त एक बूढा, खूसट, अठारहवी सदी का परम्परागत आदमी है।" मैं कुछ कहू, इससे पहले वह पुन बोली 'तुम सुनकर हैरान होओगे कि उसने मुझे तुमसे बोलने के लिए मना कर दिया है। कह दिया है कि तुम्हारे पास मेरी अनुपस्थिति म क्यो कोई आता है। याने तुम मेरे पास क्या आते हो? छि, यह कोई बात हुई? क्या कोई आदमी अपने मनपसन्द आदमी से गप्पें नही मार सकता? हस-बोल

नही मकता ?"

"मैं तो आना व द कर दूगा।" मैंने तुर त अपना निणय सुनाया।

"नहीं, नही, तुम्हे आना ही है। इस वार यह मैं सहन नही कर पाऊगी। दस वरसा म एसे पल मैंने कई बार सहे हैं। एक बार तो योगश न हद ~र दी। मेरे एक रिश्तेदार को लेकर उसने ऐसी तनाव की स्थिति पदा कर दी कि मैंन आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया। वह मुझम उम्र म भी छोटा था। चार्मिंग लडका था। वडी मजेदार वातें करता था। वात-वात पर चुटकुल मुनाता था। मैं उसके साथ कभी भी बोर नहीं होती थी। यह तुम स्वय जानत हो कि प्रवृति और प्रवत्ति म, मुझम और योगश मे काफी अ तर है। वह निता त बोर आदमी ह। उसे का शौक नही। उसम कोई कला नही। सिफ एक कला है कि वह अच्छा-खासा कमा लेता है। आज तुम्हें उस कटु सत्य से परिचित करा रही हू कि उसकी वतमान की सारी गतिविधिया मेरे दवावो के कारण हैं। सिनेमा देखना, मित्रो के यहा जाना, मेल जोल बढाना, नयी डिजाइन के कपडे [illegible] सब मेरे कारण। वरना यह आदमी सीधा दफ्तर से आ जाय, [illegible] बच्चा को लिये स्वय खिलौना बन जाय और सोन के पूव [illegible] सलवटें डालकर जीवन का चरम लक्ष्य पा ले। यह एक निता [illegible] व्यक्ति है। इसे कमाने खाने और मुझे भोगने के अतिरिक्त [illegible] किन्तु मैं इसके सवथा विपरीत हू। मुझे वचपन से ही [illegible] रहने की आदत है। आखिर आदमी के जीवन और जीन [illegible] है? वह लडका मुझसे छोटा था। नाम था [illegible] कहता था। कदाचित उसने इस पवित्र रिश्त के [illegible] कर ली थी पर मुझे वह अच्छा लगता था। [illegible] आकषक लगता था जितना आजकल तुम [illegible] देता था। वह मेरे चेहरे की उदासी की परत [illegible] देता था। मैं सच कहती हू कि मेरे मन म [illegible] जाग्रत नही हुई।

"एक दिन मैं और वह बैठक मे बठे [illegible] चुटकुला सुनाया था। चुटकुला आज [illegible]

प्रेमिका स पूछा, क्या तुमन अपने पिताजी को बता दिया है कि मैं लखक हू। प्रेमिका न स्नेहिल स्वर मे उत्तर दिया, 'नही, अभी तक मन तुम्हार छोटे छोटे गुणो को बताया है—जैसे शराब पीना, जुआ खलना—यह बात सबस बाद म बताऊगी'।' प्रभा ने थोडा-सा हसने का प्रयास किया।

' मैं और आशीस खिलखिला रहे थे कि आप श्रीमान् न खलनायक की तरह प्रवश किया। मैंन उसका हाथ पकड लिया था। योगश देखकर लाल पीला हो गया। अपनी एम० ए० की शिक्षा और तहजीब सबको भुलाकर वह निहायत ही असभ्य की तरह बोला, "यहा रडीखाना है क्या जो वहूदो की तरह हस रहे हो तुम दोनो ?

"हम दोनो सन्नाटे म आ गये। आशीस का चेहरा इतना सफेद हो गया था मानो उसका रक्त निचोड लिया गया हो। योगश न आव देखा न ताव, उसे घर के बाहर निकल जाने का आदेश दे दिया। उस चेतावनी दे दी कि वह भविष्य मे इस घर मे कदम न रखे और यदि वह रखेगा तो उस अपमानित होना पडेगा। इतना ही नही, उसने मुझ पर ऐसे एसे आरोप लगाये कि मैं कह नही सकती। पर उन आरोपो का एक ही अथ था कि मैं एक बाजारू औरत हू। सच मैं मर्मान्तिक वेदना भोगती रही। मैंने दो रोज तक खाना नही खाया। आखिर योगश मेरी चापलूसी करने लगा। मुझ उसन जबरदस्ती खाना खिलाया। मुझसे क्षमा मागी। इस बीच मैंने मर जान की सोची, पर अपने बच्चो का देखकर मैं मर नही सकी। यह नारी न जाने किन किन बधनो से अटूट रूप से जुडी रहती है? यह मत समझना कि नारी म विद्रोह नही है। राजू ! नारी विद्रोह की पर्याय है, पर वह करुणामयी भी है। उसे अपना शोषण कराना आता है। वह अपने आपको दबाती रहती है। फिर योगश न यहा बदली करा ली ताकि आशीस मुझसे दुबारा न जुड सके। सोचो कितना दकियानूसी है यह? और तुम नही जानते कि स्वय न अपनी प्रेम-कहानी सुनायी थी। नारी की सहिष्णुता भी अपरिसीम होती है। या यह कहू कि पुरुष यह मानता आया है कि नारी मेरी दासी है। मेरी भोग्या है। मेरे पजो म दबोचा एक शिकार है। यह किसी-न किसी बिन्दु पर अपनी पराजय स्वीकार करता ही। योगश न विवाह के पूव की अपनी प्रेम-कहानी सुनायी। मैंने कई

बार उसकी प्रेमिका स उसे मिलान म मदद की। मैन सोचा कि यह बेचारा आनन्द से जीयगा, परन्तु वह इसके शक्की स्वभाव के कारण अलगाव कर लिया, फिर मरा हसना-बोलना भी इस सहन नही हुआ ! राजू ! तुम नही जानत कि मैन इन दस बरसो म कितनी पीडाए भोगी है ? यह मेरा पति 'पर-पीडक है। यह केवल मुझे रोटिया खिलाता है। रोटियो क बदले यह नारी महान् कष्ट भोगती है। अपने मूल अस्तित्व क विरुद्ध जीती रहती है।"

उसन एक बार अपन चेहर को अपनी साडी के पल्लू से पोछा। उसकी चाय ठडी हो गयी थी। मरा भी चाय पीना बन्द हो गया था। ओह ! जीवन की यह कितनी विडम्बना है कि हम जो जी रह है, वह मूलत नही जी रह ह। हम सब लोग कुछ और ही ह।

उसने अपना मौन तोडा, "कल की बात है। म और तुम दोनो रात को काफी दर तक बठे थे। योगेश सिनेमा गया था, हीरक के साथ। उसन मुझे एसा कहा था। दरअसल उसन मुझे धोखा दिया। वह तुम्ह और मुझे एकान्त मे पकडना चाहता था। वह यह जानना चाहता था कि तुम उसकी अनुपस्थिति म मर पास आत हो या नही ? जब हम अपनी-अपनी बाता के सुखो मे खोये हुए थे तो वह चोर की तरह आया था और जिन की तरह प्रकट हुआ था। हम चौंक गये थ। मैं अपन को अपराधिन महसूस करन लगी थी। मैं उसके स्वभाव और इस तरह की नीच प्रवत्तियो से परिचित थी। मैं समझ गयी कि हम दोनो के बीच अब तनाव पैदा होगा।'

'पर मैंने तो तत्काल एसा कोई भी अनुभव नही किया। उसन तो मेर प्रति काफी प्रगाढता जतायी थी।"

"प्रदशन तो उसने भी ऐसा ही किया था पर तुम्हारे जाते ही वह मुझ पर बरस पडा। उसन मुझे कल फिर एक गिरी हुई औरत कहा। तलाक की धमकी दी। उसन यह भी कहा कि तुम्हारा पाव राजू के पाव से सटा हुआ था। सारी रात हम दोनो क बीच भीषण सघष मे व्यतीत हुई। सार बच्चे आशकित और डरे-डरे-से विस्तरो मे घुसे रह। मुझे विश्वास है कि मर बच्चे अपने बाप के आरोप का अथ समझ गये हैं। सुबह स्कूल जान के पूव दोनो लडको क मुह फूले हुए थे और उनका अपने डैडी के प्रति कोमल

रखया था। केवल मेरी नन्ही बच्ची गुडिया उन्मास उदास थी। वह मुझ बार-बार चाय पीने का अनुरोध कर रही थी। जाने के पहले मैंने उससे पूछा कि क्या मैं राजू का घर आने के लिए मना कर दू? प्राश ने गुस्सीले स्वर म कहा कि यह तुम स्वय जानो। मुझसे पूछने की कोई जरूरत नही।'

मैंने स्वय इस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया, "प्रभा, मैं तुमसे भविष्य म नहीं मिलूगा। हालाकि हमने कभी भी अपवित्र रिश्ता म विश्वास नही किया था फिर भी तुम्हारे सुखद जीवन के लिए मैं यह त्याग करूगा।' त्याग शब्द का प्रयोग भी काफी खोखला था।

वह कुछ देर तक सिर पकडे हुए बैठी रही। अचानक वह दढ स्वर म बोली 'ऐसा नही हो सकता। तुम आओगे, जरूर आओगे। इस बार मैं उससे अलग हो जाऊगी। तलाक ले लूगी। अपना जीवन निर्वाह स्वय कर लूगी। अब कुछ भी बरदाश्त नही होता।"

मैं काप गया। मुझे लगा कि उसके विद्रोह के पीछे उसके अचेतन मन म साप की तरह कुडली मार बैठा हुआ मेरा प्यार है। मैं स्वय बदनाम हो जाऊगा। मेरी प्रतिष्ठा, मान मर्यादा और शराफत का खोल उतर जायगा। मुझे लोग अगुलो दिखा दिखाकर बतायेंगे कि यही है वह जिसने अपने दोस्त की पत्नी को उडा लिया, उसका घर तबाह कर दिया। मैं पसीने से लथपथ हो गया। मुझमे जडता आ गयी।

वह मुझे घूर रही थी। उसकी आखें भर आयी थी। मैंने नजर झुका कर कहा, पर य बच्चे, लाग ओह ! समाज ?"

वह पागल की तरह चीख पडी "आग लगाओ इन सबको।' एक क्षणिक सन्नाटा। फिर वह सुबक्त सुबक्त बाली— तुम ठीक कहते हो? मैं कुछ भी नहीं कर सकती। पिछले बरसो की तरह जीती रहूगी, जीवन की महायात्रा तय कर लूगी। बस इसी तरह खाल पहनकर हसते-हसते महापीडा लेकर मर जाऊगी। मैं योगेश से कहूगी कि वह अपना तबादला करा ले। मैं फिर नये नगर म चली जाऊगी। वहा से एक और नये नगर मे फिर एक और नये नगर यही सिलसिला

मैं उठ गया। वह सुबक रही थी। मेरी इच्छा उसे बाहों में भरकर सात्वना देन की हुई पर मैं ऐसा न कर सका। धीरे-धीरे उठकर चला आया —एक अत्यत ही शरीफ आदमी की तरह।

('अेक र पछ अेक' का अनुवाद)

मानखौ

वह खिडकी के बीच मे बैठ गया। सूय उग गया था। धूप उसके बदन को स्पश करती हुइ कमरे मे घुस गयी थी। उसे धूप अच्छी लगी। वह दूर-दूर तक देखता रहा। जुहू के समुद्र-तट पर लेटे हुए विदेशी अध-नग्न जोडे उसे सहसा याद आ गये।

कल वह जुहू के समुद्र-तट पर गया था। लहरो की अठखेलिया देखता रहा। देखते देखते सोचने लगा कि मनुष्य के सुख-दु ख इसी तरह अठखेलिया करते हुए अदश्य हो जाते हैं।

वह जयपुर से कुछ दिनो पूव बम्बई आया था। उसे अपनी जाति, धम, सम्प्रदाय के बारे मे कुछ भी पता नही था पर लीला मौसी विश्वास से कहती थी कि प्रवीण चोखी जाति का है। इसके लक्षण भी यही कहते हैं। वह उदास होकर कहती—बहुत वष पहले एक परदेशी आया था। उसके साथ उसकी पत्नी थी। इस बडे शहर म पैसे वाला बनने के सपने देखे थे। खूब मेहनत की। सपने सपने ही रह गये। विकट सघष ने उन दोनो को तोड डाला। फिर अचानक हैजे के प्रकोप म इस नन्ही-सी जान को छोडकर वे चल बसे। हालाकि यह बात उसने अपनी सहेली से सुनी थी पर प्रवीण को श्रेष्ठ कुल का साबित करने के लिए उसने स्वय को उसमे झूठ ही जोड लिया था।

लीला मौसी ने ही प्रवीण को पाला-पोसा था। मौसी दयालु व परोपकारी थी। दूसरो की आग मे हाथ डालने वाली। वह स्वय गीले बिस्तर पर सोयी और प्रवीण को सूखे पर सुलाया। प्रवीण भी लीला मौसी को साक्षात् दया की मूर्ति समझता था और उसे मा कहता था।

यदि लीला मौसी नही होती तो प्रवीण या तो किसी अनाथाश्रम मे होता या सडको पर आवारा कुत्ते की तरह जिन्दगी बसर करता। उससे भी बुरी स्थिति उसकी हो सकती थी पर मौसी ने उसे मनुष्य बना दिया। उसका रोम रोम मौसी का कृतज्ञ था।

प्रवीण को आज भी सबकुछ याद है। एक दफे खेल-खेल मे प्रवीण का एक लडके से झगडा हो गया था। लडाई मे लडडू तो नही मिलते। गालिया और उलाहने। किसी लडके ने बक दिया था, "तू तो बिना मा-बाप का है। अनाथ है।"

"मेरी मा का नाम लीला मौसी है।' प्रवीण ने छाती ठोककर कहा, ' उसका पति मेरा बाप था।

"झूठ ! वह तुम्हारी असली मा नहीं है। उसने तो तुझे केवल पाला-पोसा है। यह सब मेरी मा मेरे बापू को बता रही थी।"

प्रवीण का हृदय आहत हो गया। सूरत रोनी-रोनी हो गयी। वह जल्दी से मौसी के पास गया। सारी बातें पूछी। मौसी ने अत्यन्त धय से सारी बात सिलसिलवार बतायी कि तुम्हारे असली मा-बाप कौन हैं ? पर प्रवीण को विश्वास नही हुआ। जब वह नही माना तो मौसी ने कह दिया कि वे शरीफ लगते थे। अचानक चल बसे।

प्रवीण को मर्मान्तिक वेदना हुई। उसके स्वभाव मे परिवतन आया। मट्रिक पास करके वह मेहनत मजूरी व टयूशन करके अपनी उदरपूर्ति करता रहा साथ-ही साथ पढता भी रहा।

जब वह वकालत की पढाई कर रहा था तब मौसी बीमार पड गयी। दम फूलने लगा। मौसी की पीडा प्रवीण से सही नही जाती थी। वह मौसी की रात दिन सेवा करता। उसे कहता, "मैं वकालत पास करके एक अच्छी नौकरी कर लूगा तब मौसी मैं तुम्हें सेठानी की तरह सुख से रखूगा। तुम्हें फूलो की सेज पर सुलाऊगा। दूध से कुल्ले कराऊगा।'

मौसी मुस्कराकर कहती, "लाडी ! तू मेरी चिन्ता न कर, मैं स्वस्थ हो जाऊगी। तू मन लगाकर पढाई कर। यह वकालत की पढाई बडी कठिन होती है।"

आखिर परीक्षा समाप्त हुई। परिणाम निकलने से पहले मौसी का

स्वगवास हो गया। प्रवीण के हृदय को बडा आघात लगा। मौसी को लक्र उसने जो जो सपने देखे थे वे असमय ही टूट गये। उसे अपने चारों ओर रेतीला प्रान्तर नजर आने लगा। वह दुष्कल्पना करता था कि वह रेतीले टीलों के बीच भूखा प्यासा भटक रहा है।

उसका मन जयपुर से ऊबने लगा। उसके पीछे एक कारण और भी था कि वह अपने अतीत को यहीं छोडकर दूर जाना चाहता था। तब वह बम्बई आ गया।

बम्बई एक महानगर। वहा आदमी चीटियो की तरह जीता है। जानवर की तरह अधिकाश आदमी अपनी 'जूण' जीता है। वहा की व्यवस्था म सारे-के सारे आदमी पणिया साप बन हुए हैं। एक-दूसरे क सास को पीकर वापसी म विष छोडते हैं। आदमी दूसरे को क्या स्वय अपने को नही पहचानता है। विचित्र नगर।

प्रवीण एक ईसाई के घर पर 'पइगगेस्ट' बनकर रहने लगा।

पहली बार ही घर के मालिक रावट ने पूछा, 'तुम्हारे परिवार म कौन कौन हैं?"

"एक मैं और एक मरा ईश्वर।"

'ओह! तुम्हारी जाति क्या है।

'जिसके मा-बाप का पता नही है, उसकी जाति क्या हो सकती है, उसका धम क्या हो सकता है।'

वह उसके प्रति स्नेह व दया से भर गया। उसने अपनी लगडी युवा बेटी डाली से परिचय कराया। जो अत्यन्त ही खूबसूरत और आकर्षक थी। कहा 'प्रभु ईसामसीह पर भरोसा रखो, वह तुम्हे एक शानदार नौकरी दिलायेगा।'

प्रवीण को डाली पहली नजर मे ही अच्छी लगी। मधुर स्वभाव धीर और गम्भीर।

उसम एक विचित्र-सी उत्साह भर गया। वह नौकरी की तलाश म निकल जाता था। महानगर की ऊची-ऊची इमारतो म स्थित छोटे-बड दफ्तरो के किवाड खटखटाने लगा। सब जगह एक ही जवाब—'नो वकेन्सी नो वकेन्सी जगह खाली नहीं।

निरन्तर और अनवरत निराशा। उसका मन मरने लगा। विश्वास टूटने लगा। सपने बिखरने लगे। उसे नौकरी के सिलसिले में कुछ नये सत्यों का बोध हुआ कि इस देश में कुछ पाने के लिए केवल शिक्षित होना ही जरूरी नहीं है बल्कि उसके पीछे श्रेष्ठ कुल, जाति, धर्म और सम्प्रदाय की मोहर भी जरूरी है। अनेक लोगों ने तो उसकी पढाई की जगह जाति-धर्म के बारे में पूछा। आह ! यह आदमी कितना बौना हो गया है, जाति और धर्म के कितने छोटे छोटे टुकड़ों में बंट गया है।

आहिस्ता-आहिस्ता उसमें एक नये तरह का आक्रोश भर गया। उसे विचित्र-से प्रश्न घेरने लगे। बेकारी अभाव और टूटन

एक दिन नौकरी की तलाश के दौरान उसने ऊबकर एक कम्पनी के मालिक को चिल्लाकर कहा, "मेरा केवल पढा लिखा, ईमानदार आदमी होना कोई अपराध है, पाप है ?'

मालिक ने खलनायिकी अन्दाज में कहा, "जिस आदमी को अपनी स्वयं की जाति धर्म और घर परिवार का पता नहीं, उस पर विश्वास कैसे किया जा सकता है ? व्यापार में कितनी गुप्त बातें होती हैं, दो नम्बर के खाते होते हैं, गलत तरीके होते हैं। उसके लिए खानदान की पृष्ठभूमि तो चाहिए ही।'

उसकी आशाएं महानगर में खोने लगी।

उसे अपने आसपास एक अन्यायग्रस्त अंधकार दिखायी देने लगा। वह पागलों की तरह भटकने लगा। उसकी जेबों में बड़े-बड़े छेद हो गये थे।

वह दो दिनों से भूखा था। भूख और चिंताओं से वह बिखर गया था। करे तो क्या करे ?

उसकी दाढ़ी बढ़ गयी थी। राबर्ट ने सारी स्थिति को समझा ? उसने उसे बुलाकर कहा, "कैसे हो प्रवीण, काम धन्धा मिला ?

'नहीं अंकल।'

"तुम अमलकी हो।"

'हाँ अंकल । पता नहीं, क्यों आदमी जाति-धर्म, खानदान के बारे में पूछता है ! मेरी योग्यता को क्या नहीं देखता ?"

'बेटा ! आज के आदमी का हृदय तग होता जा रहा है। वह बन्द ही स्वार्थी होता जा रहा है। केवल अपने बारे म सोचता है।"

प्रवीण लम्बा साग लेकर बोला, "अकल ! सच बात तो यह है कि ईश्वर ने मेरे साथ बहुत बडा मजाक किया है। उसने मुझे जाति, धम और खानदान नही दिया। यहा ज्ञान से ज्यादा खानदान देखा जाता है, गुण से अधिक वह किस परिवार का है, यह जाना जाता है, योग्यता की जगह रक्त के बारे म पूछा जाता है। और मैं इन सबसे वचित व अपरिचित हू।"

रावट कुछ देर तक सोचता रहा। फिर वह सहसा याद करके बोला, 'तू डाली से मिल लेना। उसने तुम्हारे लिए एक नौकरी ढूढी है।'

प्रवीण ने उल्लासपूर्वक कहा, 'सच अकल ।"

'हा, प्रवीण।"

वह भागकर डॉली के पास गया। वह प्रेमपूर्वक उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोली, "प्रवीण ! इतना मन छोटा मत करो। मसीहा ! तुम्हारे सारे दुख दूर कर देगा। मैं तुम्हे गजटेड पोस्ट दिला सकती हू पर ।"

'पर क्या ?

प्रवीण ! तुम्हारी जाति धम का कोई पता नहीं है। मेरी बात मानकर तू ईसाइ बन जा ! तुझे धम मिल जायेगा साथ म एक अच्छी नौकरी भी।

प्रवीण को लगा कि वह सहसा गँमचक्कर म फस गया है। इस भूमि पर धम की जगह मगरमच्छ रह गये हैं जो हर मनुष्य को निगलकर उसे मनुष्य न रहने दे रहे है। उसने सयम म कहा, "मुझे यह शर्त मजूर नहीं।

डॉली धीरे से बोली ठडे दिल से सोचो आखिर आदमी की कोई जाति और धम तो होना ही चाहिए, यह उसकी पहचान है।

'मैं तुम्हारी बात से सहमत नहीं हू।' प्रवीण ने कहा, 'आदमी केवल आदमी बना रहे यही श्रेष्ठ है। डाली ! आदमी पर जब धम और जाति लाद दिये जाते हैं तो वह निर्मम हो जाता है बौना हो जाता है, मैंने यह सत्य जान लिया है कि धम और धन के ठेकेदार आदमी को इसी तरह

बाटकर उनके सौहाद को मिटाते जा रहे है। डॉली ! मैं सच कहता हू कि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हू। तुम्हार रोम रोम को चाहता हू। अक्ल का अहसानमद हू। आदर करता हू पर म यह ता सोच भी नही सकता कि मुझे तुम इतनी ओछी बात कहोगी।"

"उत्तेजित मत हाओ प्रवीण ! धय स साचो।'

"साच लिया, डॉली, सोच लिया। कम-स-कम मैं तुम्ह एसा नही समझता था। मैं तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का अहसानमन्द हू। किराया नही दिया। मुफ्त म रोटिया तोडी। आखिर आप भी तो कुछ मुझसे चाहत होग ? पर मैं सभी तरह से इतना दीन हू कि आपकी झोली मे कुछ नही डाल पाऊगा।"

तभी राबट ने प्रवेश किया।

उसने सारी बातें सुन ली थी। वह नाराजगी से बोला, "डाली ! मैंने तुम्ह एसा नही समझा था।"

डॉली का चेहरा सफेद पड गया। नयना मे अपराध-बोध की छायाए तैरन लगी। उसने सिर झुका लिया।

"अक्ल ! मै दो चार दिनो म यहा से चला जाऊगा। मैं बडा ही भाग्यहीन हू। मर जैसे व्यक्ति निरथक जन्म लेत हैं और निरथक मर जाते हैं।"

अक्ल राबट न उस स्नेह से अपने सीने स चिपकाकर कहा, 'बटे ! ऐसा मत सोच। मसीहा बहुत दयालु है। ईश्वर ही सबको पालता है। खुदा क घर मे देर है पर अधेर नही। डाली गलत है। उसम धय की विराटता नहीं लघुता है। धम इच्छा की वस्तु ह, अनिच्छा और विवशता स ग्रहण किया गया धम तो अधम होता है। वह हृदय का सत्य नहीं है। हृदय की स्वीकृति ही धम है वरना वह तो जबरदस्ती है ! डॉली ! तुम्ह प्रवीण से क्षमा मागनी चाहिए।"

डाली शम से पानी पानी हो गयी।

अक्ल ने फिर कहा, "आपसी प्रेम की यह शत सबसे तुच्छ है।'

प्रवीण ने कहा, "डॉली को मैं चाहता हू। हृदय से प्रेम करता हू। कभी भी योग्य बना तो उसे अपने कलेजे की कोर बनाऊगा। धम का बीच

म नहीं लाऊगा। प्रेम से सब छोटे होते है न अक्ल।"

"हा, बेटा! तुम्हारी नौकरी लग जायगी। किसी ने कहा है न—ट्राई एण्ड ट्राई एगेन बाय, यू विल सक्सीड एट लास्ट "

प्रवीण के चेहरे पर एक नई रोशनी व तेज था।

डॉली न समीप आकर कहा, "आई एम वैरी सॉरी मैं तुमसे माफी चाहती हू। मैं किसी और क बहकावे मे आ गयी थी।" उसने ऐसा किया जसे प्रभु से क्षमा माग रही हो।

हवा का झाका आया। तेज झोका। खिडकी सहसा खुल गयी। धूप का बडा टुकडा हठात् कूदकर घुसा और तीनो को अपने मे समेट लिया जस मानखौ (मानवता) धूप के रूप म आया हो।

('मानखौ' का अनवाद)

विनाश मे जन्म

यह किसी खास जगह और खास व्यक्ति की कहानी नही ह। आप सोच लीजिए कि एक ओर अधिकारो की माग के खातिर लडाकू मुद्रा म खडी हुई जुझारू भीड है। आक्रोश और क्रोध म तिलमिलाती हुई भीड। गूजते हुए आकाश मे बद नारे हैं। मुर्दाबाद, हाय हाय नाश हो यह सरकार निकम्मी है जोर-जुल्म की टक्कर मे हडताल हमारा नारा है।

दूसरी ओर एक और रग की भीड है। खाकी और हरी वर्दी की भीड। बन्दूको, सगीनो लाठिया व आसू गैसा से लस भीड। हिंस्र व आक्रामक भीड। हर पल आर्डर का इन्तजार करती हुई भीड। खूखार भीड। वाहनो से थरथराती भीड।

दो तरह की भीड है। दोना आमने-सामने हैं।

नारे आकाश को दबोचने की चेष्टा कर रह थे। पहली भीड आग बढ रही थी। सामने नारो की हत्या करने के लिए गोलिया बेचैनी स इन्तजार कर रही थी।

नारो के सिवाय उस जुलूस मे कुछ भी गतिविधि नहीं थी। अत्यन्त शान्त और सयत जुलूस ! वह जुलूस अधिकारी का एक ज्ञापन देना चाहता था। अपनी जायज मागो के लिए चेतावनीपूर्ण ज्ञापन।

नारे बन्दूको के नजदीक आए कि एक नामालूम स्थिति उत्पन्न हो गई और बेवजह ही एक आर्डर गूजा। आवाज के साथ आसू गैस के गोले फटने लग। निहत्थे लोग तितर बितर होकर आखें मलने लगे। जुलूस और आग बढा तो बर्बरतापूर्ण लाठिया बरसने लगी।

शांत जुलूस इस गलत आदेश से उत्तेजित सा हो गया। उन्होंने दो चार सिपाहियों पर जवाबी कार्यवाही की और पत्थर बरसा दिए—आखिर वे भी महंगाई के बोझ से दबे जले भुने और पीड़ित इंसान थे।

"फायर !" यह शब्द नारों के बीच घुमावदार होकर फैला। जैसे दूसरी भीड़ इसके लिए कोई हल्का अवसर मानो ढूंढ रही थी।

गोलियां, लाठियां और अमानुषिक अत्याचार सांपों की तरह सरसराते हुए भीड़ को घेरने लगे।

जुलूस टूट गया। भीड़ आदमी के अस्तित्व में बदल गई। वह भागने लगी। सड़कों पर, अट्टालिकाओं में गलियों, कूचों, खेतों-खलिहानों, मजदूर क्वार्टरों में भागमभाग एक भीड़ को रौंदने के लिए दूसरी भीड़ का पीछा चारों ओर त्राहि त्राहि चीत्कारें, रोदन चीखें!

एक युद्धदृश्य!

खट्-खट् खट्!

'दरवाजा खोलो दरवाजा खोलो।' एक घायल मजदूर ने एक क्वार्टर का दरवाजा खटखटाया। वह भयभीत था। उसके कपड़े फटे हुए थे। कहीं कहीं खून के धब्बे चमक रहे थे। उसके दाएं हाथ की उंगलियां कटी हुई थीं।

उसके पीछे दो दरिन्दे किस्म के संगीनधारी सिपाही लगे हुए थे।

वह आतंस्वर में चिल्लाया "दरवाजा खोलो दरवाजा खोलो वे आ रहे हैं। मुझे मार डालेंगे। जल्दी करो।

भड़ाक की आवाज के साथ दरवाजा खुला। वह चीखना चाहता था पर आतंक से उसकी आवाज उसके गले में ही फंस गई।

दरवाजे में से दो सिपाही अपनी पैंटों के बटन बन्द करते हुए बाहर निकल रहे थे।

उन्हें देखते ही दहशत से घिर गया। 'हे राम!' कहकर वह वापस पलटकर भागा।

एक सिपाही ने तृप्त होने के बाद शान्ति से कहा "इन भूखों मरने वालों के घर में इतनी सुन्दर औरतें कहां से आ जाती हैं? क्या जिस्म था!

"लेकिन तुम आदमी नही गीछ हो। दूसरे सिपाही ने कामुकता म मुस्कराकर कहा, 'इस तरह कभी तुम फस सकत हो। कानून तुम्हे सजा दे सकता है।'

वह लापरवाही से बोला, "अपना-अपना शौक है। रही कानून की बात! अरे कानून अधा होता है बहरा होता है वह केवल सबूत चाहता है और सबूत सिफारिशो व स्वार्थों मे मिट जाते है।"

'सालो कुत्तो कमीनो! भीतर वाली युवती बाज की तरह फौस गालिया निकालती हुई आई। उसके हाथ म लोहे की कडाही थी। उसने उसे चिथडे से पकड रखा था। वह अधनगी थी। उसके पाव के आग पीछे खून के बदशक्ल धब्बे थे।

सिपाही उस ओर घूमे। युवती ने कडाही उन पर उछाल दी। कडाही म तेल था। उबलता हुआ तेल। थोडा एक सिपाही की आखो पर पडा और थोडा दूसरे की गदन पर। दोनो 'मर गए—मर गए' चिल्लाते हुए भाग। भागते हुए वे भी आदोलनकारियो की तरह भयभीत और आतकित लग रह थे।

युवती अब भी गालिया निकाल रही थी। फिर उसने भडाक स दर वाजा बन्द कर लिया।

चौथा क्वाटर!

उसके दरवाजे मे से एक मजदूर अपनी बीवी का हाथ पकडकर बोला, 'भागो जल्दी स भागो, वे हत्यार आ रह ह!'

वह एक गेहुए रग की गभवती औरत थी। उसन देखा—वे सिपाही उस इलाके को इस तरह तबाह कर रह हैं जसे पाकिस्तान के सैनिको न बागला देश का किया था। अजीब होत है य सैनिक और सिपाही भी! न जाने कौन-सा भूत होता है इनमे? जब भी इन्हे दमन करने का हुक्म मिलता है तब ये अपने सभी सम्बधो, परिवेश व अस्तित्वो स कटकर केवल नशसतापूवक हुक्म की तामील करन वाल हो जाते है। हृदयहीन गुलाम! यन्त्र मानव!

गभवती औरत अपने पति के साथ भागी। धाए! एक गोली आई। उसका पति पत्थर की तरह लुढक गया।

'नहीं-नहीं, इसे मत मारो भगवान के लिए रहम करो।" युवती चीखी।

वह आहत आदमी अपने कलेजे को पकड़कर बुझे हुए स्वर में बोला, 'तुम भाग जाओ। देर मत करो। ये पिशाच मुझे जरूर मारेंगे पर तुम्हें हर हालत में बचाना है और मेरे बच्चे को जन्म देना है। मैं मर जाऊंगा तो यह अत्याचारों के खिलाफ लड़ेगा। जाओ भागो तुम्हें मेरी कसम!"

औरत भाग गई।

जो सिपाही उसका पीछा कर रहे थे, वे उसके पास आए। घायल मजदूर ने बदले की भावना से उन तीनों को देखा। उनकी आंखों में हिंसता के साथ-साथ अजीब-सा औत्सुक्य था। शायद वे आदमी के मरने की प्रक्रिया को देखकर किसी आनन्द की अनुभूति करना चाहते हों। तभी तो उन तीनों ने उसका घेराव कर लिया।

वह घायल आदमी तड़पने लगा। उसकी आंखों में मृत्यु का संत्रास, अपने जीवन की लाचारी, मौजूदा असहायता चमक उठी।

"साला मर रहा है।"

'एक संगीन और चुभोओ।

"खच्च् खच्च्।'

"आह!'

"इस मादर की लुगाई कहां गई?

"वो भाग रही है। दूसरे ने घनी झाड़ियों की ओर संकेत किया।

'पीछा करो।' शून्यता में संवाद गूंज रहे थे।

वे तीन से पांच और पांच से सात हो गए। वे एक घर के आगे से गुजरे। एक घायल मजदूर घर की नाली में से बहते हुए पानी में अपनी प्यास बुझा रहा था। उसका चेहरा रक्तरंजित था। उसका आधा शरीर नंगा था। वह बहुत प्यासा था। इसलिए उसने नाली के पानी के पहले अपने खून को चखा था। वह आदमखोर बन गया था। उसे अपने से घृणा हुई थी। पर क्या करे वह? खून उसके होंठों पर आ गया था और वह प्यासा था।

"देखो बहन का जिंदा है।"

सातों उसकी पीठ पर अपने नालदार जूतों की चोट मारते हुए चले गये। वह एक इंसान 'आह! आह!' की करुण चीत्कार के साथ मर गया।

उसकी औरत भागी जा रही थी। बदहवास और बेहताशा! विराम-हीन और बिना पीछे देखे! जंगलों! सड़कों! गलियारों! चौराहों! अपने बच्चे को जन्म देने के लिए वह भाग रही थी। अनवरत निरंतर। उसे अपने पति की आज्ञा को पूरा करना था।

बीहड़ खेत!

चारों ओर खड़खड़ाहट। लोहे के हेलमेट। पांवों की चरमराहट। वह घनेपन के पीछे छुप गई। उसने देखा, चंद घायल आंदोलनकारियों को एक वाहन पर उतारा जा रहा है। वे असहाय हैं। अपंग हैं। आहत हैं। उन्हें पंक्तिबद्ध सुलाते हैं।

एक आक्रोश से भरा आंदोलनकारी जोर से चिल्लाया, "आइखमन फिर जन्म गया है। हिटलर का मानव संहार अभी जिंदा है। मारो मारो! रौंद डालो इंसानों को पिशाचो!"

सच उन हत्यारों ने नाजियों की तरह बड़ी निर्ममता से ट्रैक्टर से उन्हें रौंद डाला।

हवा में गोलियों की धाएं धाएं गूंज रही थी।

वह गर्भवती औरत आंखें मूंदे खड़ी रही। उसने अपने दोनों हाथों से झाड़ झखाड़ों को मजबूती से पकड़ रखा था। वह मन-ही मन शिव शिव कर रही थी।

लेकिन उसे मरना नहीं था। उसे इन गोलियों के शिकंजे में भी नहीं आना था।

उसे जन्म देना था, एक नए इंसान को—मरती हुई जिंदगी में से एक जन्मती हुई जिंदगी को, ताकि संघर्ष जारी रहे।

वह फिर भागी।

'कौन भागा? पकड़ो खोजो!" आवाज आई। जूतों की चरमरा-

हट वढी।

वह भागी जा रही थी। उसे अब दद होने लगा था। उसन अपने दाना हाथो से अपने पेट को पकड लिया था। कोई चिल्लाया, "ठहर जाओ वर्ना गोली चलाता हू।"

औरत नही रुकी। वह एक घाटी मे उतर गई। तभी दो आदमिया न उसे छुप जाने को कहा। वे दोनो आन्दोलनकारी थ।

वे झाडिया में भूखे सिहो की तरह घात लगाने की मुद्रा मे खड़े हो गए।

एक ने अपनी उगलियो को बन्द किया। उन्ह पुन खोलता हुआ बोला 'इतिहास अपनी पुनरावृत्ति कर रहा है।'

'जलियावाला वाग फिर अपनी कहानी दोहरा रहा है।"

'डायर ? डायर का प्रेत हमारे सार सरकारी तन्त्र म आ रहा है। दखा नही, हर सिपाही व अफसर जनरल डायर हो गया है। आदमियो का इस तरह गोलियो से उडवा रह है जसे वे आदमी नही, खिलौने है।

' हिंसा का जवाब अहिंसा से देन का समय चला गया है।"

वह तो निर्वीयता का प्रतीक है।

"फिर ?'

'हमे इन्ह सबक सिखाना चाहिए।'

सवाद ही सवाद।

पत्ता की चरमराहट और खडखडाहट नजदीक आती गई।

वह सिपाही सगीन पकडे हुए था। बडबडाया, ' कहा है साली ? सुदर है ! चबा जाऊगा !"

वह थोर आग बढा।

वे दाना मजदूर लपके और सिपाही की टागें पकड उसे गिरा दिया। सिपाही इस अचानक हमले से हक्का बक्का हो गया।

सिपाही की सगीन गिर गई। वे दोनो अब उस पर हमले करते जा रह थ। एक उसकी पीठ पर बठ गया।

दूसरा चील की तरह झपटा। उसने संगीन उठा ली। वह सिपाही पर टूट पड़ा। वह उसे कोंचने लगा। सिपाही आन्दोलनकारी की तरह चीखा, "नही-नही, मुझे मत मारो मुझे मत मारो भगवान के लिए मत मारो।"

पर उन दोनो ने बहरा बनकर उसे मार दिया।

अब वे उस औरत की तरफ लपके।

एक ने धीरे से कहा, "बहिन! तुम कहा हो? बोलो, हम तुम्हे इस घाटी मे से सुरक्षित स्थान तक पहुचा देंगे।'

दूसरा बोला, 'मा! हमसे डरने की कोई बात नही है। हम तो तुम्हारे भाई ही हैं।"

वे दोनो आगे बढ़े।

तभी उस औरत की हाफती हुई आवाज आई "वही ठहर जाओ। मैं प्रसव वेदना से पीडित हू। लग रहा है—मैं मा बनने वाली हू।"

"तुम बच्चे को जन्म दे रही हो?" एक ने उत्साह से पूछा।

'हा भाई पर तुम रुक जाओ। आह! हे भगवान हाय मैं मर रही हू !"

एक बोला, 'हिम्मत न हारो। नए मनुज को जन्मने दो ।"

"हा, हा, जरूर पैदा करूगी मेरे स्वामी की यह आखिरी इच्छा है।"

"ईश्वर को याद करो।" दोनो ने एक साथ कहा।

'ओह मा मर रही हू?" फिर एक लम्बी तड़फड़ाहट और एक प्रशात मौन।

वे दोनो सहमत-सकुचाते और कुछ कुछ डरते हुए उस औरत के पास गए। उस औरत के पास नया मनुज सोया हुआ था। जगह जगह खून के धब्बे थे। वह औरत एक अलौकिक प्रसन्नता मे मुस्करा रही थी। उसकी आकृति पर अपरिमित सन्तोष था।

"आओ, हम चलें।" एक ने कहा।

"कहा?" औरत ने पूछा।

"एक नई राह से सुरक्षित स्थान पर। हम इस बच्चे को जरूर पालेंगे। इसकी सुरक्षा करेंगे।"

और व औरत को सहारा देकर चल पडे। धीरे बहुत धीरे।

गोलिया की आवाज अब भी आकाश म गूज रही थी।

('बात अेक जुल्म री' का अनुवाद)

आखिरी पुतली

राजा सिंहासन की ओर बढ़ा कि कोई खिलखिलाकर हस पडा। राजा, समस्त मत्रीगण और अन्य सभासद चौंक पड़े। व जरा भयभीत दृष्टि स इधर उधर देखने लगे। यह हसी बिलकुल विद्रूप भरी थी। राजा को असह्य लगी। उसने प्रधानमन्त्री की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखा। प्रधानमत्री ने मत्रीगणो की और मत्रीगणो ने सभासदो की ओर। देखन का अभिप्राय स्पष्ट था कि यह गुस्ताख कौन है जो दरबार की मर्यादा को नही समझता? मगर राजा ने देखा कि सभी ने हसने से इन्कार कर दिया। वे भेडो की तरह क्रमश नकारात्मक ढग से सिर हिलाने लग।

वे फिर दो कदम चले ही थे कि वही व्यग भरी खिलखिलाहट! इस बार सबकी आखो म प्रश्न तरक्कर सकेतो मे बदल गये। वे सकता स पूछने लगे कि यह बेहूदा दरबारी कौन है?

राजा का सयम जाता रहा। उसन ऊपर से शालीनता का प्रदशन करते हुए कहा, "यह तो मेरा अपमान है। एसी बेहूदी हरकत पर मैं हसने वाले की जुबान खिचवा सकता हू। माना कि मैंने इस सिंहासन पर अनुचित तरीके से कब्जा किया है। हम लोगो की छीना झपटी के कारण पवित्र सिंहासन की 31 पुतलिया खण्डित हो गयी हैं तथा इस बेचारे महान सिंहासन के अस्थिपजर ढीले हो गये हैं मगर मरी इस असवधानिक हरकत से आप लोगो के भी तो छोटे सिंहासन बच गय हैं। वरना आप लाग सरराह चलते नजर आते किन्तु कोई मेरा चमचा इस बहूदगी से हॅसे, मैं बर्दाश्त नही कर सकता।"

प्रधानमन्त्री ने अगद की तरह पाव पटककर कहा, 'बेहूदा सामने क्यो

नही आता ? यह सही है कि हम मक्कारी, अनतिकता व आदर्शहीनता के बल पर इस सिंहासन पर बठे हैं मगर है तो हमारी मिलीभगत ही। फिर एक-दूसरे पर विद्रूप भरी हसी क्या ?"

"जरूर हमारे साथ कोई दुष्ट प्रवत्ति का व्यक्ति है।"

'यह हरक्त दलबदलू ही कर सकता है।" प्रधानमत्री न सोचकर कहा।

दलबदलू बीच म ही बोला, "मैं भगवान की सौगध खाकर कहता हू कि मैंने यह हरक्त नही की।"

प्रधानमन्त्री फस्स से हस पडा, "तुम और भगवान की सौगध ? पता नही, तुमने सौगध को हलुवे की तरह कितनी बार खाया है!'

नये राजा ने सबको निगाह म भरकर कहा, "दखो, मैंन कितनी जोड तोड के बाद इस सत्ता को पाया है।

कोइ सभासद झट से बोला, "आपने इस बार सत्ता को ग्रहण करके उसे द्रौपदी बना दिया है।"

नया राजा चिढ गया, "मैं सत्ता को सदा स ही द्रौपदी समझता आया हू। मैं इसका पाचवा स्वामी हू आप मत्रीगण एव सभासद भी तो इस का चीर हरने वाले है परन्तु बेहूदगी से हसना अनुशासनहीनता है। मैं गुप्तचर विभाग को आदेश दूगा कि यह पता लगाये वह बेहूदा कौन है फिर उस दरबार स अनुशासनहीनता के आरोप म निकलवा दूगा या हत्या करवा दूगा।"

वे फिर सिंहासन की ओर बढने लगे कि वही खिलखिलाहट। इस बार खिलखिलाहट निरतर चली तो सबका ध्यान उस ओर गया। देखा तो य लोग हतप्रभ रह गये। सिंहासन की आखिरी पुतली खिलखिलाकर हस रही थी। सब उसकी ओर चुम्बक की तरह खिचे चले गये।

सभी न लगभग एक साथ सोचा कि यह तो जादू हो गया। निर्जीव पुतली हसने लगी।

राजा न डाट भरे स्वर मे कहा "तुम क्यो हस रही हो ? क्या सचमुच हस रही हो ?

पुतली ने आँखें मटकाकर कहा, 'मैं तो आप पर हस रही हू।"

"क्यो ? क्या हम स्वाग हैं ?"

पुतली ने अपने निचले होठ पर अगुली रखकर कहा "मेरे नये स्वामी ! मैं इस सिंहासन की आखिरी पुतली हू । मुझसे पहल दूसरी 31 पुतलियो ने धम निभाया और उन्ह बेमौत मरना पडा, क्योकि उन्होने अपन अपने स्वामियो को उनके स्वार्थी, अविश्वामी, अनैतिक मत्रीगणा एव सभासदो से सचेत किया था और आपन उन्ह बरहमी स तोड डाला।"

"मगर ।'

'मेरे स्वामी, मैं पुतली हू । राजा विक्रमादित्य के समय से मैं अपना फज निभाती आयी हू कि इस सिंहासन पर बठने वाले को मै इसकी गरिमा बताऊ । हाय ! इस सिंहासन की गरिमा तो जाती रही । अब तो इसकी 31 पुतलिया हो टूट गयी है । फिर भी मैं अपनी परम्परानुसार आपको एक कहानी जरूर सुनाऊगी । बाद में आप मुझे तोड सकते हैं । सुनो ! एक जगल म चद सियार रहते थे। उनमे बडा ही सगठन था। उनस जगल का राजा भी खौफ खाता था। सघे शक्ति कलौ युगे इस युग म जिसके पास मगठन है, उसके पास सब कुछ है। सियार जब निकलते थे तो एक साथ दूसरे जानवर उस भीड स घबराते थे। दूसरो को जलन थी कि ये सियार होकर जगल पर शासन करते हैं ?

"एक दिन एक गदरायी लोमडी को कौवा मिला। कौवे ने कहा, 'लामडी बहन, तुम्हार होते हुए ये सियार जगल के राजा बने हुए हैं ? इस पथ्वी पर सबस ज्यादा चालाक व अक्लमद तो तुम हो।'

"लामडी ने कहा, 'मगर मैं क्या कर सकती हू कौवे भया ?'

" 'अपनी अक्ल का करिश्मा दिखाओ।'

"लोमडी ने सोचकर कहा, 'अच्छा बताऊगी।'

"उसने काफी सोचकर एक पडयन्त्र किया। वह सदा पाच-सात अन्य जानवरो को लेकर सियारो के पास पहुचती और कहती, 'ये आपके गुलाम बनना चाहते हैं। इस तरह उसन अनक नस्लो के जानवरो को सियारो के साथ मिला दिया और उन नय जानवरो न हर सियार मे गलतफहमी भर दी कि राजा बनने लायक तो आप हैं। गलतफहमी ने झगडे का रूप धारण किया। एकता टूटी तो लोमडी शेर को बुला लायी और शेर ने सियारो

नहीं आता ? यह सही है कि हम मक्कारी, अनतिकता व आदर्शहीनता क बल पर इस सिंहासन पर बठे हैं मगर है तो हमारी मिलीभगत ही। फिर एक-दूसरे पर विद्रूप भरी हसी क्या ?"

"जरूर हमारे साथ कोई दुष्ट प्रवत्ति का व्यक्ति है।"

"यह हरकत दलबदलू ही कर सकता है।' प्रधानमत्री न सोचकर कहा।

दलबदलू बीच मे ही बोला, "मैं भगवान की सौगध खाकर कहता हू कि मैंन यह हरकत नही की।"

प्रधानमन्त्री फस्स स हस पडा, "तुम और भगवान की सौगध ? पता नही, तुमने सौगध को हलुवे की तरह कितनी बार खाया है!"

नये राजा ने सबको निगाह म भरकर कहा, "दखो मैंन कितनी जोड तोड के बाद इस सत्ता को पाया है।'

कोइ सभासद झट से बोला, "आपन इस बार सत्ता को ग्रहण करक उसे द्रौपदी बना दिया है।"

नया राजा चिढ गया, "मैं सत्ता को सदा से ही द्रौपदी समझता आया हूं। मैं इसका पाचवा स्वामी हू आप मत्रीगण एव सभासद भी तो इस का चीर हरने वाले है परन्तु बेहूदगी से हसना अनुशासनहीनता है। मैं गुप्तचर विभाग को आदेश दूगा कि यह पता लगाये वह बेहूदा कौन है, फिर उस दरबार से अनुशासनहीनता के आरोप मे निकलवा दूगा या हत्या करवा दूगा।

व फिर सिंहासन की ओर बढन लग कि वही खिलखिलाहट! इस बार खिलखिलाहट निरतर चली तो सबका ध्यान उस ओर गया। देखा ता य लोग हतप्रभ रह गये। सिंहासन की आखिरी पुतली खिलखिलाकर हस रही थी। सब उसकी ओर चुम्बक की तरह खिचे चल गय।

सभी न लगभग एक साथ सोचा कि यह तो जादू हो गया! निर्जीव पुतली हसन लगी!

राजा न डाट भरे स्वर म कहा "तुम क्यो हस रही हो ? क्या सचमुच हस रही हो ?'

पुतली ने आंखें मटकाकर कहा, 'मैं तो आप पर हस रही हू।'

"क्यो ? क्या हम स्वाग हैं ?"

पुतली न अपने निचले होठ पर अगुली रखकर कहा "मरे नये स्वामी ! मैं इस सिंहासन की आखिरी पुतली हू । मुझस पहले दूसरी 31 पुतलिया ने धम निभाया और उन्ह बेमौत मरना पडा, क्योकि उन्होने अपन अपने स्वामियो को उनके स्वार्थी, अविश्वासी, अनैतिक मत्रीगणा एव सभासदो स सचेत किया था और आपन उन्ह बरहमी स तोड डाला ।"

"मगर ।"

'मेरे स्वामी, मैं पुतली हू । राजा विक्रमादित्य के समय से मैं अपना फज निभाती आयी हू कि इस सिंहासन पर बठने वाल को मै इसकी गरिमा बताऊ । हाय ! इस सिंहासन की गरिमा तो जाती रही । अब ता इसकी 31 पुतलिया ही टूट गयी है । फिर भी मैं अपनी परम्परानुसार आपको एक कहानी जरूर सुनाऊगी । बाद म आप मुझे ताड सकते है । सुनो ! एक जगल मे चद सियार रहते थे । उनम बडा ही सगठन था । उनस जगल का राजा भी खौफ खाता था । सघे शक्ति कलौ युगे इस युग म जिसके पास सगठन है, उसके पास सब कुछ है । सियार जब निकलते थे तो एक साथ दूसरे जानवर उस भीड से घबराते थे । दूसरो का जलन थी कि ये सियार होकर जगल पर शासन करते हैं ?

"एक दिन एक गदरायी लोमडी को कौवा मिला । कौवे ने कहा, 'लोमडी बहन, तुम्हारे होते हुए ये सियार जगल के राजा बने हुए हैं ? इस पथ्वी पर सबसे ज्यादा चालाक व अक्लमद तो तुम हो ।'

लामडी ने कहा, 'मगर मैं क्या कर सकती हू कौवे भैया ?'

" 'अपनी अक्ल का करिश्मा दिखाओ ।'

"लोमडी ने सोचकर कहा, 'अच्छा बताऊगी ।'

"उसन काफी सोचकर एक षडयन्त्र किया । वह सदा पाच-सात अन्य जानवरो को लेकर सियारो के पास पहुचती और कहती, 'य आपके गुलाम बनना चाहते है ।' इस तरह उसन अनेक नस्लो के जानवरों को सियारों के साथ मिला दिया और उन नये जानवरो न हर सियार मे गलतफहमी भर दी कि राजा बनने लायक तो आप है । गलतफहमी ने झगडे का रूप धारण किया । एकता टूटी तो लोमडी शेर को बुला लायी और शेर ने सियारो

को गुलाम बना लिया। जब उसने लोमडी को भी पजा दिखाना शुरू किया तो लोमडी घबरायी। शेर ने तो यहा तक अत्याचार करने शुरू कर दिये कि जब उसे भूख लगती तो वह किसी जानवर को मारकर खा जाता।

"जानवरो मे हाहाकार मचा। वे लोग लोमडी के पास गये और उन्होंने यह आरोप लगाया कि उसके कारण शेर जगल का राजा बना और वह अब मनमाने अत्याचार कर रहा है।

'लोमडी उदास-सी हो गयी। करे तो क्या? फिर भी उसने आश्वासन दिया कि वह कुछ करेगी, क्योंकि कल शेर मुझे भी खा सकता है।

'एक दिन लोमडी आधी रात को इधर-उधर भागती हुई दिखायी पडी। कभी वह सियारो के पास जाती, कभी भालुओ के पास, कभी हाथियो के पास और कभी भेडियो के पास।

'सुबह ही शेर ने देखा कि एक बहुत बडा शेर जगल के जानवरो के साथ आ रहा है। उसके आगे-आगे लोमडी चल रही है।

'लोमडी भागकर आयी और उसने कहा, 'शेर राजा भागो तुम्हारे जानवरो ने विद्रोह कर दिया है अब ये दूसरे बडे शेर राजा को साथ लिये हुए हैं। ये सब मिलकर तुम्हारी हत्या कर देंगे।'

'बेचारा शेर भीड देखकर भाग गया।

'नया शेर तो साड था जो शेर की खाल ओढे हुए था। इसके बाद जगल मे अव्यवस्था फैल गयी। हर जानवर कुछ जानवरो को अपने पक्ष मे करके शेर की खाल ओढ लेता था और राजा बन जाता था। यह तमाशा खूब चला और जगल मे अराजकता फैल गयी। जगल के सारे जानवर दलबदलू, रगबदलू लालची और अवसरवादी हो गये। नित्य ही राजा बदल जाता था।'

'तो तुम समझती हो कि मैं ?' राजा ने व्यग्रता से कहा।

पुतली खिलखिलाकर हस पडी। उसने उगली से कहा देख राजा अपने पीछे ।

राजा ने पीछे देखा तो हैरान हो गया। उसके सारे मत्रीगण व सभासद भाग गये थे। केवल प्रधानमत्री खडा-खडा मुस्करा रहा था।

"वे लोग कहा गये?' राजा गुर्राया।

"वे कम्बख्त भाग गये। कहते थे कि हम राजा अभी से आखें दिखाने लगे, बाद मे क्या गत करेंगे?"

राजा झपटकर सिंहासन पर बैठने लगा तो पुतली ने रोक दिया, 'ऐसे मत बैठो! इस सिंहासन पर बिना बहुमत के कोई नहीं बैठ सकता। मैं उसे बैठने भी नहीं दूगी। मैं इसकी रक्षक हू मैं ही नये राजा की चूड़िया पहनती हू। अभी मैंने तुम्हारी चूड़िया पहनी ही थी पर अफसोस मुझे फिर चूड़िया बदलनी पड़ेंगी।

उसी समय पुराना राजा नारो की वर्षा करता आ गया। उसके साथ वे ही मंत्रीगण व सभासद थे जो थोड़ी देर पहले पिछले राजा के साथ थे।

पुतली ने पीड़ा से सिर पीटते हुए कहा, "हाय! मुझे आज फिर वे चूड़िया तोड़नी पड़ेंगी जिन्हे मैंने आज ही पहना है। एक दिन मे दो बार हे भगवान! यह कौन-से जन्म का पाप है?

('छेकड़ली पुतली' का अनुवाद)

नया जन्म

उस दिन दफ्तर म प्रवेश करते ही टाइपिस्ट मिस कस्तूरा न मुस्कराते हुए बताया मन्‍ एक न्यूज !"

'क्या ? उसन सिगरेट को एशट्रे म खड-खडे बुझाते हुए कहा। उसकी दृष्टि कस्तूरा की दृष्टि से एकदम चिपक-सी गई थी।

' एक खास न्यूज है ।" उसन भी उसकी जिज्ञासा को जाग्रत करते हुए कहा, उपमा ! मिस उपमा कल अचानक मिसेज हो गइ।'

' वाट ? वह आश्चय स डूब-सा गया।

' मैं सच कह रही हू । कल उसन चुपचाप कोट मरिज कर ली ? '

यह कस हो सकता है ? कस्तूरा, तुमन जरूर कोइ अफवाह सुनी होगी ? '

"नही सर, मुझे शेफाली ने कहा ह । कस्तूरा न टाइपराइटर पर अपना बाया हाथ फेरा । फिर अथ भरी मुसकान होठो पर लाकर बोली, 'आप जानते हो कि शेफाली का भाई यहा एडवोकेट है । उसने शेफाली को यह बताया है ।

वह बिलकुल उत्तजित हो गया । उसन गुस्से के मारे अपन होठ भीच लिय। अपने केबिन म घुमते हुए उसन एक गन्दी गाली निकाली। फिर कुर्सी पर बैठकर टेलीफोन करने लगा । रिसीवर को गल के नीचे दबाया। माउथ-पीस उसक होठो स चिपका हुआ था। डायल करके उसने अपन को शात किया । कुछ पलो क बाद उसन पूछा 'हैलो, उपमा मैं राजन बोल रहा हू । उपमा, मैं क्या सुन रहा हू ? क्या यह सच है कि तुमन शादी कर ली ?

जी ।

"जी ?" उसकी आखे विस्फारित हो गई। कुछ पलो के लिए उस पर विमूढता छाई रही। फिर उसकी आकृति का मुलायम रग उडने लगा। उस पर कठोरता छाती गई। वह विपावत स्वर म बोला, "यू फ्राड ? तुमने मुझे धोखा दिया। तुमने मुझसे वादा किया था कि मैं आपकी तीना फिल्म पूरी होन तक शादी नही करूगी। शादी करूगी भी तो आपसे पूछकर।" उसका चेहरा लाल हो गया था।

वह फिर फटी हुई आवाज मे बोला, "तुम बोलती क्या नही ? जानती हो, जैसे ही दशको और फिल्म वाला को मालूम होगा वसे ही तुम्हारी सारी इमेज मिट जाएगी। सारा चाम सारा आकपण समाप्त हा जाएगा क्यो कि जिस हीरोइन ने शादी की, वह फिल्म इडस्ट्री से आऊट हो गई।"

"अब तो सब कुछ हो चुका है और मैं इसे पसद भी करती हू।'

तभी विनय न प्रवेश किया। विनय लेखक था। उसकी कई कहानिया पर फिल्मे बन चुकी थी। कुछ हिट भी हुई थी। उसक कुछ प्रयागवादी चित्रो ने फिल्म जगत म नई परम्पराओ को ज`म भी दिया था उपमा उसकी बडी इज्जत करती थी।

विनय न सिगरट सुलगाकर कहा, 'क्या बात है राजन साहब, फान पर किससे गरमा गरम बहस हो रही है। काफी उत्तजित लग रह है।"

विनय एक सोफे की कुर्सी पर बैठ गया। राजन ने एक पल विनय की आर देखकर कहा "उपमा न कल कोट मैरिज कर ली है।

"क्या ?" विनय को जैसे विश्वास ही नही हुआ।

"उसन शादी कर ली। मिस्टर अशोक शर्मा से, वह इजीनियर है।" राजन ा उत्तेजित स्वर मे पुन कहा।

"यह तो अच्छी बात है।' विनय ने विनयपूवक कहा।

'खाक अच्छी बात है।' राजन लगभग चीखत हुए वाला, "मरा ता भट्टा बैठ गया। कल जस ही लोगा को यह मालूम होगा वैसे ही उनमे तरह-तरह की शकाए तैरन लगेंगी। कम से-कम दो-तीन साल तक तो शादी के लिए और रुक जाती।"

"अरे भाई, हम अपना स्वाथ देखत हैं और वह अपना ! उसका भी अपना भविष्य है। राजन साहब ! जवानी बीत जान पर कौन किसको

पूछता है। यहा तक कि जो हीरोइन फ्लॉप हो जाती है उसे भी कोई रोटा तो क्या घास भी नही डालता।'

'पर अभी विनय ! अच्छा चलो, एक बार उपमा से मिल लें। आप मेरे साथ चलिए न विनय बाबू।'

'चलिए।'

थोडी देर मे वो उपमा के घर पहुचे। उपमा ने माग मे सिंदूर भर रखा था। हाथो मे कगन चमक रहे थे।

उसने उन दोनो का स्वागत किया। बिठाया। नौकरानी को चाय बनाने को कहा।

राजन ने छूटते ही कहा, "तुमने मुझसे शादी न करने का वायदा किया था। उपमा, फिल्म कोई कबाडी की दूकान नही है। यह करोडो का धधा है। इसमे एक-एक चीज को लोग आकते है।"

"देखिए, अब शादी हो गयी सो हो गयी।" उपमा ने कहा, 'फेरे वापस नही हो सकते। हा, मै आपकी फिल्मे पूरी कर दूगी। आप विश्वास रखिए।'

'इससे काम नही बनेगा मेरी सारी पहले की पब्लिसिटी गडबडा जायगी। हा, अब आप इस शादी को गुप्त रखें।'

इस बात पर उपमा झल्ला पडी। बोली, "आप क्या बच्चो-सी बातें करते हैं ! ऐसा नही हो सकता।"

राजन उठ गया। क्रोध मे फुफकारकर बोला, उपमा ! तुमने मेरे साथ अच्छा बरताव नही किया है। मैं भी तुम्हारे अनुबध पर दोबारा सोचूगा। अभिनेत्रियो की कमी नही है। एक ढूढो, हजार मिलती है।'

राजन काफी गुस्से मे भर गया। वह उठकर चला गया। उपमा उदास हो गई। वह जानती थी कि राजन एक बडा निर्माता है। वह उसे अपनी फिल्मो मे से निकाल देगा। उसे आज इस स्थिति तक पहुचाने वाला राजन ही है।

क्या सोचने लगी ?' विनय ने उसके गभीर मौन को तोडा।

'सोच रही हू कि व्यक्ति और परिवार के सम्बन्ध मर गए है। जीवित रह गए हैं स्वार्थ से लिपटे रिश्ते ! आदमी केवल अपना सुख चाहता है।

वह हर कीमत पर अपने मेहमानों को खुश रखना चाहती है। मैं मानती हूँ कि राजन के मुझ पर अहसान हैं पर इसका मतलब यह नहीं है कि मेरा अपना निजी सुख ही नहीं।"

विनय न याद है कई माह पहले एक दिन उमेश का भाई मुंगेर बीमार पड़ गया। दवा के पैसे नही थे। परेशान उपमा शाद के पास गई। शाद फिल्मो मे सवाद लिखता था। शरीफ और सुशील था। कई बार उसने उपमा को अपनी बीवी के द्वारा कहलाया था कि वह फिल्मो मे कोशिश करे। उसे अवश्य चांस मिलेगा। पर उपमा ने उस पर गौर नही किया। लेकिन भाई की बीमारी ने उपमा को विवश कर दिया। वह शाद से कुछ रुपए ले आई, शाद ने फिर अपनी राय दोहराई। उपमा ने उस पर विचारा। एक दिन वह चुपचाप शाद के साथ राजन के पास पहुंची। राजन ने उसे देखा। कद, नाक-नक्श, आखें और रंग। शत प्रतिशत फिट तुरन्त ही दूसरे दिन बुलाया, हजार रुपये माहवार पर दफ्तर मे रख लिया।

एक छोटा-सा कमरा सान्ताक्रुज मे दिला दिया। सिलसिला चल पड़ा। राजन ने अपनी नई फिल्म की घोषणा की। हीरोइन का चुनाव करना था। नन्दा का नाम प्रस्तावित किया गया। शाद ने राजन से कहा कि वह उपमा को ले ले। राजन ने कहा कि उपमा मे ऐसे गुण कहा? वह दफ्तर मे ही ठीक है। उपमा को बरदाश्त कहा? पर शाद ने बता दिया था कि हीरोइन बनकर लाखो रुपये कमाना आसान नही है, उसके लिए बड़े त्याग की जरूरत है। त्याग शब्द के निहित अर्थ को वह जल्दी ही समझ गई। त्याग का एक ही अर्थ था—शरीर का त्याग। स्वयं का समर्पण।

वह हिचक गई। घर लौट आई। पहली बार उदास उदास-सी खिड़की मे बैठ गई। मा ने पूछा, "क्या बात है बेटी?"

'राजन साहब मुझे हीरोइन नही बना रहे है।'

"क्यों?"

"मा, यह लाइन बहुत ही गन्दी है।"

उसने सोचा कि मा उसके जवाब से खुश होगी। सोचेगी कि उसकी बेटी धर्म और नैतिकता पर चलने वाली है, पर मा उल्टी उदास हो गई। उसकी आकृति अजीब भावो से घिर गई, मानो उसकी बेटी जान बूझकर

आने वाली समद्धि को ठुकरा रही है। और तो और, दूसरे दिन उसकी मा स्वय राजन क पास पहुच गई। राजन न कह दिया कि वह हीरोइन बना सकता है, उसकी एक एक चीज हीरोइन बनन क काबिल है पर उसके लिए थोडी तहजीब, थोडा एडवास होना जरूरी है। और उपमा इसकी आर जरा भी प्रयत्नशील नही है। वह तो घर स दफ्तर और दफ्तर स घर।

मा लौट आई। उपमा पराठे सेंक रही थी। मा न जलन स्वर म कहा, जिन्दगी भर खाना ही बनाती रहोगी या कुछ और करोगी? आज राजन तुम्हारी बडी शिकायत कर रहा था।"

उसन फिर आत्मविश्वास के साथ कहा, "मा! यह सब लोग "

"ओह! तुम समझती क्या नही कि यदि एक फिल्म चल गई तो सारी गरीबी मिट जाएगी। जरा सोचो, तुम्हारा त्याग सारे परिवार का एक नई जिन्दगी देगा।"

इसके बाद उसन महसूस किया कि घर का एक एक सदस्य उस ताने मारन लगा है। हर पल तनाव स भर जाता था। लगता था कि वह इस घर को सुख मे नही जीन देती। बाप न तो एक दिन बहुत ही जली-कटी सुना दी। मझली बहन न छोटी बहन से कहा—"सती-सावित्री तो नही लगती, मट्रिक पास को हजार रुपए यो ही नही मिलते।"

उस लगा था कि उसके जिस्म से हजारो बिच्छू चिपक है।

फिर उसे अपनी मा, उस वश्या की मा की तरह लगने लगी जो अपनी बेटी को गन्दगी म डालन के लिए मजबूर करती है, जब वह नाचती है तब वह बैठी-बैठी पान लगाती है। एकदम काइया। उसे मा से घृणा हो गयी। उसे बाप बाप नहीं लगा। एक अजीब-सी घृणित कल्पना की अपन बाप के लिए। फिर वह अजनबी बन गई। परिवार की भीड म उसन अकेलेपन का निरन्तर अहसास किया। आखिर वह टूट गयी, चली गयी राजन क पास। साफ-साफ कह दिया कि वह हीरोइन बनेगी किसी भी कीमत पर बनेगी।

राजन ने उसे रात का बुलाया। यह जगह वर्ली सी फेस पर थी। यह आलीशान फ्लैट मिस्टर गोपी का था। गोपी भी कभी प्रोडयूसर था। पर आजकल जरा कडकी मे था। कुआरा और अकेला था। एकदम अकेला।

ना की तबीयत उदास थी। मन से मन निला की शूटिंग थी। उपमा ने शूटिंग पर जाने से इनकार कर दिया फिर क्या था? घर में कोहराम मच गया क्योंकि उस कम्पनी का प्रोड्यूसर मैनेजर दस हजार का इन्स्टालमेंट देने जाता था। उसने साफ कह दिया कि यदि उपमा शूटिंग नहीं करेगी तो वह इन्स्टालमेंट नहीं देगा।

दस हजार रुपया को जाते हुए देखकर घर वाले नाराज हो गए। उन्होंने उपमा को तरह-तरह से समझाया कि वह शूटिंग पर चली जाए पर उपमा ने साफ-साफ कह दिया कि उनके अन्दर में दर्द है वह आज नहीं जा सकती। आउटडोर की शूटिंग है, कैंसिल भी हो जाएगी।

इस उत्तर के बाद उपमा ने देखा कि उनके सब-सम्बन्धी एकदम अपरिचित हो गए हैं। उनके चेहरों पर वही क्रूर तटस्थता आ गई है जो प्राचीन काल में गुलामों के मालिकों के चेहरों पर होती थी। सभी उसे तिरस्कार की नजर से देखने लगे और मां तो एकदम डायन-सी बन गई। गाली गलौज निकालने लगी—"बदमाश कहीं की काम से जी चुराती है साली को मार-मारकर घर से निकाल दूंगी। सुख से रोटियां क्या मिलने लगी हैं, नालायक का दिमाग ही खराब हो गया है?"

उपमा कुछ नहीं बोली। उसे इतना अहसास हो गया कि उसकी मां इस जन्म देकर भी उसकी अपनी मां नहीं है। वह एक कुटनी। उसे सिर्फ पैसा चाहिए, पैसा।

इस तरह घर का एक एक सदस्य नंगा हो गया था उनके शब्द नंगे हो गये थे उपमा का हृदय पीड़ाओं का सागर हो गया था।

वह घर से निकल पड़ी थी घूमती रही थी। शराब पीती रही। फिर चली आई जुहू के शांत और एकांत तट पर।

वहां चुपचाप बैठ गई थी।

सांझ का सूरज आहिस्ता आहिस्ता जल-समाधि ले रहा था। लहरों पर चमकती किरणों के चिलके मनमोहक लग रहे थे।

वह सोचती रही। उसे लगा कि इस समुद्र और भरे पूरे जीवन में उसका अपना कोई नहीं है। सारे स्वार्थ और अपने सुख के प्रेमी हैं। जिस दिन वह काम बन्द कर देगी, उस दिन से लोग उसे खुजलाई कुतिया की

तरह घर से निकाल फेंकेंगे। फिर हीरोइन का जीवन होता ही कितना है? नायिका की उम्र पांच-दस साल। फिर? वह इतनी भावाभिभूत हो उठी कि उसे बूंदों का स्पर्श भी महसूस नहीं हुआ। उसे अपने घर वालों के चेहरे बदले हुए लगे। मुखौटे रहते हुए बहुरूपिए।

उसका बदन अनाम भय के कारण पसीने पसीने हो गया। वह अपने को बुढ़िया समझने लगी। उसे नवाबजान याद आई जो आजकल बोरीवली में एक कच्ची खोली में जीवन बिता रही थी। क्या जमाना था नवाब जान का? अपने जमाने की विख्यात अभिनेत्री। कितना दुखांत?

तो क्या उसका भी यही अंत होगा।

उसे लगा कि उसके सारे अंग अलग हो गए हैं। तभी किसी ने मधुर स्वर में पुकार कर उसका ध्यान भंग किया, "माफ कीजिएगा, आप उपमाजी हैं?"

उपमा ने देखा—एक गोरा चिट्टा युवक झुका हुआ खड़ा है। उसकी काली-काली बड़ी-बड़ी आंखों में आत्मीयता दहक रही है। उसके साथ एक जवान लड़की भी खड़ी है। वह भी मुसकरा सी रही है।

"मैं अशोक शर्मा हूं। इंजीनियर हूं। यह मेरी बहन सुषमा है। आपकी बड़ी फैन है। आप इसकी प्रिय कलाकार हैं।'

उपमा ने बड़ी औपचारिकता से हाथ जोड़ दिए, सुषमा बोली, "हमारी कॉटेज पास ही है। आप चलिए न? हमें बड़ी प्रसन्नता और गौरव होगा। चलिए न।"

अशोक ने भी अनुरोध में कहा, "चलिए न, आपकी बड़ी कृपा होगी।"

उपमा ज्यादा सोच विचार नहीं सकी। चुपचाप चल पड़ी। अशोक के घर में उसकी मां, उसकी छोटी दो बहनें और एक छोटा भाई था। अशोक के पिता मर चुके थे, आजकल परिवार का सारा जिम्मा अशोक पर था। वैसे अशोक के पिता भी एक अच्छे सरकारी अफसर थे।

थोड़ी ही देर में उपमा उस परिवार से बहुत घुल मिल गई। उसने अशोक की मां में ममता का समंदर पाया। फिर क्या, उपमा जब तब आने लगी। क्षण भर की मुलाकात प्रेम में बदल गई। अशोक और उपमा अनचाहे किसी अटूट बंधन में बंधते रहे। दोनों की स्थिति बड़ी नाजुक हो गई।

अशोक के अथाह प्रेम के सामने उपमा अपने को अपराधिन समझने लगा। जब एक दिन अशोक ने विवाह का प्रस्ताव रखा तब उपमा रो पडी। अशोक ने अंत म जिद पकड ली। उपमा ने कहा, "मैं झूठ नही बोलूगी अशोक। शरीर की पवित्रता मेरे पास नही है। कल लोग तुम्हे ताने मारेंगे, उन्हें तुम नही सह पाओग। फिर मुझे छोड दोगे।"

अशोक बोला, 'मैं तुम्हारे बारे मे सब कुछ जानता हू उपमा। मैं एक ही बात कहूगा कि तुम जिस पल से मुझे प्रेम करती हो, उस पल से आज तक तुमने सच्चा विश्वास ही दिया। मैं तुमसे विवाह करूगा, अवश्य करूगा।"

उपमा ने उसके पाव पकड लिये।

लेकिन उपमा के घर मे हगामा हो गया। वे लोग भूखे बाज की तरह उपमा पर टूट पडे। कितने ही गन्दे शब्दो का प्रयोग किया उसके लिए। उपमा चुपचाप। वह साल भर तक अशोक के साथ अपने को एडजस्ट करती रही, शराब पीना छोडा, सिगरेट पीना छोडा एक दुल्हन बनने की चाह न उसम आमूलचल परिवतन की क्षमता पदा कर दी।

लेकिन उसके घर वाले दिन प्रतिदिन उसके कट्टर शत्रु बनते गए। "हम किसी भी कीमत म यह विवाह नही होने देंग। हम अशोक को जान स मरवा देग। तुम्हें घर वालो पर दया नही आती?'

एक दिन तो मा ने उसे पीट दिया। दिन भर ताले मे बन्द रखा। उसका धय टूट गया। शेष स्नेह का एक कतरा भी उसके अन्तस मे सूख गया। अवसर मिलत ही वह भागी। चुपचाप एक फ्लट ले लिया। चुपचाप अशोक स विवाह कर लिया। कोट मरिज यदि शेफाली का भाई नही कहता तो यह राज, राज ही रहता। पर अब वह राज आम चचा बन गया था।

सारी फिल्म इण्डस्ट्री मे एक ही चर्चा थी उपमा ने शादी कर ली।

अतीत गाथा खत्म हो गई। विनय की सिगरट जलत-जलत अगुली को छू बठी। वह चिहुक पडा।

उपमा ने बताया 'ये सारे लोग मेरे भविष्य-सुख, सतोष और जीवन का नहीं देखते। ये देखत हैं अपने सुख। सम्बन्ध कितने बदल गए हैं।

लगता है रिश्ते रिश्ते न रहकर स्वार्थ की डोर बन गए हैं। कितनी मर्मान्तक पीड़ा होती है जब आदमी ऐसे सम्बन्धों के बारे में सोचता है। कहां हैं मां-बाप, कहां हैं भाई-बहनें ? सब मर चुके हैं जिन्दे हैं—स्वार्थ। आज मैंने विवाह कर लिया तो सारे लोग बौखला उठे। पर, मैं नवाब जान नहीं होना चाहती। मैं जीवन में एक व्यवस्था चाहती हूं, वह मैंने कर ली। अब भाड़ में जाए घर वाले।'

विनय ने देखा एक दृढ़ता है उपमा के चेहरे पर।

('खो जन्म रो' का अनुवाद)

खोल

वह अपन शहर व घर स सारी सामयिक स्थितिया व मूल्या क वि
विद्रोह करक हिपी जीवन का एक दिन महानगर म गुजारने के लिए
म वठ गया ताकि उस जीवन की प्रत्यक्ष अनुभूति कर सक । उसकी
बहुत भारी थी और वह चौबीस घण्टे एक बादशाह की तरह व्यतीत
सकता था ।

उसने अजीब ढग की पोशाक पहन रखी थी । पजामे सी पट
साधारण-सी स्पोट स शट । हिप्पिया स ही बिखरे लम्बे रूखे बाल । पीत
की कमानी का रगीन चश्मा । पावा मे साधारण चप्पल जिन पर हल्
हल्का मल जमा था ।

उसने अपनी पीठ पर थला लटका रखा था जो उसके विदेशी हाने
भ्रम पैदा कर रहा था । थैले म सिफ चादर व एक तौलिया था ।

वह ट्रेन से उतरा और स्टेशन को अपनी नजर मे भरन लगा । उ
यह निश्चय कर लिया था कि वह अभिव्यक्ति की आधुनिकतम श
अपनाएगा और शब्दा व वाक्या का प्रयोग नए ढग से करगा । इसी म
म उमन सोचा यहा आदमी कीडे मकोडे की तरह रेंग रहे हैं, विभि
मोटी-पतली आवाजें आपस म लड रही ह और खिलखिलाहट ख
नायिकाआ की तरह लगती है । उसे अपन पर गव हुआ । उमने वहा
घुटनदार हवा की सास पीकर कहा, ' मरे देश के लाग कौन हैं ।

वह भीड म घस गया । तभी उसने पास स एक महिला गुज
जिसके शरीर म लवेंडर की जगह पसीन की नमकीन बू आ रही थ
उसने तुरन्त भस शब्द उछाला । शब्द महिला पर तीमे पत्थर की त

गिरा। महिला न देखा। नजरें टकराइ। वह युवती काफी पतली थी। रग भी काला था, पर उसके नाक-नक्श आकषक थे। वह उसकी तीखी नजर मे बेंध गया। दूसरी ओर मुह करके सिगरेट सुलगाने लगा। धुए को पीते हुए उसन खासा और सोचा कि भैंस केवल शरीर स नही गध स भी हो।

वह रिगचू रिगचू रेंगने लगा। यकायक उस पर कई आवाज आक्रमण करती हुई सी लपकी—"पकडो-पकडो चोर-चोर" एक आदमी भीड मे गेंद की भाति उछलने लगा और फिर जाल म पछी की तरह फस गया। चोर पकड लिया गया था। वह जवान था। आकषक था। कपडे फैशनेबुल थे। उसने सोचा, बेचारा कोइ बेकार युवक। जरूर फाका स प्रताडित कोई ग्रेजुएट होगा।

वह युवती रोगी की तरह हाफ रही थी। दमे के रोगी की तरह। वह चीख रही थी पर उसके आधे शब्द गले मे ही भर रहे थे।

"यह चोर ह, इसने मरा बटुआ छीन लिया। इसकी जेबें देखिए।" युवती हाफती हुई चीखी।

युवक काफी तटस्थ था। उसके चेहरे पर भय नाममात्र को नही था। अलबत्ता उसके होठ किसी देशभक्त क्रातिकारी की जावट-भरी मुस्कान से रगे थे।

जब रेलवे का एक सिपाही उधर आने लगा तब उसने विचित्र स्टाइल से अपनी जेब मे से एक बटुआ निकालकर युवती की हथेली पर रख दिया। युवती ने बटुआ हाथ मे लेकर देखा। खोलकर देखा। तेज निगाह से उस युवक की ओर देखा। दोनो की नजरें आपस मे चिपकी। उसने सोचा—यही से दोना मे प्रेम हो जाए तो एक नई ढग की प्रथम भिडत। एक नया आरम्भ।

"चोर कही का, हट्टा-कट्टा होकर मजदूरी क्यो नही करता?' एक बूढी आवाज उन पर रगी।

वह झुझलाया एकदम बोदा और बासी सवाद।

पुलिस आई। लोग आग लगने पर शहद की मक्खियो की तरह बिखरने लगे।

उसने खडे-खडे फिर अपने अनुमान को कष्ट दिया। जरूर

अभावग्रस्त निश्चित बतार युवक है।

तभी सिपाही ने उस चार के कंधे पर हाथ मारा, 'क्या क दिखाए कुमार म बस्त ! फिर स्टेशन पर आ गया।" उसके बाल की लटें लौह की तरह थी।

'आखिर यहां धंधा शानदार चलता है।' वह बड़े विश्वास और निर्भीकता स बोला।

"कम्बख्त फोनेयर ।" सिपाही बुदबुदाया।

पीछे म अचानक किसी न उसे धक्का मारा। पलभर म वह स्टेशन स बाहर निकल आया। अचानक उसन यह अनुभव किया कि यह सारा इलाका मुर्दाघर है। लोग चलती फिरती लाशें हैं—जिन्दा मुर्दे हैं—वह बुदबुदाया। एक फायरमीटर धड़धड़ाता हुआ उसके सामने आया। उसे महसूस हुआ कि वह उसके नीचे आकर रौंदा जाने वाला है। वह सिर स पाव तक काप उठा।

वह अब सड़क पर था। ट्रैफिक व भीड मिश्रित ध्वनियों का कोलाहल। उसके दिमाग म अपने आपको भीड म गुम करने का सकल्प पदा हुआ पर उसके पेट की भूख ने एक पल म उसे एक रेस्तरा के आगे ला पटका। पेटपूजा प्रथमोधम । उसन सोचा।

उसी पल टोकरी की तरह एक वस्तु उसके सामने आकर पड़ी, चमकदार। उसन देखा—वह कोई विदेशी हिप्पी था। हिप्पी कपड़ झाड़ता हुआ उठा गदा, गन्दे कपड़े और नंगे पाव। उसने दुकानदार को आदर भाव म देखा। शान से मुस्कराया और सलाम ठोककर चलता बना। 'थैंक्यू-थैंक्यू, हिप्पी बड़बड़ाया।

दुकानदार गाली देते हुए फटे ढोल की तरह बजा, "न जाने कितने भुक्कड़ आजकल इण्डिया म इम्पोर्ट हो रहे है। मार खा लेंगे पर पैसा नही देंगे। बेशरम कही के।

उसने भौंहे नचाकर कहा, "मूल्यों के प्रति शानदार विद्रोह, आक्रोश आवेश । वह उसी रेस्तरा म घुस गया। अपनी जबरदस्त भूख को मिटाने के लिए उसने आमलेट चार टोस्ट और एक काफी का आर्डर दिया। उन्हें निगल कर सिगरेट जलाता वह बाहर निकलने लगा।

"दो रुपय तीस पैस ।" वरा चिल्लाया। उसने पैंट के पीछे वाली जेब मे हाथ डाला। उसे लगा, एक पल को उमकी मास ठहर गयी। जेब म बटुआ नही था। तब उसने इधर-उधर निगाह दौडायी। चीखना चाहा, 'चो'-चोर पकडो-पकडो।' पर वह स्टेशन नही रस्तरा था। उसके रोम रोम स पानी चून लगा। तुरन्त उसे वह हिप्पी याद आया। कूडे की टोकरी के तरह फेंका गया वह। मुझे भी साहस स काम लेना चाहिए—उसन सोचा। तभी दुकानदार व्यग्य से बोला, "साहब की पाकेट मारी गयी है बटुआ निकल गया है।" वह कहने को उद्यत हुआ कि सचमुच उसका बटुआ निकल गया है जिसमे शानदार ढग से एक दिन गुजारने जितना रुपया था, पर वह कुछ भी न-ी कह मका, बल्कि दुकानदार गुस्से के स्वर मे पुन बोला 'बम, आप अपनी जबान पर लगाम रखिए मैं आप मब लागो की तरकीब खूब समझता हू। जैसा गोरा बसा काला, पर मैं बार-बार ग्राहक को धक्का मारकर या बेइज्जती करके चुप नही होने जा रहा समझे जनाब रामधन !' उसन जोर से पुकारा।

उसने दुकानदार को सब-कुछ बताना चाहा—पैसा के बारे म, अपने इरादे के बारे मे, किन्तु मुह पर म नो किसी ने प्लास्टर चिपका दिया था। नौकर रामधन आनाभक मुद्रा मे आकर खडा हो गया।

दुकानदार ने रामधन को हुक्म दिया, 'फार्मूला नम्बर तीन सौ तीन" पलक झपकते रामधन ने उसकी स्पोटस शट खोल ली—चादर छीन ली।

'ये ये ।'

"य दोनो सिफ दो रुपये मे बिकेंगे—कितने रद्दी किस्म के हैं।" दुकानदार ने उपेक्षा भाव स कहा।

वह भयभीत हो गया। उस हिप्पी का फेंका जाना स्मरण हो आया था। वह दुम दबाकर भागा, लोगो की आख और कई तरह क अट्टहास उसका पीछा कर रह थ।

अब वह सही ढग स महानगर के लोगा क आकर्षण का केन्द्रबिन्दु हो गया। नगे बदन पर लटका हुआ थला। बडे-बडे बेतरतीब बाल। लडकिया उस देखकर रोमाचित हो रही थी। 'इण्डियन हिप्पी !' जो उसस मिलते

थे, व अंग्रेजी म बोलत थे जस हिप्पियो की भाषा अंग्रेजी ही हो। पर वह गोरे हिप्पियो की तरह हसकर, तटस्थ रहकर, प्रसन्न होकर न तो जवाब दे पाता था और न सबस बेखबर निर्भीक होकर चल सकता था। उस बार बार अपने बदन पर कोई भारी खोल ओढे होन का भ्रम होता था। वह अपन शरीर पर हाथ लगा लगाकर देखता ओ, यह तो नगा है—बिल्कुल नगा !

फिर उसन क्या आढ रखा है ? वह इसी बात स परशान था। उस कई विदेशी हिप्पी लडक-लडकिया मिले। वे हर हालत म खुश थ, मस्त थे और निश्चित थे। वे इस इण्डियन हिप्पी के साथ लम्बे पल गुजारना चाहत थे, पर वह सबस कतराकर भाग रहा था—गलियो, सडको और चौराहो पर किसी परिचित व आत्मीय चेहरे की तलाश म जिससे वह कुछ उधार लेकर यहा स वापस जा सक—पर वह किसी क्षण भी उस बोझिलपन से मुक्त नही हो पाया जो उसके नग शरीर पर किसी खाल के रूप मे ओढा हुआ था। भारी भारी था। वह क्या है—वह क्या है—वह बार-बार सोचता। बार-बार अपन नगे शरीर को छुता।

फिर भी वह एक परिचित चेहरे की तलाश म चला जा रहा था, आदमी दर-आदमी। वह अब एक ही चेहरे की तलाश मे था, एक आत्मीय चेहरे की।

(खोल का अनुवाद)

उखडा-उखडा

लगभग आधा घटे से वह मेज पर झुका हुआ वठा था। बीच-बीच म कुछ क्षणा के लिए अपनी कमर सीधी करता था और सैल्फ म भरी पुस्तको पर नजर डालकर ललाट पर सलवटें डालता था फिर अपने सामने पडे कागज पर लिखने बैठ जाता था। अभी तक काफी लिख लिया था—रात दिन दिन रात दिन-दिन-दिन रात, महानगर सत्रास, ऊब, खालीपन, भोग, बोध शोध, खोज, रोज—बकवास !

इन पर उसने गहरा क्रॉस लगा दिया। निब को कई बार रगड-रगड-कर एक गहरा क्रास। इतना गहरा क्रॉस कि नीचे का कागज एक दो जगह फट भी गया था।

इधर वह लाख कोशिशो के बाद भी कोई नयी कहानी नही लिख पा रहा था। पता नही उसे क्या हो गया है। शायद वह कुठित हो रहा है। शायद उसकी तमाम इच्छाओ पर रोलर चल गया है। वह सोचता है कि वह एकदम मरा तो नही, मरा-सा जरूर हो रहा है।

उसका दाया गाल और गले के नीचे का हिस्सा मेज से चिपका हुआ था। टेबल-क्लाथ सदा खराब हो जाते थे इसलिए उसने उससे ऊबकर इस बार अपनी राईटिंग टेबल पर सनमाइका लगा लिया था। एक नयी डिजायन का सनमाइका। सफेद सनमाइका पर हलके हलके काले बादल के टुकडे बिखरे बिखर।

वह अपने आप मे खोया बहुत दर तक यू ही पूववत मुद्रा म चिपका रहा। जब उसन अपनी गरदन उठायी तो उसे महसूस हुआ कि वह कुछ रो लिया है। तुरत उसने अपने लिखे कागज पर दृष्टि डाली। देखा, सब

कुछ लिखा हुआ उसके पसीने से धुंधला और फैल गया है। उसके लिखे एक-दो शब्द नये ही अर्थ देने लग गये हैं। अश्लीलता भरे नये अर्थ। वह भी उन्हें प्रश्नभरी नजर से कुछ क्षणों तक निहारता रहा। फिर भीतर ही-भीतर हंस पड़ा।

सहसा उसे ख्याल आया कि उसे या तो चाय पीनी चाहिए अथवा सिगरेट क्योंकि इसी तरह एक सुस्ती, टूटन और बिखराव कम हो सकता है। पर उसने देखा, उसके स्टोव में तेल नहीं है और खाली सिगरेट की डिबिया में चांदी के कागज के सिवाय कुछ भी नहीं है।

हां दरवाजे के कोने में एश-ट्रे सिगरेट के जले हुए टुकड़ों से इस तरह घिरा था जैसे कोई स्वीमिंग पूल असंख्य काले बालों वाली गोरी छोरियों से घिरा हो। वह एश-ट्रे के जले हुए टुकड़ों को देखता रहा और सोचता रहा क्या इन्हें नये ढंग से ग्रहण किया जा सकता है? क्या ये जले हुए सिगरेट के टुकड़े नया आब्जर्वेशन नहीं दे सकते? इन गोरी देहों से भी अलग।

कहानी यहीं से शुरू की जा सकती है। एक महानगर के फ्लैट का रीडिंग-कम-ड्राइंग-कम-स्लीपिंग-कम-क्वाडखाना। उस भीड़ के बीच घिरा हुआ अकेला आदमी। उसके पास जले हुए सिगरेट के टुकड़े मानो जली हुई कहानियां। खंडित व्यक्तित्व। अभावों और एकांत की पीड़ा में लिप्त अनेक टुकड़े। हर टुकड़ा संत्रास और उकताहट से घिरे जीवन का प्रतीक।

उसने उसे फिर काट दिया।

ये शब्द काफी बासी हो चुके हैं। उसने हठात् इन पर ही गहरा क्रॉस लगाते हुए सोचा। हालांकि वह इन शब्दों के बारे में एक-एक शब्द का प्रमाण करना चाहता था जो पत्थर औरतों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, पर गद्य में कविता जैसे शब्द प्रयोगों की बहुत कम छूट रहती है और उनमें लोगों की भयंकर प्रतिक्रिया सुनने का साहस भी नहीं था।

वह क्रॉस पर क्रॉस जाने कितने ही क्रॉस लगाता गया। अंत में वह झुंझलाहट से भरकर उठ गया।

वह कमरे के बाहर बरामदे म आ गया। बरामदा छाया वस्त्र पहन चुका था और सामने वाली खिडकी म कोई शक्ल नही थी। हालाकि वह फिल्मी गीतो का निहायत ही बचकाना सृजन मानता आया ह, पर अभी उसे न जाने क्या सूझा कि वह धीरे-धीरे अपने बसुरे गले से गुनगुना उठा—'सामने वाली खिडकी म एक चाद का टुकडा रहता है, अफसोस है कि वह हमसे कुछ उखडा-उखडा रहता है।' उसने सोचा कि उखडा का प्रयोग थोडा आधुनिक है। तभी उस खिडकी मे एक न पसद आने वाली शक्ल आकर फस गयी जिससे उसके सौदय-बोध पर कुछ फटने-जसा धमाका हुआ। और, दिल की पखुरिया छितरा गयी।

उसने क्षोभ भरी दष्टि स उस शक्ल को घूरा। चाद के टुकड की जगह भस की बेटी खडी थी। उस लडकी की मा। उसन थूकते हुए बुद-बुदाया—"दो सीग हो जाते तो एक आकषक भस बन जाती। अच्छी कीमत होती।" उसे देखकर वह प्राय गभीरता से सोचता था कि आदमियो म भी भैंसा अवश्य हुआ करता है वरना उस खिडकी से गाली-गलौज के छीटे एक दो बार दिन म उडकर उसके बरामदे म जरूर आ पडत। एसी काली रद्दी और मोटी औरतो के साथ कसे कोई जिंदगी व्यतीत करता है? इसके साथ का एक-एक पल तनाव और खीझ मे लिथडा हुआ होना चाहिए, पर उसे इस बात से बहुत ही हताश होना पडा कि खिडकी के भीतर रहने वाले मोटे दपति कभी जोर स बोलते तक नही। हा चाद का टुकडा कभी-कभी उखडी-उखडी भाषा म जरूर बोलता सुना जाता है। वह उसकी आवाज सुनत ही बरामदे म आ जाता है क्योकि उसे मालूम है कि जब चाद का टुकडा उखडा हुआ होता है तो बार-बार खिडकी म आ आकर थूकता है और वह उसके साथ कई तरह के मानसिक सबध फौरन स्थापित कर लेता है।

उसकी इच्छा हुई कि वह चाद के टुकडे पर कोई कहानी लिखे। उसने लिखना शुरू किया—एक खिडकी। उसके नीचे चौखट म जडी हुई एक सुदर आकृति। बडी-बडी आखो मे खीझ की गहराई। वह बार-बार अपने होठ को चूसती है। होठ के चूसने की कल्पना के साथ उसे अपनी मोटी शादीशुदा प्रेमिका की याद आ गयी, जो उसकी खिडकी के ठीक

सामने रहती है, पर अभी उसका पलट बद था। शायद उसका वहमी पति 'वकील साहब' घर म हो ! वह प्राय होठ चूसती है। होठ चूसन की आदत से उसे बडी घिन है। ऐसी घिन है कि उसका जी मितलाने लगता है। किसी किसी लडकी को होठ चूसते देखकर उसके मन म एक ऐसी वितष्णा जागती है कि उसकी इच्छा कुछ घट किसी औरत को देखने तक की नही हाती। पर उसे अपन पर इसलिए आश्चय आ कि उसने एसी घणास्पद कल्पना अपनी कथा नायिका पर क्यो की ? उसने फिर कहानी पर क्रास बना दिया। रद्दी। उसने इस शब्द को उगला।

अब वह सवथा बोर हो चुका था और उसे यह लगा कि कभी कभी आदमी के लिए अकेलापन उसके हजारो क्षणा की हत्या करने की क्षमता रखता है। वह घटो से इस कुर्सी से चिपका है। उसक 'हिप्स' तप गये हैं और जाघो मे एक पीडा सी होने लगी है। आखिर व फाउटेनपेन को, जो चीन का बना हुआ है, उसे बद करके रख देता है। यह पेन उसके एक असमिया दोस्त ने भेजा था। खूब बढिया चलता है यह पेन जिसका मक पाकर पेन जैसा है। पता नही, वह इस पन को लेकर अपन को सहसा क्यो अपराधी समझने लगा ? यह चीनी पेन ! उसन यह महसूस किया कि चीनी एग्रेसन के दिनो मे अगर गुप्तचर विभाग उसके कमरे की तलाशी ल लेता तो उसे डी० आई० आर० के अतगत बद तो नही करता, पर उस पर सदेह जरूर किया जा सकता था। "सचमुच हममे कुछ भी राष्ट्रीयता नही है। हमारा राष्ट्रीय चरित्र स्वाधीनता के बाद बना ही नही।" और उसन यह उपदेशात्मक वाक्य दोहराकर पेन को धीरे से मेज के नीचे बिछे कालीन पर फेंक दिया। हा, फेंकत हुए उसे कुछ गौरव-सा अनुभव जरूर हुआ।

अब उसको सिगरेट पीने की बडी इच्छा हुई। दिमाग काफी थका थका लगा। कुछ बोझिलपन भी बढ गया था। वह नाइट सूट म बाहर निकल आया। सुबह म वह कुछ लिखना चाहता था, इसलिए वह ड्रेस भी नही बदल सका। वह नीचे उतर आया। उसकी इच्छा हुई कि इजीनियर की बीबी से थोडी गप्प मार ले पर वह दरवाजे पर खडी नही थी और उसकी हिम्मत उसे पुकारन की नही हुई। वह इस मामल म अपने को बडा

घाचू समझता है—डरपोक और पिछडा हुआ, क्यांकि इजीनियर की बीवी तो जब उसकी जरूरत समझती है तो उसे आवाज लगा देती है और जब तक वह उसके पास नही जाता, जब तक वह दरवाजे के बीच फसी हुई मिलती है ।

वह सिगरेट का पैकेट लेकर वापस इजीनियर की बीवी के फ्लट क खुले दरवाजे म झाकता हुआ अपने फ्लैट पर लौट आया । आकर कुर्सी मे वापस धस गया । वह रह-रहकर खीझ म भर उठा कि वह इजीनियर की बीवी के पास धडल्ले से क्यो नही जाता ? उसन अपन पर आरोप लगाया कि वह बहुत ही दब्बू और कायर है । साथ ही उसन इजीनियर की बीवी पर भी यह आक्षेप किया कि वह उससे मन बहलाकर याने अपने फालतू समय का साहित्य-चर्चा द्वारा श्रेष्ठतम उपयोग करके कह देती है—'अरे मै तो भूल गयी कि मुझे उनकी टरेलिन की व्हाइट पैंट पर आयरन करना है । और वह उसकी उपस्थिति के अस्तित्व को सहसा नकार करके अपन काम मे लग जाती है और वह कुढता-सा वापस आता है । हालाकि उसके मन मे एक चीज तब भी जमी रहती है—इजीनियर की बीवी क पेट की गोल-गोल नाभि । वह जब जब इजीनियर की बीवी के यहा जाता है, तब-तब वह उसकी गहरी नाभि को लुक-छुपकर जरूर देखता है और अजीब नगी उत्तेजित कल्पनाओ मे खो जाता है ।

सिगरेट से अगर उगली नही जलती तो वह और गहरा डूबता, पर जलन के अहसास के साथ वह चौक पडा और उसी सिगरेट म सिगरेट जलाकर पुन बरामदे मे आकर खडा हो गया । खिडकी अब बद हो गयी थी । बद खिडकी को देखते ही उसे और अधिक बोरियत महसूस हुई । उसने निणय किया कि वह कल वापस अपनी ड्यूटी ज्वाइन कर लेगा । आदमी निठल्ला बठकर अपने पर अधिक अत्याचार करता है । क्या करे वह सारे दिन ? कम-से-कम दफ्तर मे अखबार की न्यूजें तो बनाता है । टलीप्रिंटर की खट-खट सुनता है । सहकमचारियो की ऐसी-की-तैसी तो करता है । अभी उसे यह भी महसूस हुआ कि उसे अपन दफ्तर म पत्रकारिता की शिक्षा लेने वाली अपणादत्त से विवाह कर लेना चाहिए । क्यो उसन उसे निराश किया ? कम-से-कम वह इस कमरे म उसके साथ कुछ-न कुछ खटपट तो जरूर

करता गुस्सा करता, प्यार करता, बच्चे पैदा करता, कुछ न-कुछ अच्छा-बुरा चलता रहता। बड़ी भूल की उसने। अपणा न स्वय कहा था—'मैं आपसे शादी करना चाहती हू मिस्टर।' वह इस सीधे प्रस्ताव म पहल सहसा विमूढ हो गया, बाद म उसन उस सावली किन्तु अत्यन्त आकर्षक, बडी-बडी आखो वाली अपणा को कोरा उत्तर द दिया—'वह किसी लडकी को कानून और अधिकारो की बदौलत अपने पास नही सुला सकता।' रूखड भाषा म जवाव। अपणा ने अपन लिए शीघ्र ही दूसरे लडके की व्यवस्था कर ली क्याकि अब वह अकेली नही रह सकती थी। उसने सबको बता दिया था कि वह जल्दा से जल्दी शादी करगी। वह अपन एकाकीपन स घबरा गयी है ऊब चुकी है।

वह काफी उदास हो गया था। उसे अपणा का इस तरह विवाह करना बदल की भावना लगा। अपणा न उससे प्रतिशोध लिया। उसे पराजित किया।

वह बहुत हताश हो गया—इस विचार से। कुछ आक्रोश और तनाव से फिर भर गया फलस्वरूप उसन अपने हाथ का सिगरेट बिना पिये ही फेंक दिया। सिगरेट फेंककर वह पलग पर दोनो टागें ऊची करके पड गया। आखें मूद। य ही। फिर उठा। इजीनियर की बीवी के दरवाज की ओर दखा। वह वद था। दुखी हो गया। बरामद म आकर वह चाद के टुकडे के साथ मानसिक विहार करन लगा। सडको पर, रेस्तराओ म, भीड म, अपन कमरे म। और न जान कहा कहा वह चाद के टुकडे के साथ घूमता रहा। उस अपनी झूठी उडानें तनावो को कम करती हुई लगी।

तभी उसकी मोटी प्रेमिका ने अपने फ्लैट के चौक म से खडे होकर उसे आने का इशारा किया। वासना म लथपथ इशारा। हालाकि उसन कुछ दिन पूव सोच लिया था कि अब वह उधर नही जायेगा, पर अभी वह अपन-आपम इतना जबरदस्त बोर था कि धीरे धीरे नीच उतरन लगा। सोचन लगा—थोडी देर बाद वह अपने को उत्तेजना म डुवा देगा। एक मोटी औरत की बाहो के सवथा ठडे घेरे मे। विचित्र है वह! कुछ भी स्वस्थ नही कर सकता। शायद वह भीतर-ही भीतर बिखर गया है। टूट

गया है। वह नहीं जायगा। कभी नहीं जायगा उस मुटल्ली के पास। लौटते समय वह कितनी जबरदस्त वितृष्णा से भरा होगा। उसे अपने आप पर ग्लानि होती है। और उसने अपने आपको इसके बावजूद भी एक खुन दरवाजे के सामने पाया।

('अेक उथपियोडो' का अनुवाद)

बदलते सम्बन्ध

मैंने सिगरेट का पकेट खोलकर देखा। पैकेट म सिगरेट नही थी। नया पकेट खरीदने हेतु मैंन अपनी जेबें सम्भाली, तो मुझे महसूस हुआ कि मरी सारी जेबो मे बडे-बडे छेद हो गये हैं, अत मैं अत्यन्त ही निराश हो गया। पिताजी क लाख मना करने के बावजूद भी मरी सिगरेट पीने की आदत कम होने के बजाय बढती गई है। एक बार जब मेरे पिताजी ने सिगरेट पीने की हानियो के बारे मे एक लम्बा भाषण दिया, तो मैंने अत्यन्त लापरवाही से कहा, "अब तो मेरी पीने की आदत ही बन गई है। सिगरेट के बिना अब मैं अपने को नामल नही रख सकता, दिमाग में टेन्शन रहता है।' इस पर मेरे पिताजी बहुत ही नाराज हुए थे। उनकी नाराजगी सिगरेट पीने से अधिक मेरी ढीठता व अशिष्टता को लेकर थी कि आखिर मैंने अपने बाप के समक्ष इस तरह सीधा जवाब कसे दे दिया? और तो और, इस प्रसग को लेकर मेरे पिताजी कुछ दिन काफी उत्तेजित रहे और उन्होंने मरे परिचितो के बीच मुझ पर थूक तक उछाला।

मरे तथा मेरे पिताजी के सम्बन्धो के बीच तनाव का सबसे बडा कारण यह है कि मेरे पिताजी मुझे अभी तक बच्चा समझते हैं—ऐसा नादान बच्चा जिसे दुनियादारी का ज्ञान ही न हो। परन्तु मैं ईमानदारी से स्वीकार करता हू कि मुझे सब बातो का काफी ज्ञान है। मैंने अनेक उपन्यास पढ़ रखे है जिनम प्रेम के अदभुत पत्र व नुस्खे दिये हुए है। जब से सेक्स कथाएं पढी हैं तब से नर-नारी के बीच के सम्बन्धो की बारीकिया का भी अधिक ज्ञान गया हू। भूखी पीढी व श्मशानी पीढी न मुझे यौन सम्बन्धी नय नय शब्द सिखा दिये है। ऐसी स्थिति म भी मर पिताजी कहते है कि

मुझे सासारिक ज्ञान नही है।

हा, एक बात और है कि हमारे घर म नारी नाम की कोई चिडिया नही है। जब स माताजी का दहान्त हुआ है, तब से मेर पचास-वर्षीय बाप ने नारी गृह प्रवेश वर्जित कर दिया है। यानी घर म जो एक तीस-वर्षीया काली कलूटी नौकरानी थी, उसका भी पत्ता काट दिया गया है। मन तब अपन काना से सुना था, जब मेरे पिताजी अपने दोस्त का कह रह थ—"हालाकि मेरा बच्चा अभी तक दुनियादारी के मामले मे बिलकुल बच्चा है, पर उस,'डायन' का क्या भरोसा ?" प्राय इधर कुछ दिनो से वे मुझे गलत सगति और ब्रह्मचय पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप स जारदार उपदेश देते रहत हैं। इधर उधर जाने नही देत। ऐस रखत है माना म पिंजरे का कबूतर हू। पर मैं विद्रोही बनता जा रहा हू, चारी छिप चतुराई स सार काम करता रहता हू।

मैं कुछ-न-कुछ एसी हरकत अवश्य ही करता रहता हू जिससे मर पिताजी अशात रहते हैं। पर मेरे एक नये कदम ने मरे पिताजी को तोड दिया है। वह आदमी पीडा, लज्जा, आक्रोश से बिखर गया है। बात कुछ ऐसी ही थी। पिताजी मुझे सिफ हाथ-खच के दस रुपये दिया करत है। आप ही सोचिये, दस रुपयो मे क्या आता-जाता है आजकल ? इसलिए मैं कभी कभी सफाई से पाच-दस रुपये उनकी जेब मे से निकाल लेता हू। उस दिन मैंने इस ध्येय से जसे ही उनकी जेब मे हाथ डाला, वसे ही उसमे से एक खत निकला। खत देखते ही मैं भाप गया कि हस्ताक्षर औरत क है। सूघन पर मुझे एहसास हो गया कि खत मे कोमल-कात पदावली भी है। बस, मैंने अपनी उत्सुकता को ठण्डक दी। पत्र खोलकर पढा। मैं हैरान हो गया कि वह पत्र एक युवती का लिखा हुआ था और उसने इस बात का सकेत किया था कि वह मेरे पिताजी से शादी की इच्छुक है। उसका रग रूप अच्छा है। खत से यह मालूम हुआ कि इसक पहले लम्बा पत्र व्यवहार हो चुका है—उनके और मेरे पिताजी के बीच। मेरे भीतर विस्फोट सा हुआ—सदा सयम और ब्रह्मचय की बात करने वाले मेरे बाप दुबारा शादी करेंग और वह भी उन्नीस साल की युवती से! यह अन्याय है। गलत है। मैंने खत को कई बार पढा। उसका मनन किया। मुझे पता लगा कि आज वे साढे-

सात बजे नगर के बहतरीन रेस्तरा 'शालीमार' म उस लडकी से मिलेंग। लडकी ने अपना चित्र नही भेजा था पर मेरे बाप न अपना चित्र उसे भेज दिया था, जिसे उस युवती ने पसन्द भी कर लिया था। मैंने सोचा कि वह कितनी घटिया किस्म की युवती होगी जिसने पसन्द भी किया है, तो एक पचास साल के बुडढे को। जाने क्या मुझे 'सगम' चित्र का वह गीत याद आ गया कि *'मैं क्या करू राम, मुझे बुडढा मिल गया'*, और यह दिमाग खराब युवती जान बूझकर बूढे का चित्र पसन्द करती है। जरूर इस एब नामल युवती को देखना चाहिए। मैंने जल्दी से कपडे बदले। पिता के उस खत का एक बार फिर पढकर उसे वापस उनकी जेब मे डाला और घर से बिना पिता से पूछे-ताछे गायब हो गया। हा, जान से पहल पिता की भीतरी जेब को जरूर अच्छी तरह देख लिया था, जिसमे सौ रुपये थे। मैंने सौ रुपय म स पचास रुपये बडी शान से भेटस्वरूप ले लिये, क्योकि बाप का माल अपना माल।

मैं उस रेस्तरा म पहुच गया। उसके आगे-पीछे व्यथ के चक्कर काटता रहा। हालाकि उस समय पाच बजे थे, मैं शो रूम के आगे यू ही खडा होकर अपने वक्त की हत्या करता रहा। यहा तक कि मैंने सडक पर एक पूरा मजमा ही देख डाला। इस तरह मैंने सात बजा दिए। इस बीच मैंने उस युवती से किसी भी तरह के सम्बन्ध होने के बारे मे गम्भीरता से नही सोचा था। एक हल्का-सा विचार आया कि देखें पचास साल के आदमी को प्रेम पत्र लिखने वाली युवती कौन है? मुझमे गहरी जिज्ञासा जगाने वाली बात थी यह। मैं ठीक सात बजे शालीमार रेस्तरा के गेट के आग खडा हो गया और ठाठ से गोल्डफ्लेक सिगरेट पीने लगा। टेरलिन पेन्ट पर काटन-टरलिन की गहरी पीली शट मुझे खूब जच रही थी। पहले मैं घडी बायें हाथ की कलाई म बाधता था, पर आज वह दाइ कलाई मे झूल रही थी। मुझे बार-बार यह बात स्ट्राइक कर रही थी कि मैं आज पहली बार एक एसी युवती से मिलूगा जो बुड्ढे स शादी करने की इच्छुक है।

यह भी सही है कि मैं आज पहली बार, किसी जवान युवती स मिलूगा। मुझे यह अपना दुस्साहस-सा लग रहा था। मैं बार बार रोमाचित हो जाता था। पुलक से भर जाता था। सामने दूर तक मेरी दृष्टि जा

रही थी। दृष्टि के दायरे मे कइ चेहरे आ जा रहे थे। मैं बार-बार उस युवती की प्रतीक्षा कर रहा था। आने वाली हर युवती को देख-देखकर मुझे रोमाच हो जाता था। खत म एक रहस्य की बात एसी थी, जिसे मैं आपको बाद म बताऊगा। थोडी देर के लिए मैं चेन स्मोकर बन गया। एक पर एक सिगरेट पीता रहा। अचानक भीड मे कई चेहरो मे मुझे मेरे पिता का चेहरा दिखाइ पडा। चेहरा उभरकर इतना बडा हो गया, मानो वह चेहरा सारी भीड के चेहरो को निगल रहा हो। एक बार मैं भी सहम गया कि यह चेहरा मेरे चेहरे को भी निगल लेगा पर बाद म मैंने अपने को जरा बोल्ड किया और आकाश की ओर नजर करके मैं दार्शनिक की मुद्रा मे धूम्रपान करने लगा। कुछ क्षणो के अतराल के बाद मैंने अपने पिताजी की ओर देखा। वह लगभग आधे फर्लांग दूर की दुकान के खम्भे की ओट मे खडे-खडे मुझे चोर की तरह देख रहे थे। मैंने भी उस ओर नजर दौडाई। वह झट से खम्भे की आट मे हो गए। मैं भी इस तरह तिरछी नजर से अपने बाप की हरकत को देख रहा था कि वे यह समझे कि मेरा ध्यान कही और है। मैंने देखा, मेरे पूजनीय पिता बडे ही अशात हैं और कुछ हडबडा रहे हैं। उनका चेहरा चेहरा न रहकर आकाश का एक टुकडा हो गया है जिस पर हर पल एक इन्द्रधनुष बनता है, दूसरे पल मिट जाता है। वे बार-बार इधर आने का कदम बढाते हैं, पर मेरे कारण वापस खीच लेते हैं। 'वाह, क्या शानदार पोशाक उन्होने पहनी है! पैंट और जोधपुरी कोट। सारे बाल खिजाब से काले। ऊपर की जेब मे सफेद रुमाल!' शानदार मेकअप, जिसने उनकी उम्र पाच साल कम कर दी थी। मैंने एक बार अपने बाप को जरा भरपूर नजर से देखने की कोशिश की पर वह खम्भे की ओट हो गए।

यही जिदगी की ट्रेजडी है! जब और किसी को देखना चाहे तो वह आपसे छिप जाय और आप उसे न देखना चाहें, तो वह आपके सामने हर घडी खडा रहकर अपना थोबडा दिखाता रहे।

यह भी सही है कि मैं अपने बाप को भरपूर नजर से नही देख पाया। समय को तो चलना ही था। सात-बीस हो गए। मैंने झट से रेस्तरा म प्रवेश किया और एक कोने वाली मेज पर बैठ गया।

अब मैं उस रहस्य को बता रहा हू, जिसकी उत्सुकता मैंने कुछ देर पहले आप में जगा दी थी। वह रहस्य यह था कि पहचानने के लिए मेरे पिताजी ने लिखा था कि वे गुलाब का फूल लगायेंगे। चूकि मेरे कोट नहीं था, अत मैंने उस गुलाब को हाथ में ले लिया। हाथ में लेकर इधर उधर उगलियो मे नचाता रहा। थोडी देर बाद एक युवती ने प्रवेश किया। युवती गहुए रग की थी पर उसका बदन अत्यन्त ही मासल और तराशा हुआ था। मेरे हाथ मे गुलाब का फूल देखकर वह मेरी ओर गौर से देखने लगी, फिर मुस्कराती हुइ मेरे पास आई। उसने निहायत ही मधुरता से मेरे बाप का नाम लिया। मैं मुस्कराया। इस पर वह मेरे पास बैठ गइ और बोली "मैं आपको तुरन्त पहचान गई—एक पल मे ! मैंने जान लिया कि आप ही वे है। यह गुलाब का फूल !"

"थैंक्यू।

वह बैठते ही बोली, "परन्तु आपने मुझे अपनी तस्वीर बडी पुरानी भेजी है।"

"नही तो !" मैंने अनजान बनने का अभिनय किया।

"देखिये न !" कहकर उसने बडी सहजता से अपने पर्स मे से एक तस्वीर निकाली। तस्वीर देखते ही मैं समझ गया कि यह तस्वीर मेरे पिताजी की तब की है जब वे मुझसे एक-दो साल ही छोटे थे। मेरी शक्ल पिताजी से काफी मिलती-जुलती है और उस तस्वीर से साफ साफ लगता है कि किसी को भी इस तस्वीर से मेरा थोडा भ्रम हो सकता है।

उसकी ओर भेद भरी दृष्टि से देखकर मैं मुस्कराया और तस्वीर को उसके हाथ से लेकर अपनी जेब मे डालते हुए बोला, 'मैं आपको अपनी लेटस्ट फोटो दूगा। यह शायद जल्दबाजी मे गडबडी हो गई है। हा मेरा असली नाम भी दूसरा है। भला मेरे पिताजी का नाम मेरा नाम कैसे हो सकता है? यह तो एक मजाक था। मैंने हसने की व्यर्थ चेष्टा की।

उसने एक बार मुझे तीखी प्रेम भरी दृष्टि से देखा और मजाक भरे स्वर मे कहा, "अब भी मुझे तस्वीर ही लेनी पडेगी ?

मैं जरा झेप गया और किंचित नाटकीयता से बोला, 'नही मैडम अब हम आपको कुछ और ही देंगे।" इसके बाद हम इधर-उधर की बातें करते

रहे—गम्भीर और हल्की बातें, बातें, बातें और सिर्फ बातें। उसने मुझे यह भी बताया कि मैं अच्छे प्रेम-पत्र लिख लेता हूँ। उसके खुलकर बातें करने के पीछे मेरे पिता के शानदार प्रेम-पत्र हो सकते हैं। खैर, मैंने स्वीकारा कि मैं श्रेष्ठ प्रेम पत्र लिख लेता हूँ। फिर हम दोनों भावी जीवन की गहरी योजनाओं में घुल गये। मुझे हर लमहा ऐसा महसूस होता था कि मैं सुखों के सागर में बह रहा हूँ। जीवन में पहली बार लड़की से भेंट और वह भी इतनी खुलकर! सच, जिन्दगी में औरत से बड़ी कोई भी नियामत नहीं है। औरत जीवन में तुरन्त अनेक अलमस्त क्षणों की रचना कर डालती है। मैंने मन ही मन यह निश्चय किया कि मैं इससे शादी करूँगा। बड़ी चार्मिंग लेडी है।

उसी समय मैंने देखा कि मेरे सम्माननीय पिता ने रेस्तरां में प्रवेश किया है। उनका चेहरा तनाव से घिरा था और उनकी आँखों में साक्षात् घृणा आ विराजी थी। मैंने उन्हें देखकर अनदेखा कर दिया। वे चोर की खोज में तैनात सिपाही की तरह मेरे पास आए और मेरी समीप वाली टेबुल पर अजनबी से बैठ गए। मैंने एक पल उनकी ओर देखा। फिर सिगरेट पीने लगा। उनकी गिद्ध दृष्टि से साफ लग रहा था कि वे मुझे कच्चा चबा जायेंगे। पर मैंने संयम से काम लिया और अजनबी होकर अपनी प्रेमिका को प्यार से देखने लगा, क्योंकि थोड़ी-सी बातों से यह साफ हो गया था कि उसे मेरा हर प्रस्ताव मान्य होगा। वह युवती ट्रे आने से चाय बनाने लगी थी। मैंने एक बार फिर अपने बाप की ओर देखा। बाप ने ऐसे गर्दन को झटका दिया मानो वह मुझे कह रहे हैं कि ठहर बच्चू, तुझे बाद में देखूँगा। पर मैं उसे गौर से अपलक देखता रहा, सोचता रहा, कितना चालाक और सफेदपोश है यह मेरा बाप, और खुद इस उम्र में। फोटो भी क्या छाँटकर भेजा है? कोई बात नहीं। देखते जाइये श्रीमान आगे क्या होना है। मेरे पिताजी! आपको यह जानकर प्रसन्नता ही होगी कि यह युवती बहू बनकर आपके घर अवश्य आएगी, पर आपकी नहीं, मेरी बहू बनकर। यानी आपके बेटे की बहू अर्थात पुत्रवधू। मैंने मन ही-मन घोषणा की।

"क्या देख रहे हो उस आदमी में?" उस युवती ने मेरा ध्यान भंग

किया ।

मैंन एक मिनट सोचा । फिर कहा —' देख रहा हू कि इस आदमी के बाल काल नही, सफेद है । इसने काफी अच्छी तरह खिजाब लगाकर जवान बनने की कोशिश की है । भई मेकअप का चमत्कार भी क्या चमत्कार है ।"

युवती ने चाय की चुस्की लेकर कहा, ' मुझे उसक अगले दो दात भी बनावटी लग रहे है ।"

वेशक!" मैंने जोर से कहा, "और कपडे भी काफी लूज हैं । लगता है जवानी म सिले थे ।"

मेर पिताजी उठे और फिर आग्नेय नत्रो मे मुझे दखकर बैठ गए । व उत्तेजित लग रह थे । युवती भाप गई । वह जानकर उसकी ओर मुस्कराई ।

मर पिताजी वुढ गए । उन्हाने अपना मुह दूसरी ओर घुमा लिया, युवती न विनम्र स्वर म कहा, "कडुवा सत्य कहकर किसी का दिल नही दुखाना चाहिए । तुम्हें मालूम नही कि बुढापे मे तष्णाए बढ जाती हैं, विचित्र रूपा मे उभरने लगती हैं । जाओ उनसे माफी मागो किसी बुजुग का अपमान नहीं करना चाहिए ।" उसने हल्का उपहास किया ।

मैंन देखा कि मेरे पिताजी का चेहरा सहसा पीला हो गया है और उनके बाल सफेद हो गये है । वह अपने असली रूप मे आ गए है । वे झट से उठे और हमे घणा भरी नजर स दखते हुए गेट की ओर चले गए ।

युवती ने उनकी आर देखा और वह मर पिताजी क बार मे छाटे शब्दा का प्रयोग करती रही । मैं चुप रहा । कुछ अतराल क बाद वह बोली, 'शायद तुम्हें मेरी बात बुरी लगी । चलो मुझे माफ करो । और देखो, मने तुम्हार बार मे कितना सही सोचा था ! मैं जानती थी कि तुम मेर सपना के अनुरूप होग—एकदम जवान । मजबूत काठी वाले । मुझे तुम्हारे खत म ही यह एहसास हो गया था कि तुम मर लिए एक उपयुक्त पति होग ।"

मरा मन एक अजीब सी अस्पष्ट अज्ञात स्थिति मे खो गया । एक विमूढता-सी मुझ पर छाई रही ।

यकायक मैंने गेट की ओर देखा। मेरा बाप अब भी वहां खड़ा था। इस बार उसकी आंखों में क्रोध की जगह कोमल याचना थी। पता नहीं, मेरे मन में बैठा शैतान कहां धूप के टुकड़े की तरह गायब हो गया था। एक आर्द्रता-ही-आर्द्रता थी मुझमें।

तभी उसने तनिक झल्लाकर मेरे बाप की ओर देखकर कहा, 'मारो गोली इस बूढ़े को।"

मैंने उसके लिपस्टिक सने मुलायम होंठों के आगे अपनी अंगुली रख दी। वह चुप हो गई। मैंने देखा, मेरा बाप चला गया है और मैं उदास-उदास उसके साथ चाय की चुस्कियां ले रहा हूं।

('बाप अर बेटो' का अनुवाद)

ग्रहण करती दृष्टि

मकान। एक खिड़की का चौखटा। हरे खुले किवाड़। एक पलंग के पीछे पपड़िया। उतरी दीवार। फिर मेरी दृष्टि पलंग पर। पलंग पर मटमैली चादर। एक थकी औरत। पलंग से सटी-सटी। गुमसुम। उसकी पीठ। झुकी गर्दन। ऊंचे हाथ। गिरते हाथ। पलंग। चादर। औरत की आखें। बीमार-बीमार आखें। चादर पर जमी आखें। चादर पर धब्बे। धब्बों पर जमी उसकी निगाह। अब मेरी दृष्टि में उसकी गर्दन का पिछला हिस्सा। उस पर पसरा हुआ धूप का टुकड़ा। दांतों के निशान। निशान को छूती उसकी पतली-बेचैन उंगलियां।

अब मेरी दृष्टि में उस औरत का बीच का हिस्सा। उसकी मैली बोडिस। टूटे टूटे बन्द। साड़ी की सलवटें। अस्त व्यस्त।

फिर पलंग। चादर। मैला बिस्तर। दो हाथ। चादर का वह हिस्सा जहां चमकते चांद की तरह वे धब्बे। उंगलियां, हरकत करती उंगलियां। धब्बे मसले हुए धब्बे। उदासीनता।

आखें। उदास चेहरा। आंखों में आंसू। खाली हाथ। प्रार्थना की तरह उठे हाथ। बेचैनियां।

बच्चे। एक, दो, तीन, चार। बदरंग चेहरे। रद्दी चेहरे। सिरों की भीड़। औरत। आंसू भरी आंखें। सिरों पर हाथ। बच्चों के मुंह खुलते मुंह जैसे मां मां मां।

दो हाथ। हाथों में डबल रोटी। बच्चे। चेहरे। खुश चेहरे। टांगें। गायब होती टांगें। सन्नाटा। सिर्फ औरत। पत्थर की तरह अचल खड़ी औरत। थकती औरत। हाथों में बिस्तर। खाली पलंग। बिस्तर। उल्टा

बिस्तर। नई चादर। सब ठीक।

फलती दृष्टि म पूरा पलग। पलग पर वही मुरझाई औरत। लटी औरत।

खिडकी पर बठी धूप। एक मद। बठती औरत। उठती औरत। उखडी उदासीन औरत। उसका सूखा चेहरा। पाउडर-क्रीम-स्नो से बदला चेहरा। एक नई आकृति। मद। उसके कोट की जेब। जेब म हाथ। हाथ म कुछ नोट। औरत की हथेली म पसरा नोट। औरत की छाती। ब्लाउज। नोट पकडी उगलिया। ब्लाउज मे धसी उगलिया।

औरत। गाल। दो चिपके चेहर। शरीर पर शरीर। औरत का चेहरा। पसीन स बदरग चेहरा। आदमी का उत्तेजित चेहरा। आनन्दित चेहरा। औरत का चेहरा। मुर्दा-बेजान चेहरा। वह कोई और, वह कोई और शरीर से अलग वह कही और एक चेहरे के दो रग विचित्र।

खडी हुई औरत। रग बदलती उसकी आखें। घणा मे डूबी उसकी आखें। मुझ पर झपटती-सी आखें। औरत की गदन। खिडकी के बाहर गदन। थूकना। थूक। बद खिडकी हरे किवाड। बद बद! मुर्दा! मुर्दा! उदास! उदास!

(जिठे निजर टिकँ' का अनुवाद)

चीचड

तडके सुबह की अनचाही हलचल होने लग गई थी। गोपाल कल रात सबकी आखो म धूल थोककर अधिक मात्रा मे दारू पी आया था जिससे उसकी बीमारी बढ गई थी। डॉक्टर न उसे पहले ही कह दिया था और स्पष्ट शब्दा मे कह दिया था कि दारू तुम्हारे लिए जहर के बराबर है। फिर वह रात भर तडपता रहा। करुण क्रदन करता रहा।

उसकी सबसे बडी लडकी जीवली बीमार-सी घुटनो क बीच सिर डालकर एसे बठी थी जैस उसके शरीर मे सूनापन भर गया है, वह जीते जी मर गई है। उसके चारा ओर की हवाए अपग हो गई है।

उसकी सालकी' (एक तरह का कमरा) म श्मशान-सा सन्नाटा पसरा हुआ था। एक बासको लटकाकर उस पर रजाइया रखी हुई थी। खूटियो पर कपडे टग हुए थे। एक आल म चिमनी रखी हुइ थी जिस पर धुए की लकीर काफी ऊचाई तक फली हुई थी। दूसरी ओर एक शीशा दीवार म चिपकाया हुआ था।

जीवली क आसपास मात बच्चे सोए हुए थ। चार बहनें और तीन भाई। उसके पास वाली सालकी म उसकी मा अपन दारूबाज पति की पीठ पर हाथ फेर रही थी। उसे सात्वना भरे शब्दो से लाद रही थी।

ऐसी तनावपूण स्थिति मे मोहल्ल का 'मोडा बाबा' जीवली क पास लकडी ठरकाता हुआ आया। बोला, 'कानो म रूई ठूसकर क्यो बैठी है ? तेर बाप की हालत चोखी नही है।'

वह फटे हुए ढोल ज्यू ककश स्वर म बोली, 'तो मैं क्या करू ? में कोई डागधर, वद्य हू जो उसका इलाज कर दूगी ?'

मोडे बाबा ने इससे पहले जीवली को इतना तिक्त बोलते हुए कभी नही देखा था। उसे आश्चर्य हुआ। वह उसे कुत्ते की तरह तीखी निगाह से घूरने लगा।

जीवली का चेहरा एकदम उदास था और अब जूतो से पिटा पिटा सा लग रहा था मानो वह आतरिक रूप से अत्यत ही दुखी हो।

"अरी बावली," बाबा अत्यन्त ही आत्मीय होकर बोला, "जब तू ही पल्ला खीचकर बैठ जायेगी तो उस निखट्टू को कौन सभालेगा? उसका स्वभाव तो कुत्ते की पूछ की भाति है। यदि वह सीधी हो तो उसका स्वभाव सुधरे। फिर भी समझदार लोगो को अपना फर्ज निभाना ही पडता है। कितने भाई-बहन हैं तुम्हारे! उनका भी तुम्हे ध्यान रखना है।'

जीवली अगार ज्यू भडक उठी, "मेरी बला से, इन्हे रास्ता मे कटारे लेकर बिठा दो।" उसका सकेत सब बच्चो की ओर था। फिर उसके नयन डबडबाए। गले मे सुबकिया भर गइ। दो-चार पल रुककर बोली, "मुझमे भी तो जीव है। मै कोई पत्थर की नही हू। बाप यदि बाप न बने तो दुश्मन भी तो न बने? बाबा, मैं ऊब गई हू, थक गई हू मुझसे अब नहीं सहा जाता इन्हे मिट जाने दो।"

वह फफक पडी।

तभी एक बीमार-बीमार-सी दुबली-पतली लुगाई नाक तक का घूघट निकालकर दरवाजे के अगाडी खडी हो गई। उसका मुख पीला पीला था, जैसे वह बर्षे दिनो से बीमार हो। गड्ढे की तरह आखें पिचके गाल सारा शरीर तिनके की तरह पतला और पेट? पेट अब भी ढाल की तरह फूला हुआ था। उसे देखते ही हृदय मे कुछ पिघलन-सा लगा।

धूप उसके पीछे थी जिसमे उसकी आदमकद छाया जीवली पर पड रही थी। जीवली ने धीमे-धीमे अपनी दृष्टि ऊची की। मा से नजर टकराते ही एक विचित्र-सी हलचल उसके हृदय मे होने लगी। मा प्रार्थना-भरे स्वर मे बोली, 'मैं तुझसे हाथ जोड रही हू बेटी, इस बार तू मेरी विनती पर अपने पिता को किसी डागधर को दिखा दे। उसका इस तरह तडपना मुझसे नही देखा जाता।"

जीवली न पुन मा की ओर देखा, अनगिनत दु खा स विंधी हुइ अनमनी और उदास। औरत के रूप म एक ककाल। एक प्रेतात्मा।

"तू कह तो म तरे पाव पकड लू,' मा भीतर स टूटकर बिखर गइ।

बाबा बीच म बोला, "अब उठ जा बेटी। अर! तुझे जन्म दन वाली मा ही तेर पाव पड रही है। एसी पत्थर न बन"

और वह सोचन लग गई कि इस मा ने उसे जन्म देकर इस भूमि पर एक पत्थर ही बढाया। मुझे क्या सुख है? मेरे पदा होन की क्या सार्थकता है? क्या मतलब?

"चल, लाडली चल।" उसकी मा ने फिर प्राथना की, "मैं तर आग झोली फलाती हू, तुझसे दया की भीख मागती हू।"

जीवली अपन आतरिक विरोधा के बावजूद उठ गई। बाप के नजदीक जाकर देखा उसके मुह और हाथ पाव सूज गए थे। वह एक शब्द भी नहा बोली। करुणा स भर भर आई। फिर ओढना लेकर चल पडी।

उसकी जेब मे एक भी पसा नही था। वह इधर उधर पाच दस रुपया के लिए धक्के खाती रही। फिर वह अपने सेठ के बेटे के पास पहुची जहा वह मजूरी करती थी। उसका रग सावला था पर देखने म वह अत्यत आकर्षक लगती थी।

सेठ के बेटे म उसे देखत ही ताजगी भर गई। बोला, "कसे आई जीवली, तेरा मुह उतरा हुआ क्यू है? सब अच्छे भले तो है?"

जीवली ने उसकी ओर देखा। वह उसे साप लगा। बार-बार होठा पर जीभ फिराने वाला साप। जीवली उसे मूल रूप स घणा करती थी पर बुरे वक्त वही काम आता था। अत विनती भरे स्वर म बोली, "कवर साब! बाप की तबियत बहुत खराब है। दस-बीस रुपये दे दें तो कृपा होगी। मजूरी मे कटवा दूगी।" वह इधर-उधर की बातें करता रहा। कभी ना और कभी हा। थोडी देर बाद जीवली लाश बन गई। पत्थर। फिर जीवली को लगा कि वह जमीन मे धस रही है। उस पर पहाड टूट रहा है।

सध्या तक उसके पिता की हालत कुछ ठीक हुइ। वह अपन बिस्तर म घुस गई। मा न लाख अनुरोध-अनुनय किय कि तुझे जितनी भूख हो

उतनी ही रोटी खा ले पर उसने रोटी का मुह ही नही लगाया। उसे बार-बार महसूस होता था कि उसके चारो ओर आग लगी हुई है, धुआ है, दलदल ही दलदल है जिसमे उसका जी घुट रहा है। वह क्या नही इन सबको छोडकर कुए मे कूद जाती ? इस जीवन से तो मौत भली है।

माघ रात मे घुल गई। सारे बच्चे उसके आसपास आकर सो गए।

जीवली सोचने लगी, ये कैसे बन्धन है। यह बाप क्यो दारू पीता है ? क्या दारू के अभाव मे स्प्रिट पीता है ? क्या नही इसे सिपाही पकडता और क्या यह इतने बच्चे पैदा करता है ? और सबसे पीडादायक बात तो यह है वह खुद इन सबके लिए क्या मर खप रही है ? हजार बार बाप को समझा दिया कि यदि तू नही कमा सकता है तो बच्चे भी पैदा न कर ? अस्पताल जाकर समझ आ ताकि मा बेचारी तो इस दुखदायी रोग से मुक्त हो जाए। पर बाप नहीं मानता वह भर-भर आई। इन सब स्थितियो, अभावो एव दायित्वो के पीछे उसका विवाह नही हुआ। ऐसी विकट और अभाव ग्रस्त दशा को देखकर ही तो उसने परमे से कह दिया था। मैं अभी शादी नही करूगी तू जरा विचार यदि मैं अभी इस घर को छोड दूगी तो मेरे सारे भाई-बहन भूखो मर जाएगे। मेरी मा जीते जी मर जाएगी। यह घर चौपट हो जायगा।" फिर परमा इन्तजार करता-करता थक गया। उसने किसी अन्य लडकी से शादी कर ली। उसका प्यार हालात की बलिवेदी पर चढ गया।

उस दिन जीवली अपना सिर पीट पीटकर सन्नाटे मे रोई थी। फिर भी वह किसी अदृश्य शक्ति से बधी हुई थी। तभी तो इस घर को नही छोड पाई। आहिस्ता-आहिस्ता उसे प्रतीत हुआ कि वह दुधारू गाय है। कोई उसके एक पल के सुख को भी नही देखता। मा-बाप और भाई-बहन सबके सब उसका शोषण कर रहे है। उसने अचानक महसूस किया कि उसके सारे शरीर पर चीचड-ही-चीचड (रक्त चूसने वाला छोटा कीडा) चिपक गए है ये घर वाले आदमी नही चीचड है उसका खून पीने वाले चीचड। वह आकुल व्याकुल हो गई। एक वितृष्णा मे भर गई। मैं सबको मसलकर रख दूगी। घृणा ही घृणा।

उसी पल उसकी मा आई। बोली, "लाडो, तेरा छोटा भाई भूखा है,

जाकर दूध तो ला दे। सयानी बटी है न ?"

बस, वह ज्वालामुखी की भांति भडक उठी, 'आप सब लोग मुझे निगल क्यो नही जाते ? आप लोग मेरा खून क्या पी रह है ? मुझ पर मिट्टी का तेल डालकर जला क्या नही देते ?" वह सुबक-सुबककर रोन लगी। मा उसकी नाराजगी से डरकर वहा से चली गई।

विचित्र सन्नाटा पसर गया। न जाने क्यो जीवली खडी हो गई। यन्त्रवत् उसने ओढना लिया। हाथ म पीतल की पतीली लेकर अपनी मा के व्यथित चेहरे को देखकर वह अबोली-अबोली आसू पोछती दूध लन के लिए निकल गई।

फिर उसे सहसा महसूस हुआ कि उसके तमाम शरीर पर चीचड ही-चीचड चिपक गए हैं। खून चूसन वाल चीचड जोर्कें और एक अदश्य अजगर न उस अपन म लपेट लिया है।

('चींचड' का अनुवाद)

सुख का सूरज

उसे देखते ही मेरे भीतर पीडा-सी होने लगी। उसके चेहरे की हवा ही बदल गयी थी। वह एकदम प्रेतात्मा-सी लगने लगी। मैं स्तब्ध-सा खडा रहा। फिर उसकी नौकरानी मेघली से पूछा, "यह कितने दिनो से बीमार है?"

मेघली ने मेरी ओर देखा और उसे अपनी दृष्टि मे भरती हुई वह बोली, "ये बहुत दिनो से बीमार है, कुवर-सा! आपको तो पता ही है कि आजकल बहन जी हर बात को अजीब ढग से करने लगी हैं। इतनी असामान्य हो गयी है कि मैं कुछ कह भी नही सकती। हर सही बात का गलत समझती है। सारे समझा-बुझा कर हार गये पर बहन जी अपना हठ नही छोड रही है। कोई कुछ भी कहे एक कान से सुनती है और दूसरे कान से निकाल देती है। बार बार गुस्से मे एक ही बात कहती है—मेरे लिए तो सारे के-सारे श्मशान घाट पहुचे हुए है। मैं जब किसी से कोई सम्बन्ध रखना ही नही चाहती तो ये क्या मुझे तग करते है साये की तरह पीछे लग रहते हैं। कभी मैं इन सबकी मिट्टी खराब कर दूगी।"

"पर बात क्या हुई?" मैंने मेघली से पूछा, "सुन मघली तू चमली बहन जी की बहुत ही पुरानी आदमण (नौकरानी) हो। मुझे सारी बात सच-सच बता कि मामला क्या है?"

पानी।' चमली ने कराहते हुए बीच मे कहा।

मघली ने झट से चम्मचे से पानी पिलाया। चमली ने एक पल के लिए मुझ पर निगाह डाली और नयन मूदकर पूछा, "कौन है? यदि मेरे घरवाले आये हैं तो उन्हें धक्का मार कर निकाल दो। ये सारे लोग कमीन

हैं मुझे गीली लकड़ी की तरह खोखली करके मारना चाहते हैं। पर अब मैं सब कुछ समझ गयी हूं। इनका बनावटी प्रेम, खोखले सम्बन्ध झूठा अपनापन। मैं अब इनके जाल में फसना नहीं चाहती।'

उसका सांस फूलने लगा। वह हाफती रही। मेघली ने बताया 'बहन जी! यह तो गोविन्द जी हैं?'

"गोविन्द जी।' उसके हताश मन में सहसा उल्लास जागा। बोली, 'आप कब आये?

'अभी आया हूं पर आपने क्या दशा बना ली है। सूख कर कांटा हो गयी है। इस तरह अपने आप पर अत्याचार करना ठीक नहीं है। मरना आसान थोड़े ही है।"

चमेली ने बुझी बुझी उदास उदास आंखों से मेरी ओर देखा। व्यथित स्वर में कहा 'गोविन्द जी! जीना तो उससे भी कठिन है। मर जीने की क्या सार्थकता है? अर्थहीन जीना भी कोई जीना होता है।"

उसे सहसा जोर से खांसी आयी। इतनी भयानक खांसी थी कि उसकी आकृति ताम्रवर्णी हो गयी। लगा कलेजा मुंह से बाहर आ जायेगा। खांसी रुकने पर वह फिर हांफने लगी। मेरे देखते-देखते वह अचेत हो गयी।

मैं घबरा गया था। उस झिझोड़ा पर उसे होश नहीं आया। फोन करके एम्बुलेंस मंगवायी। उसे अस्पताल में भरती कराया। खूब सेवा की मैंने? रात को रात और दिन को दिन नहीं समझा मैंने?

लम्बे उपचार के बाद वह स्वस्थ हुई। उसके चेहरे की मुर्दनी गायब हो गयी।

एक दिन उसने मुझसे कहा, "आपने मुझे क्यों बचाया? मेरा जीवन मृत्यु समान है। एकदम नीरस और ठहरा-ठहरा। सच कहती हूं कि मेरे चारों ओर जोंकों का साम्राज्य फैला हुआ है। मेरा सारा लहू पीने वाली जोंकें।

वह टपटप आंसू गिराने लगी।

वैसे मैं उसका सारा जीवनवृत्त जानता हूं। उसके पैदा होने ही घर में अजीब सा सूनापन और मुर्दापन छा गया था। दादा-दादी को ज्योंही पता चला कि एक पोती और आ गयी है, त्योंही वे उसके मरने की दुष्कामना

करने लगे। सारा दोष उसकी मा के सिर पर थोपा गया कि उसकी कोख मे बेटा नही हो सकता। कोख बेटियो से भरी है। हालांकि उसकी मा सतान पैदा करते-करते हार चुकी थी बार बार अपने पति से प्रार्थना करती थी कि वह उस पर दया करें। अब उसकी कोख थक गयी है, छातियो का दूध सूख गया है पर उसका बाप नही माना। सयोग से सातवा बेटा हुआ। तब उसे भी जरा सुख मिला। पर बच्चे पैदा करने का सिलसिला बद नही हुआ। जब कभी भी उसकी मा परिवार कल्याण की बात करती, उसके सास ससुर आगबबूला हो जाते थे। उस डाट-डपट देते थे। अत मे नौवी सतान पर उसकी मा चल बसी। चमेली तब खूब रोयी थी।

सबसे पीडादायक विस्मय भरी बात तो उसे यह लगी कि उसका बाप फिर शादी करने की इच्छा रखता था पर नौ बच्चो के बाप को कौन अपनी बेटी देता? फिर बनियो मे। दादी का तो बुढापा ही खराब हो गया था। सारे बच्चे पिल्लो की तरह रोते रहते थे, उससे चिपटते रहते थे और वह दादी झुझला झुझला कर किसी को नह करती तो किसी को पीट देती थी दादी का जीवन नारकीय यत्रणाओ से भर गया था।

यह बात सोलह आना सच है कि बनिये का भाग्य पत्ते के नीचे रहता है। पत्ता हटा और भाग्य चमके।

चमेली के बापू के भी भाग्य चमक उठे। धधा अच्छा चल पडा। लक्ष्मी दौड-दौड कर उसके घर मे वास करने लगी। देखते देखते वह लखपति हो गया। हा इस बीच चमेली के दादा-दादी चल बसे।

उसके बाप ने गुपचुप ढग से एक गाव की अत्यन्त गरीब लडकी से उसी के गाव जाकर विवाह कर लिया। विवाह का सारा खर्च उसने उठाया और ऊपर से नकद तीन हजार उसके मा-बाप को दिये।

जब अचानक उसका बाप दुल्हन लेकर घर आया तो बच्चे स्तब्ध रह गये। मोहल्ले मे गर्मागर्म चर्चा फैल गयी। बच्चो और नयी मा के बीच जरा भी तालमेल नही बैठा। परिणामस्वरूप एक घर के दो घर हो गये।

धीरे धीरे इन बच्चो और उसके बाप के बीच दूरिया जन्म गयी। सम्बन्ध धुधलाने लगे। वैमनस्य बढने लगा। झगडे उगने लगे।

आहिस्ता-आहिस्ता नयी बहू व पीहरवालो का शिकजा घर पर कसने लगा। व्यापार म घाटा हो गया।

तगिया और अभाव जम कर बढने लगे। परिणामत चमेली को अध्यापिका बनना पडा क्योकि वही अपने भाई-बहनो म शिक्षित व समझदार थी। नौकरी के अलावा वह रात दिन ट्यूशन करती थी। कठोर सघर्ष और मन के साता सागरो का सुखा कर उसने दायित्व को निभाया परिवार का पोषण किया।

दो भाई कमाने लगे। इस बीच सौतली मा के भी चार बच्चे हो गये। बाप जस इन परिस्थितियो म थक गया, अभावो स घिर गया। चमेली स्वय को भूलकर परिवार का पोषण करने लगी। चार बहना की शादिया हो गयी। पाचवी बहन अर्ध-पागल थी।

कमाने वाले भाइयो के भी विवाह हो गये। थोडी-सी शाति का आभास हुआ। सुख का स्पर्श हुआ। लम्बे सघर्ष के बाद शाति का अहसास। लम्बे जद्दोजहद के बाद फुर्सत के क्षण। ठहरा समय।

अचानक वह उठी। स्नान किया। फिर अकेले मे दर्पण लेकर बैठ गयी। पहली बार उसके भीतर की औरत को अपने बाहर की औरत को सूक्ष्मता से देखने की फुर्सत मिली।

ओह! क्या वह वही चमेली है। चमेली पुरुष-गध स सुवासित तन वाली चमेली। यह तो वह नही है। दर्पण म तो कोई और चमेली है। उसका अन्तस मौन आर्तनाद कर उठा। पानीदार चेहरा सूख गया था। उदास, उदास। उसे लगा कि वह श्रीहीन हो गयी। यौवन जैसे अस्त होते सूर्य की काति जसा हो गया है। उसने एक एक अग का देखा। पीडा की लहरें उसके भीतर दौडने लगी। *वह कितनी कमजोर हो गयी है। आकर्षण हीन* वह भीतर-ही भीतर रोने लगी। आह! ऐसी कातिहीन लडकी स शादी कौन करेगा? घर परिवार के भारी दायित्वो के पीछे वह अपने को भूल गयी। उसकी सास घुटने लगी। उसने सोचा कि यदि उसका विवाह शीघ्र नही हुआ तो उसे अखनकुवारी रहना पडेगा। फिर उसने अपने भाइयो व पिता को कई बार परोक्ष रूप से कहा और सकेत किये। वह बार-बार चिंतातुर हो जाती कि उसका यौवन का रथ प्रौढता के

रतीले टीबा म खाता जा रहा है। पर किसी ने उसकी बात पर ध्यान नही दिया। सभी उसे अधिक कमाने के लिए उकसात रहत थ।

एक बार उसने अपनी भाभी से कहा, "इस घर की गाडी अपनी पटरी पर आ गयी है। मेरी उम्र भी ।"

भाभी सक्त की सारी बात विस्तृत रूप स जान गयी। उसन अपन पति स कहा, 'ननद बाई सा की शादी क्यो नही करत ?"

भाई बोला, "वह शादी नही करगी।"

"आपका किसन कहा ?"

"कहना कौन, मैं सब समझता हू।"

"नहीं जी, आप जल्दी से काइ लडका ढूढिय।"

'व्यथ का दिमाग चाटा मत कर।" भाई न अपनी पत्नी स झल्ला-कर कहा, "तुममे अक्ल तो जरा भी नही है। जरा सोच, इतनी कमजोर और साधारण छोरी स शादी कौन करेगा ? दो चार जगह बात भी चलाई पर लाग इसे टी० वी० की मरीज समझत हैं या फिर ढेर सारा दहज मागत हैं।"

फिर चमली ने अपनी दूसरी भाभी को भी इशारा किया। दूसरी भाभी चमली की प्रशसा के पुल बाधकर बोली, "मेरी ननद बाई! हम सब तो आपकी हर बात मानत है। मैं आपके भाई से बात करूगी।'

पर उसने अपन पति स कहा कि आप ऐसी गलती मत करना। यदि चमली बाइ का विवाह हो गया तो अपन घर मे दो-तीन हजार का घाटा हो जायगा। बस आप कवल विवाह करन की बात का जबानी जमा-खच करें।"

धीरे धीर चमेली की ऊब, घुटन और अकलापन बढता गया। रात के सन्नाटा म वह इतनी मर्मान्तक उत्तेजित पलो से घिर जाती थी। उसे नीद नही आती थी। कभी उसे समय अच्छा लगता था, पर अब वह उबाऊ लगने लगा। प्राय हर ऐसे दायित्व से वह ऊबने लगी जो उसे एक दिन और बूढी बनाता था। उसे इस घर से विदा होकर अपने पति के घर की स्वामिनी बनन की इच्छा रहती थी। उसने स्वय इस ओर प्रयास किया। प्रेम करने की ओर बढी, पर प्रेम व मित्रता तो एक सीमा तक लोग करन

को तत्पर थे पर विवाह के नाम से पीछे हट जाते थे। प्रत्येक दुबल, काल सामान्य पुरुष को भी अति सुंदर स्त्री चाहिए थी।

अंत में वह घोर अवसाद भरे एकान्त में संत्रस्त हो उठी। वह स्पष्ट रूप से अपने भाइयों को शादी के लिए कहने लगी। भाई उसे झूठे आश्वासनों से बिलमाते रहे। उसमें निराधार आशाएं बंधाते रहे। धीरे-धीरे वह असलियत समझ गयी। घरवालों का घटिया स्वार्थ जान गया।

वह खूब रोयी।

आहिस्ता आहिस्ता वह अजीब कुंठाग्रस्त विद्रोह से घिर गयी। एक दिन उसने घोषणा कर दी कि वह अपना अलग घर बसाएगी।

घर में हलचल हो गयी।

एक ने कहा "बिना शादी घर अलग बसाना ठीक नहीं। अकेली औरत पर हजार झूठी तोहमतें लगायी जा सकती है।'

उसे खूब रोका गया पर वह नहीं रुकी। घर से अलग हो गयी।

अकेला घर। अकेली वह। सन्नाटा। ऊब, घुटन खालीपन। बार बार दर्पण में मुंह देखकर चिढ़ना, कुढ़ना। वह एक विचित्र दहशत से घिरती गयी।

अपने ढलते रूप यौवन की पीड़ा को वह पलभर भी नहीं भूली। उसे समयांतर महसूस होने लगा कि उसका जीवन एक सजा है। एक लाश जिसे वह स्वयं अपने कंधे पर रखकर ढो रही है।

वह बीमार हो गयी। अपने आप पर अत्याचार व अन्याय करने लगी। अर्थहीन जीवन।

मैं स्वयं जानता हूं कि चमली उस बिंदु पर आकर खड़ी हो गयी है जहां से उसका पीछे लौटना असंभव है। धीरे धीरे नीरस और बेहूदी जिन्दगी के क्षण क्षण को रौंदती वह मृत्यु के सन्निकट पहुंच जायगी। एक सामान्य जीवन की जगह एक शापित जीवन।

फिर भी मैं समय-समय पर उसे कहता रहता था चमली! गलत संघर्ष का कोई अर्थ नहीं है। इससे तो निष्फल की प्राप्ति होती है। जब अंधेरे व लम्बे रास्ते हों तो साहस करके प्रकाश की ओर बढ़ना चाहिए। प्रकाश फलदायक होता है। अमृतमय होता है। चिन्मय होता है।

वह क्षणिक संतोष से घिर जाती। मुस्कराती। मैं सोचता कि शोषण
ी इस नारी-आत्मा को कभी सुख मिलेगा सुख का सूरज दिखेगा।
रिवर्तन का सूरज दिखेगा।

मेरा हृदय कहता—जरूर दिखेगा क्योंकि जिस तरह अंधेरा चिरंतन
हीं है, उसी तरह कुछ भी चिरन्तन नहीं।

('सुख रो सूरज' का अनुवाद)

जन्म

उसकी आखो के आगे तितलिया-सी उडने लगी। आसुओ की तितलिया। उसने अपना चेहरा हथलियो मे छुपा लिया। फिर वह छत पर चली गयी क्योकि आगन का घुटन भरा सन्नाटा उसे उबाने लगा था।

आज सुबह से ही वह ऊबने लगी थी। अपने परिवेश और यथार्थ से। उस सत्य मे जिसका अनुभव आज उसे पहली बार हुआ कि वह केवल भोगने की वस्तु है। इस अहसास ने उसे विध डाला। उसका चुभनशील अहसास उसे बार बार सताने लगा। क्षुब्ध करने लगा।

आज ही उसे लगा कि प्रकृति मनुष्य के प्रति विद्रोह करती रहती है। चाहे यह विद्रोह मिट्टी के घर की तरह भले ही मिट जाए पर वह होता निश्चय ही है। कभी-कभी अनायास ऐसा कुछ भी होता है जिसका पूर्व अनुमान जरा भी नही होता।

आज कुछ ऐसे ही पल छिन उसके तथा उसके परिवार के बीच पैदा हो गये थे। अचानक और अनायास। उस समय उसमे वह विचित्र जुझारू-पन जन्म गया था। वह सारी मान मर्यादा को खड-खड करके चीख पडी थी— आप लोगो मे कोई भी आदमी नही है। सबके सब कसाई है। आप मुझे तडपा तडपा कर मारना चाहते है। खूब सताते हैं आप, पर अब मुझसे आपके अत्याचार नही सहे जाते ? मुझे आप लोगो के बीच रहना ही नही है। उसने क्रोध की चरम सीमा पर पागल की तरह अपनी सास को डाकिन कह दिया।

तब उसके पति ने उसे छिनाल, मालजादी और राड तक कहकर खूब मारा। उसके अग-अग को आहत कर दिया।

वह रूठ कर और अनगल अलाप कर पास के बाडे मे जाकर बैठ गयी ।

साझ होने लगी थी ।

रात्रि के रग का फीका अधेरा धीरे-धीरे शाक के ओढन लालर'-सा होने लगा। प्रकाश के टुकडे नटखट चिडियाओ की तरह फुदक-फुदककर भागने लगे ।

वह उन सबको देख रही थी ।

अधेरा काजल सा काला हो गया । लालटेन दीयो व चिमनियो का प्रकाश बिंदिया की तरह दूर-दूर चमकने लगे थे । वह अपने आप मे लीन थी। वह तो पीडादायक स्मृतियो म डूबी हुई थी।

उसे अपना अतीत याद आया कि दसवी की परीक्षा देने के पूर्व ही उसे मालूम हो गया था कि उसका विवाह होना तय हो गया है। उसे अत्यन्त ही आश्चर्य हुआ और उसने यह निश्चय किया कि वह इस विवाह का विरोध करेगी। उसने स्पष्ट शब्दो मे कहा—"मै जब तक दसवी पास नही करूगी तब तक विवाह नही करूगी ।

मारवाडी समाज म उसकी यह साफगोई इकलाब की तरह लगी। घर म एक हगामा मच गया । उसके मा बाप को लगा कि उनकी बेटी का चरित्र ठीक नही है। इतनी लम्बी जीभ अच्छे घराना की छोरियो की नही होती । कही इस छोरी ने अपनी बहन की तरह अनुचित कदम उठा लिया तो खानदान की नाक कट जायगी । क्या इस घराने की सारी छोरिया गडबड हैं ? इन पर प्रतिबध लगाना ही होगा ।

यह सच था कि उसकी बडी बहन अपने प्रेमी के साथ भाग गयी थी। प्रेम विवाह कर लिया था। इसका कारण था कि उसकी बहन शिक्षित थी। भावुक थी । इतनी अधिक सवेदनशील थी कि जरा सी भी अनुचित बात उसे लग जाती थी। जब उसकी बहन को यह पता चला कि उसका विवाह ठेठ गाव के एक खानदानी अमीर घराने के एसे लडके के साथ हो रहा है जो अगूठा छाप है। परचून की दूकानदारी करता है। पुडिया बाधता है तो उसका मन आहत हो गया। वह महानगर मे जन्मी, पली और बडी

हुई। उसने मैटिक पास किया। उसे साहित्य मे रुचि थी। चित्रकारी का शौक था। ऐसी स्थिति मे उसन विवाह करने से इकार कर दिया। तब उसके पिता ने धरती और आकाश एक कर दिया। उसने कहा, "तरा दिमाग खराब हो गया है। अच्छा घराना है। मालदार है।'

"नही बापू ! मैं तो शादी देवू स करूगी।'

"पागल है। तू जाति की ब्राह्मण और वह धोबी। मुझे जीत जी मारेगी क्या?"

उसकी बहन न कहा, "गाधी जी ने कहा है कि जाति, धम झूठे है। आदमी पहले आदमी है। फिर मेरा व देवू का आपस मे मन मिलता है। कहावत है—मन मिलिया तो मेला नही तो अकेला।"

तब उसके बाप ने उसे अनाप-सनाप गालिया दी। उसे जान स मारन की धमकी दी।

फिर क्या था? उसकी बहन भाग गयी। बालिग थी। दोनो ने प्रेम विवाह कर लिया। देवू प्रोफेसर था। कुछ दिनो बाद उसकी बहन भी टीचर बन गयी। आनदमय जीवन गुजारते थे दोनो।

और वह बेचारी?

उसे डाट कर धमका दिया गया कि उसे अपनी बहन के पदचिह्नो पर कदापि नही चलने दिया जायेगा। उसके घर वाले सावधान हो गये। उसका घेराव रखने लगे। चुपचाप कलकत्ता से बीकानेर आये और फटाफट विवाह कर दिया।

वह विवाह के बीच पत्थर की मूर्ति की तरह रही। मौन और निस्पद। निरपेक्ष स्थिति थी उसकी।

विवाह के बाद जब वह अपनी ससुराल नापासर आ गयी। छोटा-सा गाव। रेतीला और सूखा। उसे अनिच्छा से घाघरा, ओढना, कुर्ती पहननी पडती थी।

सुहागरात ही उसके सवेदनशील तथा भावुक मन की सष्टि ध्वस हो गयी। उसके पति न आते ही उसके तन उपवन की फूल-पत्तियो को निममता से तोड डाला। फिर तो हर रात अबोलेपन म उसका एक वस्तु की तरह उपभोग। एक भावनाहीन सिलसिला।

उसे विश्वास हो गया कि वह एक वस्तु है जिसका उपयोग अपनी-अपनी तरह से पति, देवर, ननद, जेठ-जेठानी सास और ससुर करते हैं।

तब वह अपने आपसे अजनबी हो गयी। कभी कभी लगता था कि वह एक जीवित लाश है, यान्त्रिक पुतली है जो दूसरो के हुक्म पर चलती फिरती है। वह स्थिति दर्दनाक थी। एक मनुष्य अपनी लाश ढोने की दशा मे मवाद भरे जख्म की पीडा भोगे। फिर अनिच्छा से एक पर एक संतान का जन्म। उसका मन प्राण निर्जीव हो गया। जब कभी भी वह असह्य यंत्रणाओ से ऊबकर कठोर शब्द बोल लेती तो घर मे उसके प्रति घृणा की चादरे तन जाती थी। उसके मा-बाप से लेकर उसकी धोबी से विवाहिता बडी बहन तक का इतिहास पढा जाता था। कह दिया जाता था। यह भी कभी बहन की तरह भाग जायगी। अरे यह खानदान ही भगोडा का है। हम तो फस गये।

तब वह भीतर ही-भीतर कुढती रहती। अगीठी ज्यू जलती रहती। न भागती और न किसी की सम्वेदना पाती। हा, वह अपने नन्हे-नन्हे चार बच्चो का अवश्य स्नेह पाती। ये अबोध बच्चे उसे बार बार पूछते, 'मा क्या रोती है। तुझे बापू क्यो डाटते हैं। तुझे दादी क्यो गालिया देती है?

वह बच्चो को चिपका कर फफक पडती थी।

अधेरा गहरा हो गया था। वह अपने मे लीन थी। तभी सबसे छोटा बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। उसका ध्यान टूटा। वह हडबडा कर उठ बैठी। उसके मुह से एक उसास निकल गयी—"ओह! नन्हा रो रहा है।'

वह निबल हो गयी। भीतर से पिघलने लगी। जुडाव के पख पसरने लगे। वह उठी। जाने लगी कि रुक गयी। अपने आपको डाटा—जब पति ही सुख नही देता फिर उसके पैदा करने वाले ये बच्चे क्या सुख देंगे?

वह वापस बैठ गयी।

तभी उसके पति ने पुकारा, "सुनती हो, सबसे छोटा रो रहा है। क्रोध को छोडकर उसे सभालो।"

वह चुप रही।

उसका पति एक हाथ मे लालटेन लेकर आने लगा। उसके दूसरे हाथ मे सबसे छोटा बच्चा था। वह धीरे धीरे उसके पास आया। वह दारू पिये

हुए था। उसकी आखा म निगल जान की दहक थी। वह अपनी रूठी हुई पत्नी को तरह तरह के प्रलोभना व आश्वासना से मनाता रहा। उसे जबरदस्ती अपन कमरे म ले आया। पति न उसकी गोद म बच्चे को दे दिया जो उसकी सूखी छातियो को चूसता हुआ सो गया।

उसे अपनी, एक नारी की दयनीय स्थिति पर रोना आ गया। वह सुबक सुबक कर रोने लगी। रोती रोती सोचती जा रही थी—लुगाई का जमारो (जन्म) व्यथ है, एक दासता है, एक अभिशाप है।

उसके सारे बच्चे आ-आकर उससे लिपटन लगे। उसका पति उसकी प्रतीक्षा करन लगा—साप बनकर।

('जमारो' का अनुवाद)

मिनखखोरी

"हुकी !"

"बोल।"

"एक बात पूछना चाहता हू।"

"पूछ।"

"तू मुझसे प्रेम करती है ?"

"परेम नही करती ता तर सग नठ (भाग) कर थोडे ही आती।

"पर तू बार-बार प्रेम क्यो करती है ?"

'कहा करती हू ? मनमाफिक मद की तलाश थी मुझे देख बिठला, मैं वसी पढी लिखी नही हू। मैं पोथी किताबो की बातें भी नही जानती पर मैं इतना जानती हू कि आदमी घडी घडी वही काम करता है जो उसके हिये को भाता है।'

'लकिन सयाने लोग कहते हैं कि औरत जीवन म एक बार ही प्रेम करती है।"

"जो कहत है उन्हे कुछ पता नही। व सब सुनी-सुनाई कहते है। अरे बिठला ! अपने गाव की गिरजडी है न, वह राड मालजादी, मुझे उपदेश देने लगी कि तू एक मिनख की चीचड ज्यू-क्यू नही चिपकती। जबकि तू जानता है कि गिरजडी न कभी भी यही काम नही किया। मैंन उसे फटकारते हुए कहा—अरी घाट-घाट पानी पीने वाली ! मैं तेरी तरह छान ओले (चुप छुप) काम नही करती, जो भी करती हू चौडे चौगान करती हू।"

"पर यह औरतजात पर धब्बा है।"

'*क्यू ध'बा है। जो मेरी जमी लुगाई मे' संग भाग कर जाता है उस* मरद पर धब्बा क्यू नही लगता ? सुन बिठला, मैं तरे संग इन आलतू फालतू बाता की झाय झाय म उलझने के लिए नही आई हू। मै तेर संग एक शहद-सा मीठा जीवन जीन आइ हू। सच्ची तू मेरे मनमाफिक मरद है न ? घडिया को खाग मत कर आग की बात कर पीछे मत देख ।'

'शायद तू नहीं जानती ।"

'क्या नही जानती ? सहम क्यो रहा है ? बता ।"

"*कि आदमी की बार बार पीछे देखन की आदत होती है।*"

"तो तू भी बार-बार पीछे देखेगा ? बिठला ! यदि ऐसा करेगा तो सब गडबडा जायेगा । तुझे आज जितनी बार भी पीछे देखना है, देख ले। फिर मैं तुझे कभी भी पीछे नही देखन दूगी। मुर्दे उखाडने वाले जिंदो को राजी नही रख सकते। पलट पलटकर पीछे दखने वाले आगे नही बढ सकते। तुझे मेरे संग आगे बढना है या नही ?"

"बढना है पर ।"

"*बिठला ! क्या तू मुझे बिस्तर बनाने के लिए लाया था ? लाय* (आग) ठडी हो जाने के बाद तुझम खोट पैदा हो गई है।"

"नही ।'

"तू झूठ बोलता है यदि मेरे संग तूने चालबाजी की तो ठीक नही रहेगा। मैं अब वापस गाव नही आ सकती। तरे साथ मैने गाव की काकड (सीमा) के बाहर पाव रखा है। घर परिवार और दूसरे खसम से नाता तोडा है। फिर मुझे पीछे देखन की जरा भी आदत नही है। जो बीत गया, वह बीत गया।"

"मैं अब पछता रहा हू ।

"मुझे भी पछतावा है। मै ऐसे कायर कपटी कुत्ते के संग भागी हू जो साला थोडे दिनो मे ही मदान छोडन लगा है।'

"नही हुकी, बात यह है कि तू मिनखखोरी है तुझ पर कसे भरोसा *किया जा सकता है !*"

'तुम सब कुत्तो की औलाद लुगाईखोरे नही हो ? इस लुगाई का खाया उसे काटा इसे चाटा उसे नोचा छि !"

"इस खिड़की को बद कर दो।"

"क्यो ?"

"डाफर से रोम रोम खडा हो गया है। इस मरी ठड को आज ही अपना नगापन दिखाना था।"

'सुन, मेर पास आजा, यह नीली लोई है न, मेरी पहली सास के हाथ की बनाई हुइ है। वह अच्छी कारीगर थी। इसम ठड नही लगती। बहुत गम है।"

"नही, तेर साथ लोइ मे आने का मन नही करता। तू रीस न कर तो भीतर की बात कहू।"

"कह। जरा भी रीस नही करूगी। मेरे होठो पर सच्ची हसी है।'

"तेरे पास चाकू तो नही है ?"

"नही।"

"और कोई ।"

"अरे नासपीटे ! तेरे जसे मरदो के ठिकान लगान क लिए मुझे चाकू-छुरी की दरकार ही नही पडती।"

"फिर ?"

"जिन्ह अपने आप मरने की आदत है, उन्ह मैं क्यो मारू ?"

"तो क्या तून अपने पति सावला को बिना चाकू मारा था ?"

"नही, मैंन उसे नही मारा था। मुझ पर झूठा दोप लगाया गया था। तभी तो कोरट कचेडी मे मुझे छोड दिया गया। बाइज्जत बरी कर दिया गया।"

' फिर उसकी हत्या किसने की ? '

"उसके चाचा के बेटे न जोरू का नही, जमीन का झगडा था सावला बेईमान था। लुच्चा था। दूसरो को झासा देकर रुपये ऐंठ लता था।"

"लोग कहत हैं कि उसकी हत्या म तरा हाथ था।

"झूठ। लोगा की अदाजा पर दौडन की आदत है। बस दौडत रहत हैं।"

"फिर तू उसस नाराज क्यो थी ?"

'वह मिनख नही था।'

क्या था वह ?'

'कुत्ता।"

"कुत्ता ?'

नही गैंडा।"

"गैंडा ।"

'नही अजगर ।

"अजगर ।"

'दरअसल वह रीछ था एक बदबूदार घिनौना रीछ एक तरह से उसम कई जानवरो का मिलाजुला असर था।'

'तूने उसकी हत्या नही की ? सच कहती है ?"

'मैं झूठ नही बोलती और न ही मैं सतियो वाला स्वाग रचती हू। मैं कुलटा हू छिनाल जरूर हू पर कहा ? तुम लोगो के बीच। पर मैं सती हू अपने हिय के बीच। मैं वही करती हू जो मुझे अच्छा लगता है बिठला ! पहले तू साप-सापिन पकडता था न ?'

"हा।"

"फिर तूने इतना बहादुरी का काम क्यो छोड दिया ?'

'उसम हर घडी जान को खतरा रहता था और मैं जल्दी से मरना नही चाहता था हुक्की ! मुझे मौत से बडा डर लगता है।'

'फिर तू जल्दी मरगा। जो जिसस डरता है वह उस जल्द दबोचता है। सुन, दारू पीएगा ?"

"नही।'

क्यो ?'

'कम-से कम तरे साथ तो दारू आग से नही पीऊगा।

" "

'दारू पीने के बाद तू बहुत नगी हो जाती है और बाद म मुझे हत्यारी भी लगती है।

'हत्यारी ?

"हा, कल तरे सग पीने के बाद मैं बहुत ही भयभीत हुआ था क्योकि

तरे हाथ मे एक रस्सी थी। मुझे बार-बार लगा कि तू अभी मेरा गला घोट देगी।"

"नही रे बिठला म किसी के सग एसा खतरनाक सलूक नहीं कर सकती। फिर तू मुझे चोखा लगता है मैंने तुझस परम किया है इस वास्त म तुझसे ब्याह नही करूगी मैं केवल तुझसे परेम करना चाहती हू। परेम ताकि तू पति होकर मुझे तडातड बेत से पीट न सके, मेरे सग जबरदस्ती न कर सके सच तुझे एक भेद की बात बताती हू घणे सारे मरद पति बनते ही जानवर हो जाते हैं मैं तो कहती हू कि लुगाई को घरवाली बनना ही नही चाहिए। घरवाली बनते ही वह लुगाई स जूती बन जाती है।'

"अरे अरे ।'

' इतने घबरा क्यो गए ?"

"देखो उस कोने मे छिपकली बिच्छू को निगल रही है।"

' छिपकली बहुत जहरीली होती है।"

' बिच्छू उसको डक क्या नही मारता ?

' मारता जरूर होगा पर छिपकली पर वह असर नही करता होगा।"

' कितने घिनौनेपन से बेचारे बिच्छू को निगल रही है यह छिपकली बडी ददनाक मौत भोग रहा है यह बिच्छू, तुम उसे छुडवा दो। मरा मन पसीज रहा है।"

' मैं क्या छुडवा दू ? तुझे दया आती है तो तू ही यह पुण्य कमा ल, बिठला ! मुझे तिलचट्टो से बहुत घिन लगती है।"

"कही तू मुझे तिलचट्टा तो नही समझती ?"

"नही रे तू तू मुझे लगता है।'

" '

' ऐस दीदे फाड फाडकर न देख सच बताती हू तू मुझे गिद्ध लगता है।"

' गिद्ध ।'

"हा, तेरा मास नोचने का अदाज निराला है। सावला रीछ था और

मूला ऊट । फिर वे मेरी हड्डी-पसलिया बहुत तोडते थे। मूला न तो आछेपन की हद कर दी ब्याह के तीसरे महीन ही उसन मुझसे मेरे बाप के दिए पच्चीस रुपय बड भोलपन स मागे थे कि उसे धधे म पैसा की जरूरत है, वह ठकेदारी करगा, पर मैं उसकी नीयत समझ गई तू तो जानता है कि मेर बाप ने साला भीख माग मागकर य पस इकट्ठे किए थ। सा मैंन साफ इनकार कर दिया इसके बाद तो उसने बात-बेबात पर मुझे बाजरे के खिचडे की तरह छेड़ना शुरू कर दिया घुमा फिराकर बस रुपय ही मागता था और मैं जानती थी कि रुपये लेने के बाद यह मुझे लात मारकर घर से बाहर अनगढे पत्थर की तरह फेंक देगा। मैन उस एक फूटी कौडी भी निकालकर नही दी तब उसने मुझे मजूरी पर भेजना चाहा उस चोट्टे ने हुक्म दिया कि तू कमाकर ला घर की गाडी चल नही रही है पर मैंने उसे ठेंगा दिखाते हुए कहा कि मैं यह काम नही करूगी मैं तो घर मे ही पाव पसार कर सोऊगी। मुझसे घर और बाहर दोना जगहो के छाती कूटे नही हो सकते बिठला यह मरद जात है न, यह खाली लुगाई को नफे के लिए ही काम म लाना चाहती है। बडी कुत्ती है यह मरद जात लुगाई को झाडू से लेकर बिस्तर तक तो बना सकती है, पर उस हवा और धूप नही बनने देती पर मैं हवा और धूप बनकर जिदा रहना चाहती हू सुन मैं तुझे नही छोड सकती तरे लिए मैं चीचड हू। समझे ?"

'हुकी।"

'हू।

'तू दारू क्यो नही पीती, अभी कितनी कडाके की ठड है।'

"पीऊगी तो तेरे सग पीऊगी। यदि मैं पीने के बाद हत्यारिन भी लगती हू तो भी तुझे अपने शरीर की कसम खाकर कहती हू कि तेरी हत्या सपन मे भी नही करूगी। तू मुझे बहुत चोखा लगता है र। आ आ तू तो शेर की जगह गीदड निकला। ले दारू पी असली केसर-कस्तूरी है ।

"तू लाई कहा स ?

'आख मारकर ।"

'क्या ?"

"झूठ नही बोलती रात को पीने की तलब हुई मैं खरीदने गई तो दुकानदार मेरे अग-अग को भूखे भेडिए की तरह देखन लगा। सच्ची कहती हू कि मेरी नीयत मे कोई खोट नही थी। बस यू ही केवल मस्ती मारने के लिए मैंने उसे आख मार दी बिठला सेठ साला गदगद झट से बोला—भीतर आ जा आ न ! मैंने बोतल उठाकर कहा फिर आऊगी मुस्कराकर आ गई वह साला गोधे (साड) की तरह मुह पोला करके मेरी ओर देखता रहा कितना चमत्कारी है यह लुगाई का शरीर बिठला ?"

"हा ।'

"अब तो भरोसा करके दारू पी ले।'

"नहीं, मुझे गाव जाने द हुकी।"

"गाव ? क्यो रे गिद्ध ?'

"तेरे होठो पर खतरनाक मुसकान है।"

"खरी-खरी सुनेगा अब तो गाव तेरे फरिश्ते ही जायेंगे, बिठला ! तू बाका मर्द है मैं तो तेरे सग भागकर आई हू मुझे तुझसे सच्चा परेम है। मैं तुझे नही छोडूगी। तुझे जीवन भर मेरे सग रहना है रहना पडेगा ।"

"यह तो तेरी जोर-जबरदस्ती है।"

"अभी तो मैं तुझे परेम से कहती हू वर्ना यह रस्सी है न ! हर काम के लिए काफी है।'

"क्या तू मुझे जान से मारेगी ? तू रस्सी को उगली के ऊपर क्या लपेट रही है। इस रस्सी को फेंक दे। मुझे तो लगता है कि तू मेर गले क चारो ओर रस्सी लपट रही है। हसती क्यो है ?'

"नासपिटे ! मुझे लगता है कि तेरा जी मुझसे भर गया है। तरे परेम का नशा उतर गया है। पर तूने मेरा नशा बढा दिया है देख कितने दाग है मेरे शरीर पर। यहा तो चकदा भी जम गया है। गिद्ध है न तू मुझे गिद्ध अच्छे लगते हैं। तू भी अच्छा लगता है यदि तूने मेरे साथ कपट किया तो मैं काली मा की तरह तेरा खून पी जाऊगी। तू जाने ! का नाम

मत लेना। तरा हुक्का-पानी मैं चलाऊगी। उमर भर तेरा पट भरगी। तू जानता नही कि मैं कभी भी पीछे नही देखती। जिसे छोड आई वहा वापस नही लौट सकती।'

"मुझे तुझसे हरदम डर लगने लगा है।"

'कपट करने वाले का दिल कमजोर हो जाता है।"

"मैं तरे सग एक शत पर रहूगा।

'कह।'

'तू रस्सी और चाकू को कभी भी हाथ नही लगायेगी।"

' फिर सब्जी कौन काटेगा ?"

मं।'

फिर शत मजूर। आ अव तू दारू पी मुझस एक वायदा कर कि अब तू कभी भी पीछ की ओर नही दखेगा। बिठला, अच्छी औरत तभी अच्छी रह सकती है, जब उसे कोई अच्छा मरद मिले। मैं दो मरदा से ठगी गई हू सताई गई हू। कब तक कितना सहती। अहिल्या तो नही हू। पर तेरे सग उमर-भर निभाऊगी तुझे नही छाड़ूगी। परेम करती रहूगी।"

"एक बात सुन इस तरह रहने मे क्या लाभ जब मैं मौत को अपने सिर पर हरदम नाचते हुए देखू ? सच, मैं पिछले कई दिना से मुर्दा होता जा रहा हू।

'कुछ भी समझ म तुझे नही जाने दूगी—जा बाजार से नमकीन और खाना ल आ जल्दी आना भागने की कोशिश न करना जा-जा चला गया। आने म बडी दर कर दी गीदड़ ने, अभी तक नही आया डरपाक सचमुच मुदा हा रहा है फिर साला मरे सग भागा ही क्या ? साथ-साथ जीवन जीने की बातें ही क्या की ? समझी, वह मेरे जिस्म का पाने के लिए ही मेरी हा म हा मिलाता रहा है। यह गोरा चिट्टा गद्दे क माफक मरा जिस्म आ गया नासपीटे झठ दारू पी यह छुपा क्या रहा है ? सच बोल क्या है ? मैं मैं क्या तुझे मेरी सोगन कि य गोलिया किस चीज की हैं।"

'नशे की मैं पिछले कई दिनो से थक गया हू, ऊब गया हू डर

गया हू सोचता हू कि मर जाऊ। तू प्रेम नही करती, अत्याचार करती है, यदि मैं गिद्ध हू तो तू अजगरिनी है।"

"समझी तू मरेगा ओ मेरे यार, तू आत्महत्या करना चाहता है? ओ ना-ना-ना जा, मैंने तुझे छोडा मुक्त किया मैं जरख नही हू— हुकी हू, हुकी। एक लुगाई, तरी भायली (प्रेमिका) परेम की भूखी तुझस मैंन सच्चा परेम किया है। शायद आग किसी से न कर सकू शायद फिर मुझे वही जीवन मिले जो मैंने भोगा है लुगाइ जात चिडिया की तरह अपनी मर्जी से नही उड सकती है। जा भाग जा अभी इसी वक्त आज मैं दारू अकेली पीऊगी खडा क्या है गीदडे भाग जा भाग जा निकल यहा से वर्ना धक्के मार मारकर निकाल दूगी तुझे अब डरन की जरूरत नही हुकी वापस गाव की काकड म कभी कदम नही रखगी वह गाव के लिए मर चुकी है जा रहा है ल य सौ रुपये ल जा रास्त म खायेगा क्या? अब रोता क्या है कपटी? नही मुझे छूना मत, तुमसे नाते रिश्ते खत्म मैं तुझे कभी भी माफ नही कर सकती। तू हरामजादा है, सपेरे की औलाद नही, यदि होता तो नागिन का क्या वश म नहो कर सकता? चला गया कपटी, कायर, डरपोक चला गया ओह हुकी, तू औरत क्या बनी क्या बनी यदि मुझे कभी ईश्वर मिलगा तो उसका गला पकडकर पूछूगी कि तून मुझे औरत क्या बनाया ? क्या बनाया? अरे हुकी, तरी आखा म आसू? हुकी, तूने हर लडाई हसकर लडी है, फिर आज रोती क्या ह? लड हुकी लड विठला! मैं मिनख-खोरी नही हू। कोई भला मरद मिलेगा तो मैं भी भली हो जाऊगी। आह यह दारू कितनी अच्छी चीज है सब कुछ बिसरा देती है। बिसरा देती है। उफ उफ् उफ्

('मिनखखोरी' का अनुवाद)

□□